दिव्य न्याय

का

अवतरण

शोगी एफेन्दी

भूमिका

प्रभुधर्म के दिव्यनियुक्त संरक्षक के रूप में अपने धर्ममंत्रित्व काल के आरम्भिक वर्षों से ही शोगी एफेन्दी ने उत्तरी अमेरिका के बहाइयों को सम्बोधित अपनी प्रेरणादायक और चुनौतीपूर्ण संदेश-श्रृंखलाओं में उन पर अपनी विशेष कृपा दर्शाई और उन संदेशों में उन्होंने उनके समक्ष उन कार्यों की रूपरेखा स्पष्ट की जिन्हें निभाने के लिए उनका आह्वान किया गया था। साथ ही उन्होंने अब्दुल-बहा की दिव्य योजना के कार्यान्वयन के लिए चुने गए माध्यम के रूप में उन बहाई बंधुओं की अपनी नियति की पूर्णता और उन लक्ष्यों के बीच के पारस्परिक सम्बन्ध को भी रेखांकित किया था।

इन सभी पत्र-व्यवहारों में, एक बहाई के व्यक्तिगत जीवन से सबसे प्रत्यक्ष रूप से ताल्लुक रखने वाला अगर कोई संवाद था तो वह था 1938 में लिखित 'दि एडवेंट ऑफ डिवाइन जस्टिस' जिसमें धर्मसंरक्षक ने प्रभुधर्म के विकास से जुड़े सभी कार्यकलापों की सफलता की दृष्टि से अत्यावश्यक आध्यात्मिक तत्वों का निरूपण किया। उन्होंने आंतरिक आध्यात्मिक जीवन पर तो खास जोर दिया ही, साथ ही मानवीय और सामाजिक सम्बन्धों पर भी बल दिया जिन्हें प्रत्येक बहाई द्वारा विकसित किए जाने और अपने दैनिक जीवन के एक अंतर्निहित अंग के रूप में अपनाए जाने की सख़्त जरूरत है।

अत्यंत आश्चर्यजनक सटीकता के साथ, अमेरिकी राष्ट्र पर असर डालने वाली बुनियादी ख़ामियों का वर्णन करते हुए और उसके साथ ही विश्व की उन सम्भावित घटनाओं की ओर संकेतित करते हुए जिनके द्वारा अमेरिकी राष्ट्र के सम्मुख नई चुनौतियाँ और नए अवसर प्रस्तुत किया जाना तय था, शोगी एफेन्दी ने अपने महत्वपूर्ण संदेश में उन भूमिकाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जिन्हें निभाने के लिए आगामी वर्षों में अमेरिकी बहाइयों का आह्वान किया जाना था।

वर्तमान समय में, जबकि अमेरिका के बारे में अब्दुल-बहा और शोगी एफेन्दी दोनों के ही कहे गए अनेक दिव्य वचन अमेरिका के बहाइयों के कार्यकलापों पर अभूतपूर्व प्रभाव डालने की दृष्टि से गहन रूप से अर्थवान और महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं, यह खासतौर पर उपयुक्त लगता है कि 'दि ऐडवेंट ऑफ डिवाइन जस्टिस' का एक नया संस्करण उपलब्ध कराया जाए, जिससे प्रत्येक बहाई को सावधानी से इसके एक-एक पृष्ठ का अध्ययन करने से प्रभुधर्म के सच्चे उद्देश्य, अमेरिका की आध्यात्मिक नियति तथा इस नियति को साकार करने में व्यक्तिगत धर्मानुयायियों को किस प्रकार होमफ्रंट तथा अन्य देशों में अपनी सेवाओं के माध्यम से योगदान देने का आह्वान किया गया है, इत्यादि बातों को स्पष्ट रूप से समझने का अवसर मिल सके।

-पॉल हैनी
बहाई विश्व केंद्र
हाइफा, इज़रायल
नवम्बर 1968

विषय-सूची

		पृष्ठ
1.	पुनरावर्ती संकट	5
2.	प्रमुख अवशिष्ट दुर्ग	8
3.	एक वृहत्तर धर्मयुद्ध	12
4.	भविष्य की सम्भावनाएँ	14
5.	अचूक प्रकाश	15
6.	बहाउल्लाह् के प्रकटीकरण का सर्वोच्च मिशन	16
7.	महान उत्तरदायित्व	19
8.	आवश्यक आध्यात्मिक गुण	20
9.	सबसे चुनौतीपूर्ण विषय	30
10.	उनका दोहरा धर्मयुद्ध	37
11.	शिक्षण की आवश्यकता	39
12.	लैटिन अमेरिका का जागरण	51
13.	अनिवार्य आधारशिला	55
14.	पायनियरों के लिए अपील	57
15.	प्रबल हिस्सेदारी	59
16.	बहाई युवाओं से	60
17.	पनामा की खास स्थिति	61
18.	अथाह् विवेक, सर्वबाध्यकारी इच्छा	62
19.	प्रभु-साम्राज्य का आविर्भाव	63
20.	अमेरिका की नियति	75

दिव्य न्याय का अवतरण

समस्त अमेरिका और कनाडा में स्थित ईश्वर के प्रियजनों
और उस सर्वदयालु की सेविकाओं के प्रति

बहाउल्लाह् के प्रेमी, परम प्रिय भाइयों और बहनों!

जब कभी मैं दिव्य योजना के दायित्वों के निर्वहन के अपने कार्य में जुटे बहाउल्लाह् की विश्व-व्यवस्था के सुदृढ़ पायनियरों को स्फूर्त करने वाली गतिमान ऊर्जा के अनवरत प्रमाणों पर रुककर विचार करता हूँ तो हर बार मेरा हृदय ऐसे अदम्य आनन्द और हर्ष से भर उठता है कि मुझे लगता है, वास्तव में उसे पर्याप्त रूप से अभिव्यक्त कर सकना कठिन होगा। आपके निर्वाचित राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा अनुबंध पर हस्ताक्षर किए जाने, जो कि पश्चिम के किसी भी देश में बहाउल्लाह् के धर्म के अनुयायियों द्वारा अब तक आरम्भ किए गए वृहत्तम अभियान के अंन्तिम चरण के शुभारंभ का सूचक है और उसी तरह उनकी राष्ट्रीय शिक्षण समिति की क्रमिक रिपोर्टों में अंकित अत्यंत उत्साहजनक प्रगति से असंदिग्ध रूप से उस निष्ठा, उस ऊर्जा और समग्रता की पुष्टि होती है जिनसे सम्बलित होकर आप सब उन कार्यों को सम्पादित करने में जुटे हैं जो कि सात वर्षीय योजना के विकास के इस क्रम में अत्यावश्यक हैं। योजना के पहलुओं और उसकी बारीकियों दोनों ही दृष्टियों से, इसे अथक प्रभावशीलता और प्रशंसनीय कार्यान्वयन, आदर्शपूर्ण नियमितता और परिशुद्धता के साथ कार्य रूप दिया जा रहा है।

हाल के महीनों में, अमेरिकी धर्मानुयायियों के राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा दर्शाई गई दक्षता, जिसका प्रमाण उनके द्वारा क्रमिक रूप से किए जा रहे प्रयासों से अनायास मिल जाता है, के साथ-साथ बहाइयों की निष्ठा तथा उनके निर्विवाद एवं उदार सहयोग-भावना ने हर निर्णायक क्षण में तथा प्रगति के हर मुकाम पर उनके दायित्व-निर्वहन में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। एक समुदाय के जीवन में योगदान देने तथा प्रत्येक सुव्यवस्थित बहाई समुदाय की आधारशिला के रूप में कार्य करने वाली विभिन्न एजेन्सियों के बीच ऐसी गहन अभिक्रिया, ऐसी अखंड समरसता, ऐसा सतत् तालमेल और ऐसी बन्धुता एक ऐसा परिदृश्य है जो कि वर्तमान समाज में व्याप्त तथा दुःखद रूप से परिलक्षित हो रही असंगतियों द्वारा झलकाई जा रही विध्वंसक प्रवृत्तियों के मुकाबले अत्यंत भिन्न और विलक्षण प्रतीत होता है। वह हर अग्निपरीक्षा जो कि अगाध विवेक-सम्पन्न सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपने चुने हुए समुदाय के ऊपर डालना चाहता है, उस समुदाय की अपरिहार्य एकता को एक नए रूप में प्रदर्शित करने और उसकी आंतरिक शक्ति को मजबूत बनाने का कार्य करती है। वहीं दूसरी ओर, एक पतनशील युग के सम्मुख उत्पन्न हो रहे एक-एक संकट पहले से भी अधिक निश्चित रूप से उन विनाशकारी प्रभावों को प्रकट कर रहे हैं जो कि इसकी विनष्टप्रायः संस्थाओं की क्षमता को खोखला और उनके आधारों को तेजी से क्षीण करते जा रहे हैं।

हर किसी पर अपनी अनवरत दृष्टि रखने वाले 'शुभंकर' परमात्मा के हस्तक्षेपों की हमें जो झलक मिल रही है उसके लिए उन लोगों को जो 'महानतम नाम' के समुदाय से जुड़े हुए हैं, सदैव आभारी रहना चाहिए। एक ओर तो उस परमात्मा की अचूक कृपा और दूसरी ओर उसके द्वारा दी गई विपत्तियों के हर नए संकेत से उनमें अपार आशा और साहस का ही संचार हो सकता है। इस नियति-चक्र के चलने के कारण, प्रभुधर्म के दायरे में उन्हें प्राप्त हो रहे हर अवसर को ग्रहण करने के लिए चैकस रहते हुए और उस उद्वेलनकारी उथल-पुथल के परिदृश्यों से घबड़ाए बिना, जो आज न तो कल उन लोगों को प्रभावित करके ही रखेगी जिन्होंने इस धर्म की ज्योति को स्वीकारने से इन्कार किया है, उन्हें तथा उनके साथ कार्यरत सभी बन्धुओं को अनवरत रूप से आगे बढ़ते रहना चाहिए - तब तक जब तक कि जिन प्रक्रियाओं को अभी गतिशील किया गया है उनमें से प्रत्येक प्रक्रिया अपनी पूरी शक्ति से सक्रिय हो चुकी होगी और उस विश्व-व्यवस्था को जन्म देने में अपना योगदान दे चुकी होगी जो अभी प्रसव-वेदना भरे काल के गर्भ से बाहर निकलने को छटपटा रही है।

पुनरावर्ती संकट

अनिष्टकारी रूप से बार-बार आने वाले ये संकट और एक अदम्य शक्ति जो कि मानवजाति के सतत् बढ़ते जन-समुदाय को उद्वेलित करने में लगी है, वे अस्थायी तौर पर ही सही लेकिन आगे भी एक निश्चित अनुपात में उस विश्व-समुदाय पर अपना अभिशप्त प्रभाव डालती रहेंगी जिसने धरती के सुदूर छोरों तक अपनी प्रशाखाओं का विस्तार कर रखा है। ऐसी विश्वव्यापी उथल-पुथल के आरम्भ होने, उन शक्तियों के खुलकर प्रकट होने से जो कि सुसंगठित समाज के सामुदायिक ताने-बाने तथा उसके धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संतुलनों में घोर फेरबदल उत्पन्न कर रही हैं, जो राजनीतिक प्रणालियों, प्रजातीय सिद्धान्तों, सामाजिक अवधारणाओं, सांस्कृतिक आदर्शों, धार्मिक संगठनों और व्यापारिक सम्बन्धों को उद्वेलन और ऊहापोह के चक्र में डाले जा रही हैं - ऐसे बड़े पैमाने पर सक्रिय ऐसी अभूतपूर्व उथल-पुथल से इस नवजात प्रभुधर्म की संस्थाओं पर प्रभाव भला कैसे नहीं पड़ेगा, उस प्रभुधर्म की संस्थाओं पर जिसकी शिक्षाएँ मानव जीवन और व्यवहार के इन प्रत्येक पहलुओं पर पुरजोर असर डालने वाली हैं?

अतः, जो लोग ऐसे व्यापक और चुनौतीपूर्ण धर्म की ध्वजा उठाए चल रहे हैं, यदि वे विश्व को हिलाकर रख देने वाली इन शक्तियों के प्रभाव का स्पर्श महसूस करें तो इसमें हैरान होने की कोई बात नहीं है। यदि उन्हें लगता हो कि इन परस्पर टकराते आवेगों के भँवर में उनकी अपनी स्वतंत्रता सीमित हो गई है, उनके सिद्धान्त तिरस्कृत-से हो गए हैं, उनकी संस्थाओं को आक्रामक तेवरों का शिकार होना पड़ रहा है, उनके इरादों को मलिन भावना से देखा जा रहा है, उनके अधिकार संकट में पड़ गए हैं, और उनके दावे खारिज कर दिए गए हैं तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

यूरोपीय महाद्वीप के बीचोंबीच स्थित एक समुदाय जिसे अब्दुल-बहा की भविष्यवाणी के अनुसार अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं और भौगोलिक अवस्थिति के कारण अपने आस-पास के देशों में प्रभध्धर्म की आभा बिखेरने के लिए नियत किया गया है, उसे एक ऐसे शासन-तंत्र द्वारा उपस्थित की गई बाधाओं के कारण एक क्षणिक दौर के लिए ग्रहण का शिकार होना पड़ रहा है जिसने इस समुदाय के उद्देश्य और कार्यकलाप को ठीक से समझा ही नहीं है। दुःख की बात है कि आज उस समुदाय को अपनी आवाज मुखरित करने से रोक दिया गया है, इसकी संस्थाएँ भंग कर दी गई है, इसके अभिलेखागार जब्त कर लिए गए हैं और इसकी बैठकों पर रोक लगा दी गई है।

उधर मध्य एशिया की उस नगरी में जिसे अब्दुल-बहा द्वारा प्रथम मशरिकुल-अज़कार (बहाई उपासना मन्दिर) की स्थली चुने जाने का विशिष्ट गौरव प्राप्त है, तथा साथ ही उस प्रान्त में पड़ने वाले अन्य नगरों और गाँवों में, घोर दमनचक्र का शिकार हुआ बहाउल्लाह का धर्म कई दशकों से झलकाई जाती रही अपनी विशिष्ट और विलक्षण निष्ठा-शक्ति के बावजूद आज उन ताकतों की दया का मोहताज बना हुआ है जो इसकी उभरती हुई शक्ति से भयभीत होकर इसे नाकामयाब बनाने पर तुली हुई हैं। इसके मन्दिर का, जो हालाँकि अभी भी बहाई उपासना के कार्य के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है, स्वामित्व छीन लिया गया है, इसकी आध्यात्मिक सभाओं और समितियों को विघटित कर दिया गया है, इसके शिक्षण सम्बंधी कार्यकलापों को लुंज-पुंज बना दिया गया है, इसके अग्रणी लोगों को निर्वासित कर दिया गया है और इसके अत्यंत उत्साही समर्थकों में से अनेकों - स्त्रियों और पुरुषों दोनों - को कैद में डाल दिया गया है।

इस धर्म की जन्मभूमि में जहाँ इसके अनुयायियों की एक विशाल संख्या निवास करती है, एक ऐसे देश में जिसकी राजधानी को बहाउल्लाह ने “विश्व की जननी” और “मानवजाति के आनन्द का दिवास्रोत” कहकर पुकारा है, वहाँ की राजसत्ता द्वारा, जो अभी भी एक आदम जमाने के, कट्टर और अत्यंत भ्रष्ट मुल्लातंत्र से मुक्त नहीं हुई है, उस प्रभुधर्म के अनुगामियों के खिलाफ घोर दमन-अभियान चलाया जा रहा है जिसे दबा सकने में वह लगभग एक शताब्दी से विफल रही है। इस सच्चाई की तनिक भी परवाह किए बिना कि इस निर्दोष और प्रतिबंधित समुदाय के सदस्य न्यायोचित रूप से अपनी मातृभूमि के सर्वाधिक निःस्वार्थ, सक्षम और उत्कट देशप्रेमियों की कोटि में गिने जा सकते हैं, विश्व-नागरिकता की उनकी भावना - जिसे कट्टर और संकीर्ण राष्ट्रवाद के पक्षधर कभी समझने की आशा भी नहीं कर सकते - के प्रति घृणापूर्ण रवैया रखने वाली ऐसी सत्ता उस धर्म को, जिसका आध्यात्मिक प्रभाव-क्षेत्र लगभग छः सौ स्थानीय समुदायों तक फैला हुआ है और जिसके अनुयायियों की संख्या उस देश में ईसाइयों, यहूदियों या पारसियों से भी ज्यादा है, अपने विधानों को लागू करने, अपने कार्यकलापों के प्रशासन, अपने स्कूलों के संचालन, अपने उत्सवों के आयोजन, अपने साहित्य के वितरण, अपने धार्मिक संस्कारों के सम्पादन, अपने भवनों के निर्माण और अपनी सम्पत्तियों के संरक्षण का अधिकार देने से मना करती है।

और अब, पूरे विश्व को अपने दायरे में समेटने वाले प्रभुधर्म के केन्द्रस्थल, खुद पवित्र भूमि में, हाल ही में प्रजातीय शत्रुता, अपने ही बंन्धु-बान्धवों के साथ संघर्ष और उन्मुक्त आतंकवाद की आग ने एक ऐसी ज्वाला सुलगा दी है जिसने एक ओर तो उस केन्द्र की जीवन-धारा यानी तीर्थयात्रियों के प्रवाह को बुरी तरह बाधित कर दिया है, और दूसरी ओर वहाँ स्थित पवित्र स्थलों के चारों ओर के क्षेत्र के संरक्षण और विस्तार के क्रम में आरम्भ की गई विभिन्न परियोजनाओं का काम रुक गया है। वहाँ निवास करने वाले धर्मानुयायियों के एक छोटे-से समुदाय की सुरक्षा, अराजकता के इस बढ़ते हुए माहौल के कारण खतरे में पड़ गई है, एक तटस्थ और विशिष्ट समुदाय के रूप में उसकी स्थिति को अप्रत्यक्ष चुनौतियाँ मिलने लगी हैं, और अपने कतिपय आयोजनों को सम्पादित करने की उसकी स्वतंत्रता बहुत हद तक अवरुद्ध हो गई है। उस दूरस्थ देश के तीन प्रमुख धर्मों के अग्रणी लोगों और अनुयायियों को निशाना बनाकर किए जा रहे जानलेवा हमलों और उनके बाद सिर उठाने वाले प्रजातीय और धार्मिक उन्मादों के विस्फोटों के कारण समय-समय पर उस देश के अन्दर तथा बाहरी विश्व से सामान्य संवाद स्थापित करने के मार्ग में गंभीर चुनौती उपस्थित होती रही है। हालाँकि यह स्थिति बड़ी संकटपूर्ण रही है लेकिन इसे चमत्कार से कम नहीं कहा जाना चाहिए कि पूरे विश्व को समेटने वाले प्रभुधर्म की आराधना के केन्द्रबिंदु, बहाई पवित्र स्थल, अपनी संख्या और अरक्षित स्थिति के बावजूद, और बाहरी तौर पर सुरक्षा के किसी भी साधन से वंचित होते हुए भी, संरक्षित स्थिति में खड़े हैं।

परस्पर टकराती महत्वाकांक्षाओं से जीर्ण-शीर्ण और भीतर-ही-भीतर खतरनाक रूप से विखंडित होती यह दुनिया इतिहास के इस निर्णायक युग में स्वयं को आज एक नवजात धर्म की उभरती हुई शक्ति के समक्ष खड़ी पा रही है - एक ऐसे धर्म के सम्मुख जो रह-रह कर विवादों में घसीटा जाता हुआ दिखता है, विश्व के संघर्षों में उलझा प्रतीत होता है, उसके चारों ओर घिरती छाँह के ग्रहण में ग्रसित लगता है, और उस विश्व की लालसाओं के उमड़ते ज्वार के प्रचंड वेगों से कदाचित् हारा-थका-सा नजर आता है। अपने केन्द्रस्थल, अपनी जन्मभूमि में, अपने प्रथम श्रद्धास्पद मन्दिर की धरती पर, अपने एक भूतपूर्व रूप से समृद्ध और अपार शक्ति की संभावना वाले हृदयस्थल में, बहाउल्लाह का धर्म - जिसे अभी भी अपनी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है - सचमुच, पूरी मानवजाति को तेजी से अपना ग्रास बनाती हुई हिंसा और अराजकता की बढ़ती हुई ताकतों के आगे झुका, थका-सा प्रतीत होता है। इस धर्म के मजबूत गढ़ एक-एक करके और दिन-प्रतिदिन बाहरी तौर पर क्रमशः अलग-थलग होते, आक्रमणों और बाहरी आधिपत्यों के शिकार होते दिख रहे हैं। एक ऐसे समय में जबकि स्वतंत्रता की रोशनी मंद होते-होते बुझ रही है, जबकि संघर्ष का कोलाहल दिनोंदिन तेज-पर-तेज होता जा रहा है, जबकि लोगों के हृदयों में कट्टरता की आग उदग्र लपटों के साथ और अधिक प्रचंडता से धधकने लगी है, जबकि अधर्म के सर्द हाथ अबाध रूप से मानवता की आत्मा को छूने बढ़ चले हैं, तब बहाउल्लाह के धर्म के घटक अवयव कमोवेश उस जड़ता के

प्रभाव से जकड़े हुए प्रतीत होने लगे हैं जिसने आज पूरे सभ्य जगत को अपने शिकंजे में कस रखा है।

ऐसी घड़ी में आज अब्दुल-बहा के ये शब्द कितने स्पष्ट और आश्चर्यजनक रूप में चरितार्थ हो रहे हैं: *"ज्ञान के जिस अंधकार ने पूरब और पश्चिम दोनों को ढँक रखा है, वह इस परम महान कालचक्र में दिव्य मार्गदर्शन के प्रकाश से जूझ रहा है। उसकी तलवारें, उसके बरछे बहुत तेज और धारदार हैं, और सेना अत्यंत खून की प्यासी।" एक अन्य अंश में उन्होंने लिखा है: "इस युग में धर्म के सभी नायकों की शक्तियाँ सर्वदयालु परमेश्वर के अनुगामियों को तितर-बितर करने में ही केन्द्रित हैं और लगी है दिव्य भवन को ध्वस्त करने में। दुनिया की सभी शक्तियाँ- चाहे वे भौतिक हों, सांस्कृतिक या राजनैतिक - हर ओर से धावा बोल रही हैं, क्योंकि प्रभुधर्म महान है, अत्यंत महान। इस युग में उसकी महानता लोगों की आँखों के सामने स्पष्ट रूप से प्रकट है।"*

प्रमुख अवशिष्ट दुर्ग

एक प्रमुख अवशिष्ट दुर्ग, वह सशक्त भुजा जो आज भी एक अजेय धर्म की ध्वजा उठाए चल रही है वह और कोई नहीं बल्कि उत्तरी अमेरिकी प्रायद्वीप में 'महानतम' नाम के अनुयायियों का आशीर्वादित समुदाय है। अपने कार्यों तथा सर्वशक्तिमान 'शुभंकर' द्वारा उसे प्रदत्त अचूक संरक्षण के माध्यम से, पूर्व और पश्चिम के सतत् अभिक्रियाशील समुदायों का यह विशिष्ट सदस्य भविष्य की उस नई विश्व व्यवस्था का सर्वमान्य जन्मस्थल और उसका सुदृढ़ दुर्ग बनने के लक्षणों से सम्पन्न है जो कि बहाउल्लाह के नाम से जुड़े धर्मयुग की प्रतिज्ञा भी है और उसकी गरिमा भी।

जो कोई भी इस समुदाय को प्रदत्त इस विशेष दर्जे को कम करके आँकना चाहता हो अथवा आने वाले दिनों में उसे जिस भूमिका को निभाने का आह्वान किया गया है उस पर संदेह करता हो, उसे अब्दुल-बहा द्वारा कहे गए इस सारगर्भित और अत्यंत प्रकाशमय शब्दों पर विचार करना चाहिए जो उन्होंने इस समुदाय को सम्बोधित करते हुए उस समय कहे थे जबकि एक विनाशकारी युद्ध के बोझ तले कराह रही इस दुनिया की नियति अपनी अधम स्थिति तक आ पहुँची थी। उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा था कि "अमेरिकी प्रायद्वीप एकमेव सत्य ईश्वर की दृष्टि में वह धरती है जहाँ से उसकी ज्योति की आभा प्रस्फुटित होगी, जहाँ उसके धर्म के रहस्य प्रकट होंगे, जहाँ धर्मपरायण लोगों का निवास होगा और स्वतंत्रचेता लोग एकत्रित होंगे।"

उत्तरी अमेरिका के धर्मानुयायियों के समुदाय ने - जो कि भविष्य में सम्पूर्ण पश्चिमी गोलार्द्ध में बहाउल्लाह के धर्म द्वारा स्थापित किए जाने वाले भावी समुदायों का ढाँचा और साथ ही उसका उत्प्रेरक है - निराशा के वर्तमान दौर के बावजूद उस प्रकाश के संवाहक, उन रहस्यों के कोषागार, उस धर्मपरायणता के प्रवर्तक और उस स्वतंत्र चेतना के अभयस्थल के रूप में अपनी क्षमता प्रदर्शित की है। बहाउल्लाह के धर्म के सुनहले युग के प्रकाश के सिवा उपरोक्त शब्दों में भला और

किस प्रकाश की ओर संकेत किया गया होगा? बहाई प्रशासन के साँचे में विकसित हो रही जो विश्व-व्यवस्था अभी समय के गर्भ में पल रही है उसके रहस्यों के सिवा अब्दुल-बहा ने और किन रहस्यों का विचार किया होगा? यदि उस धर्मपरायणता की नहीं तो और किस धर्मपरायणता की कल्पना की जा सकती है जिसका शासन केवल उस 'युग' और उस 'व्यवस्था' द्वारा ही स्थापित किया जा सकता है? समय आने पर उस 'प्रभु' के साम्राज्य की घोषणा के सिवा अन्य किस स्वतंत्रता का वरदान प्राप्त हो सकता है?

अपनी मृत्यु का वरण करके प्रभुधर्म के जन्म की घोषणा करने वाले वीरतापूर्ण युग के शहीदों के आध्यात्मिक वंशजों यानि अमेरिकी प्रायद्वीप में बहाउल्लाह के धर्म के सुगठित विकासकर्ताओं के समुदाय को आज चाहिए कि वे मरकर नहीं बल्कि त्यागपूर्ण जीवन जीकर उस प्रतिज्ञापित विश्व-व्यवस्था के संवाहक बनें जो एक सीपी की तरह उस विश्व-सभ्यता के बहुमूल्य मोती को सँजोए हुए है जिसका एकमात्र जनक है हमारा यह धर्म। एक ओर जहाँ इसके अन्य समानधर्मी समुदाय हर ओर से प्रवाहित होती तूफानी हवाओं के आघात से झुके हुए हैं, यह समुदाय सर्वशक्तिमान विधाता के अकाट्य निर्णय से संरक्षित तथा 'दिव्य योजना की पाती' में दिए गए आदेशों से निरन्तर जीवन प्राप्त करते हुए उन संस्थाओं की आधारशिला रखने और उनके विकास को बल देने के कार्य में व्यस्त है जिनके माध्यम से उस युग का आगमन होगा जिसे बहाउल्लाह की विश्व-व्यवस्था के जन्म और विकास का साक्षी बनने के लिए नियत किया गया है।

एक ऐसा समुदाय जो संख्यात्मक दृष्टि से बहुत छोटा है, जो प्रभुधर्म के मुख्य केन्द्र और उस देश से जहाँ इस धर्म के बहुसंख्य अनुयायियों का निवास है - दोनों से अत्यंत दूर स्थित है, जिसके पास पर्याप्त भौतिक संसाधन उपलब्ध नहीं हैं और जिसके पास अनुभव और प्रभुत्व का अभाव है, जो इस धर्म के आध्यात्मिक 'प्रवर्तकों' के देश के लोगों और प्रजातियों की मान्यताओं, धारणाओं और रीति-रिवाजों से अनभिज्ञ है, जो उस भाषा से पूर्णतया अपरिचित है जिसमें इसके पवित्र ग्रंथ मूल रूप से प्रकट किए गए हैं, जिन्होंने अनुवाद के माध्यम से उपलब्ध इस धर्म के साहित्य के केवल एक अंशमात्र में वर्णित विधानों, सिद्धान्तों और इतिहास के आधार पर इसमें अपनी सम्पूर्ण आस्था समर्पित कर दी है, वह समुदाय जो अपनी आरम्भिक अवस्था से ही अत्यंत कठिन संकटों के दौर से गुजरता आया है जिनके अंतर्गत कई बार इसके कुछ प्रमुख सदस्यों द्वारा धर्म का साथ छोड़ देने जैसी स्थितियाँ भी शामिल हैं, जिसे अपने आरम्भ काल से ही सतत् बढ़ते हुए क्रम में भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, और जड़ जमाए बैठे पूर्वाग्रह से लड़ना पड़ा है - ऐसे समुदाय ने पचास से भी कम वर्षों में, पूर्व या पश्चिम के अपने किसी भी समानधर्मी समुदाय से कोई भी मदद पाए बिना, सर्वप्रेमी 'मास्टर' (अब्दुल-बहा) से प्राप्त अपनी प्रचुर स्वर्गिक क्षमता के बल पर अपने द्वारा आत्मार्पित किए गए प्रभुधर्म के विकास को ऐसी गति प्रदान की है जिससे पश्चिम के देशों में अन्य धर्मों की संयुक्त उपलब्धियाँ भी होड़ नहीं कर सकतीं।

पूरे विश्वास के साथ यह पूछा जा सकता है कि बहाउल्लाह की विश्व-व्यवस्था की अग्रणी, इन बहाई संस्थाओं, की रूपरेखा तय करने और उन्हें मौलिक गतिशीलता प्रदान करने का उत्प्रेरण और किस बहाई समुदाय द्वारा उपलब्ध कराया गया है? जिस संरचना के अंतर्गत ही उन नवजात संस्थाओं का संख्यात्मक विकास और उनकी परिपक्वता सुनिश्चित हो सकती है उस संरचना के निर्माण और उसके सतत विस्तार के लिए अत्यंत अनिवार्य ऐसी अडिगता और कुशलता, ऐसे अनुशासन और दृढ़ निश्चय, उत्साह और सतत् परिश्रम, श्रद्धा और निष्ठा की भावना झलकाने में और कौन-सा समुदाय सक्षम हुआ है? भला और किस समुदाय ने स्वयं को ऐसे भव्य विचार-दर्शन से ऊर्जस्वित, त्याग की ऐसी महानता प्राप्त करने को इच्छुक, एकता और अखंडता के ऐसे उदात्त मानदंड तक पहुँचने को तत्पर साबित किया है जिनके दम पर इतने कम समय में और ऐसे निर्णायक वर्षों के दौर से गुजरते हुए, उसने एक ऐसी संरचना तैयार कर दी है जिसे पाश्चात्य जगत में बहाउल्लाह के धर्म के प्रति महानतम योगदान माना जा सकता है? न्यायोचित ढंग से कहा जाए तो और कौन-सा समुदाय यह दावा कर सकता है कि उसके एक विनम्र सदस्य द्वारा अकेले किए गए प्रयासों से इस धर्म के प्रति किसी राजा या रानी ने स्वतःस्फूर्त निष्ठा प्रदर्शित की हो और उसकी सत्यता के प्रति ऐसे अद्भुत और लिखित प्रमाण प्रस्तुत किए हों? अन्य किस समुदाय ने ऐसी दूरदर्शिता, संगठनात्मक क्षमता, उत्साह और उमंग की झलक दिखाई है जिसके कारण उसके सम्पूर्ण प्रदेश में उन आरंभिक स्कूलों की स्थापना और उनका गुणात्मक विकास संभव हो पाया हो जो, समय आने पर, एक ओर तो बहाई ज्ञान के शक्तिशाली केन्द्र बनकर उभरेंगे और, दूसरी ओर, इसके संदेश का प्रसार करने वाले कार्यबल के सुगठन और सशक्तिकरण हेतु नए-नए लोगों के शामिल होने के लिए एक उर्वर आधार भी प्रस्तुत करेंगे? अन्य किस समुदाय ने ऐसे पायनीयर खड़े किए हैं जिनमें साहस, पावनता, दृढ़ता, आत्मत्याग और अटूट भक्ति-भावना जैसे अत्यावश्यक गुणों का ऐसा उच्च कोटि का सम्मिश्रण पाया जाता हो जिनसे प्रेरित होकर उन्होंने अपना घर-बार छोड़ दिया, अपना सर्वस्व त्याग दिया, और धरती के कोने-कोने में फैलकर इसके सुदूर क्षेत्रों में बहाउल्लाह की विजय-पताका फहरा दी? इस समुदाय के सदस्यों के सिवा और कौन हैं जिन्होंने ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यों के केन्द्रस्थलों में, जर्मनी, सुदूर पूर्व, बाल्कन प्रान्तों, स्कैंडिनेवियाई देशों, लैटिन अमेरिका, प्रशान्त महासागर के द्वीपों, दक्षिणी अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड और हाल ही में बाल्टिक राज्यों तक के अत्यंत महत्वपूर्ण और दूर-दूर तक फैले स्थलों और प्रदेशों में 'या बहा उल आभा' का पहली बार उद्घोष करने का विशिष्ट दर्जा हासिल किया हो? करीब चालीस भाषाओं में अपने पवित्र साहित्य के अनुवाद के लिए, जिनका संवितरण प्रभावी रूप से सुगठित किसी भी शिक्षण-अभियान के लिए एक अत्यावश्यक तत्व है, प्रयास करने और धैर्य दिखाने का हौसला रखने तथा उसके लिए आवश्यक धन का प्रबंध

करने की चुनौती इन पायनियरों के सिवा भला और किन्होंने स्वीकार की? पवित्र समाधियों के आसपास के स्थलों के संरक्षण और विस्तार तथा बहाई विश्व केन्द्र में इसकी भावी संस्थाओं के निर्माण के लिए आरंभिक तौर पर भूमि-अधिग्रहण के विश्वव्यापी प्रयासों में अपनी निर्णायक हिस्सेदारी निभाने का दावा और कौन-सा समुदाय कर सकता है? अपने राष्ट्रीय और स्थानीय संविधानों की रचना में अग्रणी होने और उनके माध्यम से अपनी संस्थाओं के कार्यकलापों के नियमन, उनके प्रकार्यों को परिभाषित और उनके अधिकारों को संरक्षित करने के दुहरे घोषणा-पत्र की बुनियादी रूपरेखाओं का प्रारूप तय करने का अनन्त श्रेय भला और किस समुदाय को प्राप्त हो सकता है? दूसरा कौन-सा समुदाय है जो एक ही समय अपनी राष्ट्रीय परिसम्पदाओं का अधिग्रहण करने और उनके आधार को कानूनी संरक्षण प्रदान करने का दावा कर सकता हो, जिसके माध्यम से उसने अपने स्थानीय समुदायों द्वारा भी ऐसा करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया हो? जब इसकी अन्य समानधर्मी संस्थाओं ने इस संभावना की कल्पना भी न की होगी उससे काफी पहले संघीय और प्रान्तीय दोनों ही स्तरों पर आधिकारिक संस्थाओं से अपनी आध्यात्मिक सभाओं और राष्ट्रीय परिसम्पत्तियों की मान्यता की पुष्टि करने वाले आवश्यक दस्तावेजों को हासिल करने की उत्कृष्ट विशेषता प्राप्त करने का गौरव अन्य किस समुदाय को है? और अंत में, जरूरतमंदों को सहायता देने, दलितों का पक्षधर बनने, और फारस, मिस्र, इराक, रूस, और जर्मनी जैसे देशों में - जहाँ कई बार उनके धर्मानुयायी बन्धुओं को धार्मिक और प्रजातीय दोनों ही प्रकार के उत्पीड़नों के दबाव झेलने को मजबूर होना पड़ा - बहाई भवनों और संस्थाओं के संरक्षण की दिशा में इतने सशक्त रूप से हस्तक्षेप करने का विशेषाधिकार और साधन अन्य कौन समुदाय जुटा पाया?

बीस से भी अधिक वर्षों की अवधि में, और बहाई विश्व समुदाय के इतने बड़े हिस्से के हितों और उसकी नियति से अंतर्सम्बंधित, सेवा का ऐसा बेजोड़ और उत्तम रिकॉर्ड बहाउल्लाह् के धर्म के रचनात्मक काल के इतिहास का एक स्मरणीय अध्याय होने के योग्य है। अमेरिकी धर्मानुयायियों की आरंभिक उपलब्धियों की यादगारों से फलीभूत और समृद्ध यह रिकॉर्ड भविष्य में उन्हें सौंपे जा सकने वाले उत्तरदायित्वों का समुचित रूप से वहन कर सकने की उनकी क्षमता का अपने आप में एक पुख्ता प्रमाण है। इन अनगिनत सेवाओं के महत्व को ज्यादा करके आँक पाना लगभग असंभव ही होगा। उनकी कीमत का सही-सही आकलन करना तथा उनकी योग्यताओं और उनसे प्राप्त होने वाले त्वरित परिणामों का समुचित और विस्तृत विवेचन कर पाना एक ऐसा काम है जिसे भविष्य का कोई बहाई इतिहासकार ही कर पाएगा। अभी तो मैं केवल अपना यह गहन विश्वास ही व्यक्त कर सकता हूँ कि ऐसे कार्यों को कर दिखाने, ऐसा उत्साह दर्शाने, ऐसी उच्चता को प्राप्त करने की क्षमता रखने वाला समुदाय अवश्य ही उन संभावनाओं से पूर्व-सम्पन्न होगा जिनसे समय आने पर बहाउल्लाह् की विश्व-व्यवस्था के मुख्य रचनाकार और चैम्पियन के रूप में पुकारे जाने का उनका अधिकार न्यायोचित सिद्ध होगा।

हालाँकि बड़ा भव्य है यह रिकॉर्ड, और कुछ पहलुओं से देखने पर यह हमें उन वीरतापूर्ण कारनामों की याद दिलाता है जिनके माध्यम से शौर्यकाल के शहीदों ने प्रभुधर्म के अभ्युदय की घोषणा की थी, परन्तु इस महान समुदाय से जुड़ा दायित्व अभी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचने से बहुत दूर है। अभी तो उसके आरंभिक अध्याय ही खुले हैं। अमेरिका के धर्मानुयायियों ने लगभग पचास वर्षों के समयांतराल में जो उपलब्धियाँ हासिल की हैं, वे उनके सामने पड़े दायित्वों की विशालता के आगे बहुत अल्प प्रतीत होती हैं। उस प्रलयंकारी उथल-पुथल की आहट जो एक ही साथ पुरानी व्यवस्था की मृत्यु-वेदना और एक नई विश्व-व्यवस्था की प्रसव-पीड़ा की घोषणा करने वाली है, वह उन दायित्वों के शीघ्र उपस्थित होने और उनकी विस्मयकारी प्रकृति दोनों को संकेतित कर रही है।

एक वृहत्तर धर्मयुद्ध

अब्दुल-बहा के इच्छापत्र और उनके द्वारा दिए गए निर्देशों के तहत, एक सुघटित समुदाय के रूप में उन्हें जिस प्रथम कार्य का दायित्व सौंपा गया था वह था प्रभुधर्म की प्रशासनिक व्यवस्था का संस्थापन, उनके कार्य-संचालन के लिए आवश्यक साधनों की रूपरेखा तय करना और उसकी सहायक संस्थाओं का सुगठन। इस प्रारंभिक कार्य को उन्होंने अनुपम तत्परता, निष्ठा और ऊर्जस्विता के साथ सम्पन्न किया है। आने वाले समय में वे जिस किसी नीति को आरंभ करना चाह सकते थे उसके प्रभावी संचालन के लिए विभिन्न आवश्यक एजेन्सियों को सृजित और अंतर्सम्बंधित करने के साथ-साथ उन्होंने उसी उत्साह और समर्पण के साथ स्वयं को एक अगले कठिनतर कार्य के लिए झोंक दिया -- एक ऐसे भव्य भवन की अधोसंरचना तैयार करने के कार्य के लिए जिसकी आधारशिला स्वयं अब्दुल-बहा ने रखी थी। और उस महान कार्य के सम्पन्न होते ही, 'दिव्य योजना की पाती' में अंकित भाव-प्रवण आग्रहों, आदेशों और प्रतिज्ञाओं के प्रति जीवन्तता का परिचय देते हुए यह समुदाय एक और महान दायित्व को स्वीकारने के लिए प्रतिबद्ध हो उठा जो कि अपने व्यापक दायरे और अपनी अपार आध्यात्मिक संभावनाओं के कारण उनके द्वारा अब तक सम्पन्न किए गए किसी भी कार्य से ज्यादा महत्वपूर्ण सिद्ध होने वाला है। उन युगान्तरकारी 'पातियों' में प्रस्तावित मिशन को पूरा करने की दिशा में प्रथम और व्यावहारिक कदम के रूप में, अदम्य उत्साह और निर्भय साहस के साथ सात वर्षीय योजना को आरंभ करते हुए, वे समर्पण की एक नई भावना से संवलित होकर अपने दुहरे दायित्व के संपादन के लिए प्रवृत्त हुए। आशा की जाती है कि बहाई धर्म की जन्म-शताब्दी के आयोजन के समय उस दायित्व की भी पूर्णाहुति हो जाएगी। इस तथ्य से पूर्णतया परिचित कि उनके भव्य भवन की बाहरी साज-सज्जा के कार्य में होने वाली हर प्रगति से उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकी प्रायद्वीपों दोनों ही में शुरू किए गए उनके शिक्षण अभियानों की प्रगति पर प्रत्यक्ष असर पड़ेगा, और यह महसूस करते हुए कि प्रभुधर्म का संदेश देने के क्षेत्र में प्राप्त की गई हर विजय उनके 'मन्दिर' के निर्माण कार्य को सुगम बनाएगी

और उसकी पूर्णता में तेजी लाएगी, अब वे साहस और निष्ठा के साथ 'योजना' के दोनों ही चरणों में अपने ऊपर लिए गए दायित्वों को पूरा करने के लिए तेजी से प्रयासरत हैं।

लेकिन वे यह मानकर न चलें कि बहाई युग की प्रथम शताब्दी की समाप्ति के साथ सात वर्षीय योजना का आरंभ होना उस दायित्व के खत्म होने या उसमें किसी विराम के आने का सूचक है जिसे पूरा करने के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर की भुजा उन्हें निर्देशित कर रही है। बहाई युग की दूसरी शताब्दी का समारंभ अवश्य ही ज्यादा बड़े गवाक्षों को खोलेगा, हमें अगले चरण की ओर ले जाएगा तथा ऐसी दूरगामी योजनाओं का साक्षी बनेगा जिनकी कल्पना आजतक नहीं की जा सकी है। वह योजना जिसपर अभी अमेरिका के धर्मानुयायियों का सम्पूर्ण ध्यान और संसाधन केन्द्रित है, जिसपर उनकी आशाएँ टिकी हुई हैं, उसे तो बस एक शुरुआत के रूप में देखा जाना चाहिए, उनकी शक्ति के एक परीक्षण के रूप में, एक वृहत्तर धर्मयुद्ध की अगली सीढ़ी के रूप में -- बशर्ते कि दिव्य योजना के प्रणेता द्वारा उनपर सौंपे गए दायित्वों और कर्त्तव्यों का निर्वहन वे श्रद्धापूर्वक और सम्पूर्णता के साथ करें।

वर्तमान योजना की पूर्णाहुति हमें ज्यादा से ज्यादा यही परिणाम दे सकती है कि पश्चिमी गोलार्ध के हर गणराज्य में हम कम-से-कम एक-एक केन्द्र की स्थापना कर लेंगे, जबकि उन 'पातियों' में प्रस्तावित कर्त्तव्य और अधिक व्यापक विस्तार के लिए हमारा आह्वान करते हैं, और उनमें नई दुनिया के सम्पूर्ण क्षेत्र में उत्तरी अमेरिकी बहाई समुदाय के सदस्यों के और ज्यादा संख्या में प्रतिनिधित्वपूर्ण विस्तार का अर्थ निहित है। अतः, असंदिग्ध रूप से, अमेरिकी धर्मानुयायियों का मिशन यही है कि प्रथम शताब्दी के अन्तिम वर्षों में शुरू किए गए गौरवशाली कार्यों का सिलसिला वे दूसरी शताब्दी में भी जारी रखें। जबतक वे इन एकाकी और नव-संस्थापित केन्द्रों के कार्यकलापों को मार्गदर्शित करने, तथा उन्हीं की तरह स्थानीय और राष्ट्रीय स्तरों पर अपनी संस्थाओं का निर्माण कर सकने के लिए उन केन्द्रों की क्षमताओं का विस्तार करने में अपनी भूमिका नहीं निभा लेंगे तब तक वे यह संतोष नहीं कर सकते कि उन्होंने अब्दुल-बहा द्वारा प्रकटित दिव्य योजना के अंतर्गत अपने त्वरित कर्त्तव्यों को पर्याप्त रूप से निभा लिया है।

पलभर के लिए भी यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि अब्दुल-बहा ने उनके लिए जिस योजना की संकल्पना की थी वह लैटिन अमेरिकी देशों में बहाई केन्द्रों की संख्याओं में वृद्धि करने तथा वहाँ बहाई धर्म की प्रशासनिक संरचना की स्थापना के लिए जरूरी सहायता और मार्गदर्शन की व्यवस्था करने के उद्देश्य को पूरा कर लेने मात्र से पूर्ण हो जाती है। उनकी योजना को समाहित करने वाली पातियों को अगर सरसरी तौर पर भी पढ़ा जाए तो तुरन्त पता चल जाएगा कि उनके कार्यकलापों का दायरा पश्चिमी गोलार्ध की सीमाओं से कहीं दूर तक जाता है। जब अमेरिका के अन्दर उनके कार्य और दायित्व वास्तविक रूप से पूरे हो जाएँगे तो उनका अंतःप्रायद्वीपीय मिशन एक परम गौरवशाली और निर्णायक चरण में प्रवेश करेगा। स्वयं अब्दुल-बहा ने लिखा हैः *"अमेरिका के धर्मानुयायियों द्वारा जिस क्षण यह दिव्य संदेश अमेरिकी तटों से सुदूर क्षेत्रों - यूरोप, एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलेशिया और प्रशान्त महासागर के अत्यंत दूरस्थ द्वीपों -- तक प्रसारित*

किया जाएगा उसी क्षण यह समुदाय स्वयं को एक अनन्त साम्राज्य के सिंहासन पर सुरक्षित रूप से विराजमान पाएगा।"

और किसे पता है कि जब इस विशाल दायित्व को पूरा कर लिया जाएगा तो बहाउल्लाह द्वारा पूर्व-निर्धारित इससे भी बड़ा, इससे भी अधिक शानदार, अनुपम रूप से प्रखर किसी मिशन का दायित्व उनके ऊपर नहीं सौंप दिया जाएगा? ऐसे किसी भी मिशन के गौरव की आभा इतनी दीप्तिमान है, उससे जुड़ी हुई परिस्थितियाँ इतनी ओझल हैं और जिन समसामयिक घटनाओं की चरम परिणति से यह मिशन जुड़ा हुआ है उनका प्रवाह इतना तेज है कि अभी, इस वक्त, उसकी विशेषताओं का निरूपण करने का प्रयास करना अकाल-चेष्टा ही कही जाएगी। अभी तो इतना ही कहना पर्याप्त है कि "बाद के इन वर्षों" के संकटों और उथल-पुथल से अप्रत्याशित अवसरों का जन्म होगा, ऐसी अपूर्वचिन्तित परिस्थितियाँ सामने आएँगी जिनसे अब्दुल-बहा की योजना के विजयी पुरोधा नई विश्व-व्यवस्था के विस्तार में अपने द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के माध्यम से बहाउल्लाह की दहलीज की सेवा के मुकुट पर नई कीर्तियों के रत्न जड़ सकेंगे।

भविष्य की संभावनाएँ

साथ ही, बिल्कुल ही भिन्न रूप में सृजित होने वाले उन अनगिनत अवसरों पर से भी हमें ध्यान नहीं हटाना चाहिए जो कि बहाई विश्व केन्द्र अथवा उत्तरी अमेरिकी प्रायद्वीप में, या फिर धरती के अत्यंत सुदूर क्षेत्रों में ही सही, एक बार फिर बहाउल्लाह के धर्म के प्रसार के लिए किए गए सामूहिक योगदान में अमेरिकी धर्मानुयायियों को पहले जैसी ही अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान करेंगे। भविष्य की सम्भावनाओं पर एक विहंगम दृष्टि डालने के प्रयास में, फिलहाल मैं प्रमुखता के साथ उपस्थित होने वाले ऐसे कुछ अवसरों का अक्रमित उल्लेख ही कर सकता हूँ : विश्व न्याय मन्दिर का चुनाव और बहाई विश्व के आध्यात्मिक व प्रशासनिक केन्द्र यानी पवित्र भूमि में उसकी स्थापना और साथ ही उसकी सहायक शाखाओं व उप-संस्थाओं का गठन; पश्चिमी जगत के प्रथम मशरिकुल-अजकार (बहाई उपासना मन्दिर) पर निर्भर रहने वाली विभिन्न संस्थाओं का क्रमिक रूप से निर्माण तथा बहाई सामुदायिक जीवन के संरचनात्मक आधार की स्थापना और विस्तार से जुड़े जटिल मुद्दे; 'परम पवित्र पुस्तक' के अध्यादेशों की संहिता (कोड़) तैयार करना और उसका प्रसार जिसके कारण पूर्व के कतिपय देशों में बहाई विधान के आधिकारिक रूप से मान्य करने और सुसंगठित न्यायाधिकरणों के गठन की आवश्यकता हो सकती है; तेहरान के उपनगरीय क्षेत्र में बहाई विश्व के तीसरे मशरिकुल-अजकार का निर्माण और उसके बाद स्वयं पवित्र भूमि में भी ऐसे ही उपासना मन्दिर का सृजन; फारस, इराक, और मिस्त्र जैसे इस्लामी देशों में बहाई समुदायों को धार्मिक कठमुल्लेपन के बन्धनों से मुक्त करने की कवायद और उसके बाद उन देशों की नागरिक सत्ताओं द्वारा राष्ट्रीय और स्थानीय बहाई आध्यात्मिक सभाओं के स्वतंत्र दर्जे और धार्मिक प्रकृति को मान्यता दिया जाना; विभिन्न प्रकार के रुतबों वाले

पुरोहितवादी/मुल्लावादी संगठनों द्वारा एकजुट होकर नित्य बढ़ते हुए क्रम में और निर्दयतापूर्वक किए जाने वाले अपरिहार्य हमलों का प्रतिकार करने के लिए रक्षात्मक और सावधानी भरे उपाय तय करना, उन उपायों के बीच आपसी तालमेल बिठाना और उनका क्रियान्वयन और आखिरी लेकिन समान रूप से महत्वपूर्ण उन अनेक मुद्दों का सामना करना, उन अनेक बाधाओं पर विजय पाना और उन दायित्वों का संवहन जिनके माध्यम से कठिन परीक्षाओं के दौर से पीड़ित इस धर्म को पूर्ण निगूढ़ता, सक्रिय उत्पीड़न और सम्पूर्ण मुक्ति के क्रमिक चरणों से गुजरने में सक्षम बनाया जा सके ताकि एक स्वतंत्र धर्म के रूप में उसकी पहचान कायम हो सके, अन्य धर्मों के साथ यह पूर्ण समानता का आस्वाद पा सके, और तदुपरांत यह राज्य द्वारा मान्य धर्म के रूप में संस्थापित हो सके और ऐसा दर्जा हासिल कर सके जिसके फलस्वरूप एक बहाई राज्य के साथ जुड़े इसके अधिकारों और विशेषाधिकारों का धारण संभव हो, तथा यह अपनी असीमित शक्तियों के साथ कार्य कर सके। यह वह चरण होगा जिसकी अवश्यंभावी परिणति विश्वव्यापी बहाई राष्ट्रकुल के अभ्युदय के रूप में होगी जो कि सम्पूर्णतया बहाउल्लाह के विधानों की चेतना से अनुप्राणित होगा और प्रत्यक्षतः उनके अनुरूप अपने कार्यों का संचालन करेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि अब्दुल-बहा द्वारा उनकी पातियों में प्रभुधर्म के संदेश के प्रसार का जो आह्वान किया गया है उनके लिए सक्रियता दर्शाने के अलावा, अमेरिका के धर्मानुयायी इन अवसरों द्वारा प्रस्तुत की गई चुनौतियों को भी बेहिचक स्वीकार करेंगे और अपनी पारम्परिक साहस भावना, दृढ़ता, और सक्षमता के साथ उनका ऐसा प्रत्युत्तर देंगे कि पूरी दुनिया के सामने बहाई धर्म के चैम्पियन निर्माताओं के रूप में उनके पद और रुतबे की पुष्टि होगी।

अचूक प्रकाश

परमप्रिय मित्रों! भले ही यह कार्य बहुत लम्बा और दुरूह हो, परन्तु सर्वकृपालु दाता ने जिस पुरस्कार के लिए आपका चयन किया है वह इतना अमूल्य है कि उसका समुचित मूल्यांकन न कोई वाणी कर सकती है न कोई लेखनी। भले ही वह लक्ष्य जिसकी ओर आज आप इतने संघर्ष के साथ अग्रसर हैं बहुत दूर दिख रहा हो, और अभी तक लोगों की नजरों से ओझल हो, परन्तु उसकी प्राप्ति का वचन बहाउल्लाह के आधिकारिक और अपरिवर्तनीय शब्दों में दृढ़तापूर्वक निहित है। उन्होंने आपके लिए जिस पथ पर चलने का खाका खींचा है भले ही वह कई बार इस पीड़ित मानवजाति को आच्छादित करने वाली चुनौती भरी छायाओं से घिरा दिखता हो, परन्तु उन्होंने जिस अचूक प्रकाश के आप पर सतत् रूप से चमकने की व्यवस्था की है वह इतना प्रखर है कि धरती का कोई भी अंधकार उसकी प्रभा को ढँक नहीं सकता। भले ही आपकी संख्या छोटी हो और अभी आपके पास अनुभव, ताकत और संसाधनों की कमी हो किन्तु आपके मिशन को ऊर्जस्वित करने वाली 'शक्ति' का दायरा असीम है और उसकी क्षमता अपरिमेय। हालाँकि आपके मिशन की हर प्रगति के साथ खड़े हो जाने वाले दुश्मन बड़े खूंखार, अनगिनत और निर्मम हैं किन्तु यदि

आपका प्रयास जारी रहेगा तो, जैसा कि वचन दिया गया है, अदृश्य देवदूतों के समूह आपकी सहायता के लिए अवश्य ही आगे आएँगे और अन्ततः आपको उनकी आशाओं पर पानी फेरने और उनकी ताकतों को चकनाचूर करने में समर्थ बनाएँगे। हालाँकि आपके मिशन की चरम परिणति के साथ प्राप्त होने वाले परम आशीर्वाद असंदिग्ध हैं, और ईश्वर द्वारा आपको दिए गए वचन दृढ़ एवं अकाट्य किन्तु आपमें से प्रत्येक व्यक्ति जिन शुभ उपहारों को प्राप्त करने वाला है वे बहुत हद तक आपके द्वारा उस मिशन के प्रसार और उस विजय को निकट लाने के लिए किए गए नियमित प्रयासों के योगदान पर निर्भर हैं।

परम प्रिय मित्रों! आपके लिए मेरे मन में अत्यधिक प्रेम और प्रशंसा-भाव है, और मैं आश्वस्त हूँ कि भविष्य के बहाई कार्यकलापों और सेवा के महाद्वीपीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही दायरों में आप निस्संदेह अपनी सर्वप्रमुख भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं और करेंगे, तथापि समय के इस मुकाम पर आकर मुझे यह आवश्यक प्रतीत होता है कि मैं आपसे चेतावनी के दो शब्द कह दूँ। अमेरिका के धर्मानुयायियों की क्षमता, उनकी भावना, उनके आचरण और उनके महान पद को व्यक्तिगत और एक पूर्ण समुदाय दोनों ही रूपों में बारम्बार उनकी योग्यता के अनुरूप जो हार्दिक आदर समर्पित किए गए हैं उसके मद्देनजर यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे किसी भी स्थिति में उन लोगों के स्वभाव और उनके गुणावगुणों से गड्डमड्ड नहीं हो जाएँ जिन लोगों के बीच ईश्वर ने उनका पालन किया है। जिन लोगों ने बहाउल्लाह के धर्म की ध्वजा के नीचे शामिल होने का चयन किया है उनके जीवन और आदर्शों पर पड़ने वाले प्रभाव के नजरिये से यदि हम बहाउल्लाह के धर्म की रूपांतरकारी शक्ति को समुचित मान्यता देना चाहते हों तो जरूरी है कि उस समुदाय तथा उन लोगों के बीच एक स्पष्ट अन्तर दिखना चाहिए और उस अन्तर को दृढ़ता एवं निर्भयतापूर्वक बनाए रखा जाना चाहिए। अन्यथा, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का सर्वोच्च और विशिष्ट प्रकार्य, जो कि और कुछ नहीं बल्कि एक नई मानव-प्रजाति को जन्म देना है, उसे कतई पहचाना नहीं जा सकेगा और वह लोगों की निगाह से पूर्णतया छिपा ही रह जाएगा।

बहाउल्लाह के प्रकटीकरण का सर्वोच्च मिशन

ईश्वर के अवतारों ने, जिनमें बहाउल्लाह भी शामिल हैं, न जाने कितनी बार एक ऐसे समय में उन राष्ट्रों और प्रजातियों के बीच प्रकट होने और उनके बीच अपने संदेश देने का वरण किया जबकि उनका तेजी से पतन हो रहा था अथवा वे नैतिक और आध्यात्मिक पराभव के रसातल में पहले ही समा चुके थे। हजरत मूसा (मोसेज) के नेतृत्व में मिस्र (इजिप्ट) से सामूहिक प्रस्थान करने से पहले, फराओ राजाओं के पतनशील और आततायी शासन के दौर में इजरायल के लोग जिस भयावह दुःख और दुर्दशा की स्थिति में डूबे हुए थे; ईसा मसीह के प्रकटीकरण के समय यहूदी लोगों के धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक जीवन में जो गिरावट आ चुकी थी; जब मुहम्मद साहब उनके बीच अपना संदेश देने के लिए उठ खड़े हुए थे उस समय अरब के कबीले जिस बर्बर निर्दयता, मूर्तिपूजा और अनैतिकता की दुःखद और शर्मनाक स्थितियों में

चिरकाल से जीते आ रहे थे; बहाउल्लाह् के अवतरण के समय फारस के नागरिक और धार्मिक जनजीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार, उलझन, कट्टरता और अत्याचार का वह परिदृश्य जिसका जीवन्त वृतान्त अनेक विद्वानों, राजनायिकों और यात्रियों के विवरणों से प्राप्त होता है -- ये सब बातें कुल मिलाकर इसी अधारभूत और अनिवार्य सत्य को उद्घाटित करती हैं। यह दलील पेश करना कि किसी भी राष्ट्र या प्रजाति की अपनी अंतर्निहित योग्यता, उच्च नैतिक आदर्शों, राजनीतिक दृष्टिकोण और सामाजिक उपलब्धियों के कारण ही उनके बीच इनमें से किसी भी दिव्य प्रकाश का प्रकटीकरण हुआ था ऐतिहासिक तथ्यों को बिल्कुल तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने जैसा होगा और बहाउल्लाह् तथा अब्दुल-बहा दोनों ही द्वारा इतने स्पष्ट और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किए गए अकाट्य विवेचन को एकदम खारिज कर देने के बराबर होगा।

तो फिर ऐसे राष्ट्रों और ऐसी प्रजातियों से सम्बंधित लोगों की चुनौती कितनी बड़ी होगी जिन्होंने इन अवतारों द्वारा किए गए आह्वान का प्रत्युत्तर देते हुए इस निर्विवाद सत्य को बेहिचक स्वीकार और साहसपूर्वक प्रमाणित किया है कि ईश्वर के अवतार ने उनकी प्रजातीय श्रेष्ठता, उनकी राजनीतिक क्षमता या उनके आध्यात्मिक गुणों के कारण नहीं बल्कि उनकी ज्वलंत आवश्यकता, उनकी दयनीय दुर्दशा और घोर विकृतियों के समाधान के लिए उनके बीच प्रकट होने का वरण किया था, और उस राष्ट्र तथा प्रजाति को एक धुरी बनाते हुए उस दिव्य अवतार ने समस्त मानवजाति को जीवन और आचरण के एक उच्चतर और श्रेष्ठतर धरातल पर खड़ा कर दिया। अपनी प्रजाति और अपने राष्ट्र के लोगों को दुःख और पतन की अधम स्थितियों से उबारते हुए और फिर उन्हें अपने प्रकटीकरण की कृपा और उसके शक्तिकारक प्रभावों को अन्य राष्ट्रों और प्रजातियों तक फैलाने में सक्षम बनाते हुए, बिल्कुल ऐसी ही परिस्थितियों के अंतर्गत और ऐसे ही उपायों से ये ईश्वरावतार अनादि काल से अपनी मोक्षकारी शक्ति का परिचय देते आए हैं।

इस बुनियादी सिद्धान्त के आलोक में, यह हमेशा ध्यान में रखा जाना चाहिए कि बाब और बहाउल्लाह् ने यदि फारस में अवतार लेने का निश्चय किया और उस देश को अपने प्रकटीकरण का प्रथम संग्राहक बनाया तो वो इसलिए कि दुनिया के सभी सभ्य राष्ट्रों और जन-समुदायों के बीच वह राष्ट्र और वह जन-समुदाय, जैसाकि अब्दुल-बहा ने बार-बार विवरण दिया है, ऐसे शर्मनाक पतन की स्थिति में था कि उसकी अन्य किसी से तुलना नहीं की जा सकती। इस तथ्य को पर्याप्त रूप से रेखांकित करना कठिन है। बाब और बहाउल्लाह् के प्रकटीकरणों की नवजीवनकारी चेतना को प्रदर्शित करने के लिए इससे ज्यादा पुख्ता कोई प्रमाण नहीं हो सकता कि उन्होंने वास्तव में एक अत्यंत पिछड़े हुए, कायर और विकृत जन-समुदाय को ऐसे शूरवीरों की नस्ल में बदल दिया जो कि समस्त मानवजाति के जीवन में ऐसा ही क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम हो गए। ईश्वर के अवतार ने महान मूल्यों और उपलब्धियों से सम्पन्न होने के कारण ही किसी देश या प्रजाति के मध्य अवतार लिया और इसी कारण वह प्रजाति ऐसे प्रकटीकरण का संग्राहक बनने का अमूल्य लाभ प्राप्त कर सकी, यह मानकर चलना अविश्वास से भरे विश्व की निगाहों में उस दिव्य संदेश की महत्ता को कम करने और उसकी सर्वशक्तिमान सत्ता की स्व-पूर्णता से लोगों का

ध्यान हटाने के बराबर होगा। 'नबील्स नैरेटिव' (नबील के विवरण) के पृष्ठों में शहीदों के जीवन और कर्मों को अमर बनाने वाली उनकी शूर-वीरता तथा उन्हें निन्दा और यातना का शिकार बनाने वाले लोगों के पतन और कायरता के बीच जिस घोर अन्तर का वर्णन किया गया है वह अपने आप में उस अवतार के सन्देश की सत्यता का सबसे प्रभावशाली प्रमाण है जिसने अपने अनुयायियों के हृदयों में ऐसी चेतना का संचार किया था। अतः उस प्रजाति के किसी भी अनुयायी की यह मान्यता कि उनके देश की उत्कृष्टता और उनके लोगों की अंतर्निहित अच्छाइयाँ ही वे बुनियादी कारण थे जिनसे वे बाब और बहाउल्लाह के प्रकटीकरणों के प्राथमिक संग्राहक के रूप में चुने गए, उस 'विवरण' में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए गए प्रमाण के समक्ष एक थोथी दलील ही साबित होगी।

कुछ हद तक यह सिद्धान्त अनिवार्यतः उस देश पर भी अवश्य ही लागू होता है जिसने बहाउल्लाह की विश्व-व्यवस्था के 'पालने' के रूप में माने जाने के अपने अधिकार को न्यायोचित सिद्ध किया है। ऐसा महान कार्य, ऐसी अच्छी भूमिका उन अमर आत्माओं द्वारा निभाई गई भूमिका से कदापि कमतर नहीं मानी जा सकती जो अपनी उच्च कोटि की त्याग-भावना और अपने अनुपम कर्मों के माध्यम से स्वयं एक धर्म के जन्म के लिए उत्तरदायी रहे हैं। अतः जो लोग एक विश्व-सभ्यता - जिसका जन्म प्रत्यक्षतः उनके धर्म से ही हुआ है - के सृजन में इतनी प्रमुखता से भागीदारी करने जा रहे हैं उन्हें एक पल के लिए भी यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि बहाउल्लाह ने किसी रहस्यमय कारण अथवा उनकी अंतर्निहित उत्कृष्टता या किसी विशेष सद्‌गुण के कारण ही उनके देश और उनके लोगों को ऐसी महान और अमर विशिष्टता के लिए चुना है। अन्य स्पष्ट एवं महान विशेषताओं तथा उपलब्धियों के बावजूद, साफतौर पर उस देश और जन-समुदाय में जड़ जमाए बैठी बुराइयों, चरम भौतिकवाद से दुर्भाग्यवश उनके जकड़े होने के कारण ही उनके धर्म के प्रणेता और उसकी संविदा के केन्द्र ने उन्हें अपने लेखों में संकल्पित नई विश्व-व्यवस्था के ध्वज-वाहक के रूप में चयन किया है। घोर भौतिकवाद में निमग्न, अत्यंत दुर्घर्ष और दीर्घकालिक नस्लीय पूर्वाग्रह में डूबे हुए, और अपने राजनीतिक भ्रष्टाचार, स्वच्छंदता और शिथिल नैतिक आदर्शों के लिए कुख्यात लोगों के बीच से ऐसे स्त्री-पुरुषों को खड़ा करना जो समय गुजरने के साथ आत्मत्याग, नैतिक दृढ़ता, पवित्रता, भेदभाव-रहित बन्धुता, अनुशासन की पावन भावना और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि जैसे आवश्यक सद्‌गुणों के जीवन्त उदाहरण बन जाएँगे ताकि वे उस विश्व-व्यवस्था और विश्व-सभ्यता को साकार करने के कार्य में अपनी महती भूमिका निभा सकें जिसके लिए उनका देश ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति तृषित है - यही वह उपाय है जिसके जरिये बहाउल्लाह आज की इस असावधान पीढ़ी को अपनी सर्वशक्तिमान सत्ता का दिग्दर्शन करा सकते हैं। सर्वप्रथम तो विश्व न्याय मन्दिर रूपी भवन की संरचना के सर्वाधिक शक्तिशाली स्तम्भों और उसके बाद वह विश्व न्याय मन्दिर जिस नई विश्व-व्यवस्था का अग्रवाहक और नाभिकीय केन्द्र होगा उसके चैम्पियन-निर्माता के रूप में, उनका कर्त्तव्य और उन्हें प्राप्त लाभ यह होगा कि वे इस दिव्य न्याय और व्यवस्था के दुहरे और अति वांछित सिद्धान्तों को हृदयंगम

करें, उन्हें दर्शाएँ और उन्हें लागू करें - वे सिद्धान्त जो समाज को निरन्तर बदनुमा करते राजनैतिक भ्रष्टाचार और नैतिक पतन के परिदृश्य की तुलना में बिल्कुल ही अलग और विशिष्ट हैं।

परन्तु इस प्रकार के परिदृश्य चाहे कितने भी अरुचिकर और निराशाजनक क्यों न हों, हमें उच्च विवेकशीलता, तरुणाई, असीम क्रियाशीलता और उद्यमिता की उन विशेषताओं और महान गुणों को तनिक भी नहीं भूलना चाहिए जिन्हें इस समग्र राष्ट्र द्वारा इतने बेहतरीन ढंग से झलकाया गया है और जो यहाँ के बहाइयों के समुदाय के दायरे में भी निरन्तर बढ़ते हुए रूप से अपनी झलक दिखा रहे हैं। ऊपर जिन बुराइयों की चर्चा की गई है उन्हें दूर करने के साथ-साथ, बहुत हद तक ये सद्गुण और विशेषताएँ ही वे तत्व हैं जिनपर बहाउल्लाह के धर्म के सुनहले युग की ओर ले जाने की दिशा में देश की भावी भूमिका के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार करने में उस समुदाय की योग्यता निर्भर करेगी।

महान उत्तरदायित्व

अतः, अमेरिका के धर्मानुयायियों की वर्तमान पीढ़ी के आध्यात्मिक और प्रशासनिक विकास के इस आरम्भिक चरण में उनके कंधों पर पड़ा दायित्व कितना महान और कितना अद्भुत है - अपनी पूरी ताकत से उन खामियों, उन आदतों और प्रवृत्तियों को निकाल फेंकने का दायित्व जो उन्हें अपने ही देश से विरासत में मिली है, और फिर धैर्य तथा प्रार्थनामय भाव के साथ उन खास गुणों और विषेशताओ को विकसित करने का दायित्व जो कि उनके धर्म के महान मुक्तिदायक कार्य में उनकी प्रभावी सहभागिता के लिए अपरिहार्य है! अपने छोटे-से समुदाय और उसके सीमित प्रभाव-क्षेत्र के मद्देनजर, अपने देश के विशाल जन-समुदाय पर कोई उल्लेखनीय असर डालने में सक्षम न हो पाने के कारण उन्हें चाहिए कि वर्तमान समय में वे अपना पूरा ध्यान अपने आप पर केन्द्रित करें, अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर, अपनी निजी खामियों और कमजोरियों पर और हमेशा इस बात का ख्याल रखें कि उनका हर गहन प्रयास उन्हें आने वाले उस समय के लिए बेहतर रूप से तैयार करेगा जबकि उनका आह्वान इस बात के लिए किया जाएगा कि अब वे अपने देशवासी बन्धुओं के बीच से और उनके दिलों से भी उन बुराइयों को उखाड़ फेंकें। उन्हें इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि अपने देशवासियों की भावी बहाई पीढ़ियों के लिए, उनके अग्रनायक के रूप में, वे जिस बहाई विश्व-व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयासरत हैं, उनका पोषण तब तक नहीं हो सकता है जब तक कि वे जिस जन-समुदाय से सम्बन्धित हैं उसे उसकी तमाम बुराइयों - चाहे वे सामाजिक हों या राजनीतिक - से मुक्त न कर दिया जाए जिससे वे इस समय इतनी बुरी तरह ग्रस्त हैं।

इस समुदाय की अत्यंत प्रबल आवश्यकताओं पर दृष्टिपात करते हुए, यह आकलन करने का प्रयास करते हुए कि वे कौन-सी गंभीर त्रुटियाँ हैं जो इस समुदाय द्वारा अपने दायित्व के निर्वहन में बाधक सिद्ध हो रही हैं और उस वृहत्तर दायित्व को हमेशा ध्यान में रखते हुए जिसे भविष्य में इस समुदाय को सँभालना ही होगा, मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि अमेरिकी धर्मानुयायियों के

समस्त समुदाय को - चाहे वे वयस्क हों या युवा, श्वेत या अश्वेत, शिक्षक या प्रशासक, दिग्गज या नवागत - यह बात विशेष बल देकर बता दूँ और इस विषय की ओर उनका ध्यान आकर्षित करूँ जो कि मेरे दृढ़ विश्वास के अनुसार उन दायित्वों की सफलता के लिए अत्यावश्यक गुण हैं जिन पर उन्हें आज अपना अटूट ध्यान देने की जरूरत है। बाहरी संसाधनों की रूप-रेखा तय करने और प्रशासनिक एजेन्सियों को पूर्णता प्रदान करने के कार्य का निस्संदेह अत्यधिक महत्व है जिसका उपयोग वे सात वर्षीय योजना के अंतर्गत अपने दुहरे उत्तरदायित्व के निर्वहन के लिए कर सकते हैं; वे जिन अभियानों को प्रारम्भ कर रहे हैं, जिन योजनाओं और प्रायोजनों का निरूपण कर रहे हैं, शिक्षण एवं मन्दिर निर्माण कार्य को प्रभावी रूप से सम्पादित करने के लिए वे जो कोष एकत्रित कर रहे हैं, ये सारे काम हालाँकि बहुत जरूरी और बहुत महत्व के हैं, परन्तु फिर भी उनके अपने व्यक्तिगत और आंतरिक जीवन से सम्बन्धित अपरिहार्य आध्यात्मिक तत्व जो कि उनके मानवीय और सामाजिक सम्बन्धों के ताने-बाने से जुड़े हुए हैं, वे भी कम अत्यावश्यक और त्वरित महत्व के नहीं हैं। ये कार्य उनसे स्थिर और गहन परख, सतत् आत्म-निरीक्षण और आत्म-अन्वेषण की माँग करते हैं ताकि उनकी मूल्यवत्ता में कमी न आए अथवा उनका अनिवार्य महत्व छुप न जाए या उन्हें भुला न दिया जाए।

आवश्यक आध्यात्मिक गुण

सफलता की इन आवश्यक आध्यात्मिक शर्तों में, जो कि उस आधार की रचना करती हैं जिनपर अन्ततः सभी शिक्षण योजनाओं, मन्दिर प्रायोजनों और आर्थिक योजनाओं का दारोमदार निर्भर है, सबसे प्रमुख और अनिवार्य शर्त निम्नांकित है जिस पर अमेरिका का बहाई समुदाय विचार करे तो अच्छा रहेगा। इन आधारभूत शर्तों को जिस हद तक पूरा किया जाएगा, और अमेरिकी बहाई समुदाय के सदस्य जिस तरीके से उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन, प्रशासनिक कार्यकलापों और सामाजिक सम्बन्धों में फलीभूत करेंगे, सर्वकृपालु स्वामी की अनगिनत कृपाएँ भी अवश्य ही उसी अनुपात पर निर्भर करेंगी। ये शर्तें और कुछ नहीं बल्कि उनके सामाजिक और प्रशासनिक कार्यकलापों में नैतिक दृढ़ता की उच्च भावना दर्शाना है, अपने व्यक्तिगत जीवन में सम्पूर्ण पवित्रता तथा विभिन्न प्रजातियों, वर्गों, मान्यताओं और वर्णों के जनसमूहों के साथ अपने व्यवहार में पूर्वाग्रह से पूर्ण मुक्त होने की झलक दिखाना।

इनमें से पहली बात का सम्बन्ध उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों से है, हालाँकि यह बात केवल उन्हीं के लिए नहीं है। चाहे वे स्थानीय प्रतिनिधि हों या क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय, वे बहाउल्लाह के धर्म की नवोदित संस्थाओं के सदस्यों और संरक्षकों की हैसियत से विश्व न्याय मन्दिर की अपराजेय आधारशिला रखने में मुख्य जिम्मेवारी निभा रहे हैं - उस संस्था की जिसके नाम से ही स्पष्ट है कि वह उस दिव्य न्याय की व्याख्याकार और संरक्षक होगी जिसके माध्यम से ही इस विचित्र रूप से अराजक संसार में न्याय-व्यवस्था का शासन स्थापित और संरक्षित हो सकेगा। दूसरी बात का

सम्बन्ध मुख्य और प्रत्यक्ष रूप से बहाई युवाओं से है जो कि बहाई सामुदायिक जीवन की ऊर्जस्विता, पवित्रता और उसकी प्रेरक शक्ति में अपना निर्णायक योगदान दे सकते हैं, और जिन पर इस समुदाय की भावी नियति और ईश्वर द्वारा प्रदत्त उसकी क्षमताओं का पूर्ण प्राकट्य निर्भर करेगा। तीसरी बात यह होनी चाहिए कि बहाई समुदाय के सभी सदस्यों का - चाहे वे किसी भी आयु, ओहदे, अनुभव के स्तर, वर्ग या वर्ण के हों - बिना किसी अपवाद के इन सबका त्वरित और सार्वजनिक सरोकार यह हो कि वे इस कार्य में निहित चुनौतीपूर्ण अभिप्रायों का सामना करें और इस कार्य में कोई चाहे कितना भी अग्रणी क्यों न हो गया हो, वह यह दावा नहीं कर सकता कि उसने अंतर्निहित जटिल दायित्वों को पूरा कर लिया है।

नैतिक दृढ़ता, अविचल न्याय की चिरस्थायी भावना जो कि वर्तमान राजनीतिक जीवन-शैली में स्पष्ट रूप से प्रकट भ्रष्टाचार के अनैतिकतापूर्ण प्रभावों से कदापि ढँक न जाए; एक पवित्र और पावन जीवन जो उन कुप्रवृत्तियों, पापों, झूठे आदर्शों से बेदाग हो जिन्हें अंतर्निहित शिथिल नैतिक मानदंडों द्वारा बर्दाश्त किया जाता है, पोषित किया जाता और आगे जारी रखा जाता है; बन्धुता की भावना जो कि पहले ही से दुर्बल हो चुके समाज के अंग-प्रत्यंग को खोखला कर देने वाले प्रजातीय पूर्वाग्रह के घातक विकास से मुक्त हो - ये ही वे आदर्श हैं जिन्हें आगे बढ़ाने के लिए, अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन दोनों ही में अपने गहन प्रयासों के माध्यम से, अमेरिकी बहाइयों को अभी से जुट जाना चाहिए, वे आदर्श जो कि वे प्रमुख प्रेरक शक्तियाँ हैं जिनसे उनकी संस्थाओं, योजनाओं और उपक्रमों के विकास की गति में प्रभावी तेजी आ सकेगी, जिनसे उनके प्रभुधर्म की प्रतिष्ठा और अखंडता की रक्षा हो सकेगी और भविष्य में उसके सामने आ सकने वाली किसी भी बाधा पर विजय प्राप्त की जा सकेगी।

नैतिक दृढ़ता, जिसके अंतर्गत न्याय, समानता, सत्यता, ईमानदारी, निष्पक्ष विचार, भरोसेमंदी, और विश्वसनीयता जैसे गुण अंतर्निहित हैं, बहाई सामुदायिक जीवन के हर पक्ष की विशिष्टता के रूप में झलकनी चाहिए। स्वयं बहाउल्लाह ने घोषित किया है कि *“आज के युग में, ईश्वर के सखा उस ड़ली की तरह हैं जो दुनिया के सभी लोगों का खमीरीकरण कर दें। अवश्य ही उन्हें ऐसी विश्वसनीयता, ऐसी सत्यता और सतत परिश्रम की भावना, ऐसे कर्म और चरित्र की झलक दिखानी चाहिए कि समस्त मानवजाति उनके उदाहरण से लाभान्वित हो सके।”* एक अन्य जगह पर उन्होंने लिखा है: *“मैं उसकी कसम खाता हूँ जो है परम महान सागर! ऐसी आत्माएँ जो पावन और निष्पाप हैं, उनकी हर साँस में दूरगामी क्षमताएँ निहित हैं। ये क्षमताएँ इतनी महान हैं उनका असर सभी रचित वस्तुओं पर पड़ता है।”* इसके बाद भी, एक अन्य अनुच्छेद में उन्होंने ये शब्द कहे हैं: *”आज के युग में ईश्वर का सच्चा सेवक वह है जिसे यदि सोने-चाँदी की नगरियों से भी गुजरना पड़े तो वह उनकी ओर एक दृष्टि भी नहीं डालेगा और जिसका हृदय इस संसार में दिख*

सकने वाली हर वस्तु से पवित्र और बेदाग बना रहेगा, चाहे वे सांसारिक वस्तुएँ हों या खजाने। सत्य के सूर्य की सौगन्ध! ऐसे व्यक्ति की हर साँस अपार शक्ति से संपन्न है और उसके शब्द आकर्षण के बल से सम्बलित हैं।" इससे भी अधिक जोर देकर बहाउल्लाह ने आगे प्रकट किया है: *"सौगन्ध उसकी जो पावनता के दिवास्रोत के ऊपर जगमगाता है! यदि इस पूरी दुनिया को सोने और चाँदी में बदल दिया जाता तो भी ऐसा व्यक्ति जिसके बारे में यह कहा जा सकता हो कि उसने वास्तव में निष्ठा और निश्चयात्मकता के स्वर्ग की ऊँचाइयाँ छू ली हैं, उसे किसी मूल्य का भी नहीं समझेगा, उसे ग्रहण करने और उस पर हाथ डालने की तो बात ही दूर है ....जो लोग ईश्वर के वितान तले निवास करते हैं और अनन्त गरिमा के आसन पर विराजमान हैं, यदि वे भूख से मरते भी रहें तो भी किसी के आगे हाथ फैलाने और अनैतिक तरीके से अपने पड़ोसी की सम्पत्ति हड़पने से इन्कार कर देंगे, चाहे वह कितना भी नीच और तुच्छ व्यक्ति क्यों न हो। स्वयं को प्रकट करने के पीछे एकमेव सत्य ईश्वर का उद्देश्य है समस्त मानवजाति को सच्चे और निष्कपट होने का आह्वान सुनाना, पवित्रता और विश्वासपात्रता, त्याग और ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण भावना, धैर्य और दयालुता, विवेकशीलता और सच्चरित्रता की ओर उन्मुख करना। उसका उद्देश्य है प्रत्येक मनुष्य को पावन चरित्र से सम्पन्न करना और उसे शुभ तथा पवित्र कर्मों के आभूषण से सुसज्जित करना।"* उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा है: *"सावधान रहो कि हमारा पावन परिधान कहीं तुम्हारे अनैतिक कर्मों के कीचड़ से कलुषित न हो जाए या उसपर किसी घृणा और आचरण की धूल न पड़ जाए।"* वे यह उपदेश देते हैं कि *"हे बहा के लोगों! सत्य ही यह वह आदेश है जो इस 'प्रवंचित' ने तुम्हें दिया है और जो तुम सबके लिए उसकी अबाधित इच्छा की पहली पसन्द है।"* उन्होंने यह समझाया है कि *"शुभ चरित्र वस्तुतः ईश्वर की ओर से मनुष्य को प्रदत्त सर्वोत्तम आवरण है। इससे वह अपने प्रियजनों की कर्णपुटियों को सुसज्जित करता है। मेरे जीवन की सौगन्ध! शुभ चरित्र का प्रकाश सूर्य की रोशनी और उसकी प्रभा से भी बढ़कर है।"* उन्होंने पुनः लिखा है: *"सदाचार का एक कर्म ऐसी क्षमता से सम्पन्न है कि वह एक धूल को भी इतना ऊपर उठा सकता है कि वह स्वर्गों के स्वर्ग को भी पार कर जाए। यह सभी आवरणों को छिन्न-भिन्न कर सकता है, और इसमें अपनी समाप्त तथा ओझल हो चुकी ऊर्जा को पुनः पाने की शक्ति है .....हे ईश्वर के जनो! पवित्र बनो, सदाचारी बनो, ...सुनो! हे ईश्वर के लोगो! वह जो कि 'अनन्त सत्य' है धरती पर उसकी विजय सुनिश्चित करने वाले सैन्य-समूहों और सहायकों को पवित्र पुस्तकों और धर्मग्रंथों के माध्यम से भेजा जा चुका है, और वे सूर्य की तरह स्पष्ट और प्रकट हैं। वे सैन्य-समूह हैं ऐसे सदाचारपूर्ण कर्म, आचरण और चरित्र जो उस परमात्मा की दृष्टि में स्वीकार्य हों। आज के युग में जो कोई भी हमारे धर्म की मदद के लिए उठ खड़ा होगा और अपनी सहायता लिए प्रशंसनीय चरित्र और सदाचार की सेनाओं का आह्वान करेगा, निस्संदेह उसके कार्य का प्रभाव पूरे विश्व में संचारित होगा।"* उनका एक और कथन है: *"संसार का कल्याण शुभ और पवित्र कर्मों*

के माध्यम से ही हो सकता है, प्रशंसनीय और नेक आचरण से।'' वे लोगों को सलाह देते हैं कि *''स्वयं अपने और दूसरों के प्रति निष्पक्ष बनो ताकि हमारे निष्ठावान सेवकों के बीच तुम्हारे कर्मों के माध्यम से न्याय के प्रमाण प्रकट हो सकें।''* उन्होंने यह भी लिखा है कि ''*निष्पक्षता सभी मानवीय सद्‌गुणों में सबसे आधारभूत गुण है। सभी वस्तुओं का मूल्यांकन अनिवार्यतः इसी पर निर्भर है।''* और पुनः, *''अपने न्याय में निष्पक्षता का दामन थाम, हे विवेकपूर्ण हृदय के लोगों! जो कोई भी अपने न्याय-निर्णय में गैर-निष्पक्ष होता है वह उस विशेषता से वंचित है जो कि मनुष्य के पद को विशिष्टता प्रदान करती है।''* वे लोगों को आगे भी सावधान करते हैं: *''हे लोगों! अपनी वाणी को सत्यवादिता के विभूषण से विभूषित कर और अपनी आत्मा को ईमानदारी के अलंकरण से सजा। सावधान रहो, ऐ लोगो! कि तुम एक-दूसरे के साथ धोखे का आचरण न करो। ईश्वर के जीवों के बीच तुम ईश्वर के न्यासी बनकर रहो और उसके लोगों के बीच उसकी उदारता के प्रतीक के रूप में।''* बहाउल्लाह की एक और सलाह है: *''तुम्हारी आँख पवित्र हो, तुम्हारा हाथ वफादार, तुम्हारी जिह्वा सत्यवादी और तुम्हारा हृदय प्रकाशमय।''* एक अन्य स्थान पर उन्होंने कहा है: *''सत्य की मुखमुद्रा के आभूषण बनो, वफादारी के मस्तक के मुकुट, सदाचार रूपी मन्दिर के स्तम्भ, मानव-शरीर के लिए जीवन की साँस, न्याय के सैन्य-समूहों की ध्वजा, सच्चरित्रता के क्षितिज पर जगमगाते नक्षत्र।'''* उन्होंने आदेशित किया है: *''तुम्हारा आभूषण हो सत्य और सौजन्य। तुम धैर्य और न्याय के परिधान से स्वयं को वंचित न कर लो ताकि तुम्हारे हृदय से सभी रचित वस्तुओं पर पावनता का मधुर सुवास संचारित हो सके। सुनो: हे बहा के लोगों! सावधान कि कहीं तुम उन लोगों के मार्ग पर न चल पड़ो जिनकी कथनी और करनी में भेद होता है। प्रयास करो कि तुम धरती के लोगों के समक्ष ईश्वर के संकेतों को प्रकट करने में सक्षम हो सको और उसकी आज्ञाओं को प्रतिबिम्बित करने में। तुम्हारे कर्म समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शक बन जाएँ क्योंकि ज्यादातर लोग - चाहे वे उच्च हों या निम्न - कहते कुछ और करते कुछ और हैं। वे तुम्हारे कर्म ही हैं जो तुझमें और दूसरों में फर्क दिखा सकते हैं। तुम्हारे कर्मों के माध्यम से ही पूरी धरती पर तुम्हारे प्रकाश की प्रखरता फैल सकती है। धन्य है वह व्यक्ति जो मेरे परामर्श पर ध्यान देता है तथा उसके उपदेशों का पालन करता है जो है सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ।''*

अब्दुल-बहा ने लिखा है: *''हे ईश्वर की सेना! आशीर्वादित सौन्दर्य, न्योछावर हो मेरा जीवन उसके प्रियजनों के लिए - द्वारा निर्धारित संरक्षण और सहायता के माध्यम से तुम्हें इस तरह आचरण करना चाहिए कि अन्य सभी आत्माओं के बीच तुम सूर्य की तरह विशिष्ट और प्रभासित दिख पड़ो। यदि तुझमें से कोई किसी नगर में प्रवेश करे तो उसकी आस्था, निष्ठा और प्रेम-भावना, ईमानदारी और वफादारी, सत्यवादिता और संसार के सभी लोगों के प्रति उसकी स्नेहिल दयालुता के कारण उस नगर के सभी निवासी यह पुकार उठें कि 'निस्संदेह यह व्यक्ति एक बहाई है क्योंकि उसके व्यवहार, उसके तौर-तरीकों, उसकी नैतिकता, उसके स्वभाव और उसकी विशेषताओं से*

बहाई लोगों के गुणों की झलक मिलती है'। जब तक तुम सब इस उच्चता को प्राप्त नहीं कर लेते तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि तुम ईश्वर की संविदा और उसकी इच्छा के प्रति निष्ठावान हो।" इसके अलावा उन्होंने यह भी लिखा है कि *"आज के युग में तुम्हारे लिए सबसे आवश्यक कर्त्तव्य है अपने चरित्र को पावन बनाना, अपने व्यवहार को सही करना और अपने आचरण में सुधार लाना। सर्वदयालु परमात्मा के प्रेमी को चाहिए कि उसके प्राणियों के बीच वह ऐसे चरित्र और आचरण की झलक दिखाए कि उनकी पावनता की सुरभि सम्पूर्ण विश्व में फैल सके और मृतकों में भी जीवन का संचार कर सके, क्योंकि ईश्वर के प्रकटावतार तथा अगोचर परमेश्वर के असीम प्रकाश के अरुणोदय का उद्देश्य है लोगों की आत्माओं को शिक्षित करना एवं हर मनुष्य के चरित्र को शुद्ध बनाना....."*। उन्होंने यह भी कहा है कि *"सत्यवादिता सभी मानवीय गुणों का आधार है। सत्यवादिता के बिना, ईश्वर के सभी लोकों में किसी भी आत्मा की प्रगति और सफलता असम्भव ही है। जब मनुष्य में इस पवित्र सद्गुण की स्थापना हो जाती है तो अन्य दिव्य गुण भी अर्जित हो जाएँगे।"*

जरूरी है कि आचरण की ऐसी दृढ़ता, सतत बढ़ती हुई क्षमता के साथ, बहाई समुदाय के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा लिए गए प्रत्येक निर्णय में झलके - चाहे वे किसी भी क्षमता से काम कर रहे हों। यह दृढ़ता उसके सभी सदस्यों के व्यावसायिक कार्य-व्यवहार में झलकनी चाहिए, उनके घर-परिवार के जीवन में, रोजगार के सभी तौर-तरीकों में, और भविष्य में उनके द्वारा सरकार या जनता को प्रदान की जाने वाली किसी भी सेवा में। इसका उदाहरण या आदर्श अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने वाले सभी बहाइयों में अपने पवित्र अधिकारों और प्रकार्यों का इस्तेमाल करते समय प्रदर्शित होना चाहिए। कोई भी राजनीतिक पद स्वीकार न करने, किसी भी राजनीतिक दल से जुड़े न होने, राजनीतिक विवादों के पचड़े में न पड़ने और किसी भी राजनीतिक संगठन या पुरोहितवादी संस्था का सदस्य न होने इत्यादि संदर्भों में यह दृढ़ता प्रत्येक निष्ठावान बहाई के रवैये में प्रकट होनी चाहिए। यह युवा और वृद्ध सभी लोगों द्वारा अब्दुल-बहा के सम्बोधनों में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किए गए बुनियादी सिद्धान्तों तथा बहाउल्लाह के परम पवित्र ग्रंथ में प्रकटित विधानों के सम्पूर्ण पालन में परिलक्षित होनी चाहिए। इसकी झलक प्रभुधर्म के शत्रुओं से इसकी रक्षा करने वालों की निष्पक्षता से, उसके शत्रुओं में पाए जाने वाले किसी गुण के समुचित मूल्यांकन तथा उसके प्रति किसी भी अनिवार्य कर्त्तव्य के पालन करने की स्थिति में उसके प्रति ईमानदारी बरतने से मिलनी चाहिए। यही चारित्रिक दृढ़ता प्रत्येक बहाई शिक्षक के जीवन, उसके लक्ष्यों और प्रयासों तथा उसकी वाणी के प्रकाशित आभूषण के रूप में होनी चाहिए - चाहे वे अपने गृहक्षेत्र में कार्यरत हों या किसी दूसरे देश में, शिक्षण कार्यबल की अग्रिम कतार में खड़े हों अथवा कम सक्रियता और जिम्मेवारी वाली भूमिका निभा रहे हों। यह प्रत्येक बहाई समुदाय में सांख्यिक रूप से अल्प किन्तु फिर भी गहन रूप से क्रियाशील एवं उत्तरदायी निर्वाचित राष्ट्रीय प्रतिनिधियों की निशानी होनी चाहिए, क्योंकि वे हर बहाई

समुदाय में विश्व न्याय मन्दिर के स्तम्भों में से एक और उसके चुनाव के एकमात्र उपकरण हैं - उस विश्व न्याय मन्दिर के जो कि बहाउल्लाह द्वारा निर्दिष्ट अपनी नाम और उपाधि के अनुरूप उस चारित्रिक उच्चता को संकेतित करता है जिसे क्रियान्वित और संरक्षित करना ही उसका उच्चतम मिशन है।

दिव्य न्याय का यह सिद्धान्त, जिसे विश्व न्याय मन्दिर के अग्रवाहक के रूप में उनकी हैसियत से सभी स्थानीय एवं राष्ट्रीय सभाओं की मुख्यतम विशेषता मानी जानी चाहिए, इतना महान और विलक्षण है कि स्वयं बहाउल्लाह अपनी व्यक्तिगत अभिलाषा और अभिरुचि को इसकी सर्व-बाध्यकारी अपेक्षा और अभिप्राय के समक्ष अवनत करते हैं। उन्होंने इन शब्दों में अपने भाव प्रकट किए हैं: *"ईश्वर मेरा साक्षी है, यदि यह परमात्मा के विधान के प्रतिकूल नहीं होता तो मैं अपने भावी हत्यारे के हाथ चूम लेता और उसे अपनी सांसारिक वस्तुओं का उत्तराधिकार सौंप देता। परन्तु मैं 'ग्रंथ' में अंकित बाध्यकारी विधान से प्रतिबाधित हूँ और मैं स्वयं ही सांसारिक सम्पदाओं से वंचित हूँ।"* उन्होंने बहुत ही स्पष्टता से कहा है कि *"तू यह सत्य जान कि ये जो गहन अन्याय इस संसार पर आ टूटे हैं वे उसे 'महानतम न्याय' के अवतरण के लिए तैयार कर रहे हैं।"* उन्होंने पुनः कहा है: *"उसका पदार्पण उस न्याय के साथ हो चुका है जिससे मानवजाति को विभूषित किया गया है किन्तु फिर भी अधिकांश लोग निद्रा में निमग्न हैं।"* और फिर उन्होंने यह भी कहा है कि *"लोगों का प्रकाश है न्याय, उसे अन्याय और अत्याचार की प्रतिकूल हवाओं से मत बुझाओ। न्याय का उद्देश्य लोगों के बीच एकता को प्रकट करना है।"* उन्होंने घोषणा की है कि *"कोई भी प्रकाश न्याय के प्रकाश के समतुल्य नहीं हो सकता। इस संसार का सुसंगठन और उसकी शांति इसी पर निर्भर है।"* उन्होंने कहा है: *"हे ईश्वर के जनों! वह वस्तु जो इस संसार को प्रशिक्षित करती है वह है न्याय क्योंकि वह पुरस्कार और दंड के दो स्तंभों पर टिका है। ये दोनों ही स्तंभ विश्व के जीवन के स्रोत हैं।"* एक अन्य जगह पर उन्होंने लिखा है: *"न्याय और समदर्शिता लोगों का संरक्षण करने वाले दो अभिभावक हैं। वे अपने इन पावन और शक्तिशाली नामों से सुसज्जित होकर इस संसार की सच्चरित्रता बनाए रखने और लोगों की रक्षा करने आए हैं।"* उन्होंने जोरदार शब्दों में यह चेतावनी दी है: *"हे लोगो! दिव्य न्याय के दिवसों के आगमन की पूर्वकल्पना करके स्वयं को स्पंदित करो, क्योंकि प्रतिज्ञापित घड़ी अब आ गई है। सावधान कि कहीं तुम इसके अभिप्राय को समझने में विफल न हो जाओ और भूल करने वाले लोगों में न गिने जाओ।"* इसी तरह उन्होंने यह भी लिखा है कि *"वह दिन आ रहा है जब निष्ठावान लोग न्याय के सूर्य को गरिमा के दिवास्रोत से पूर्ण प्रभा के साथ जगमगाते देखेंगे।"* उन्होंने खास तौर पर यह टिप्पणी की है: *"मुझे जो ग्लानि झेलनी पड़ी उसने उस गरिमा को उद्घाटित कर दिया है जिससे यह सम्पूर्ण सृष्टि अलंकृत है और मुझे जिन निर्दयताओं का शिकार होना पड़ा उनसे न्याय के दिवानक्षत्र ने स्वयं को प्रकट किया है और लोगों पर अपना प्रकाश बिखेरा है।"* उन्होंने पुनः यह लिखा है कि

"यह विश्व आज एक उथल-पुथल के दौर में है और लोगों के मनो-मस्तिष्क पर घोर असमंजस की स्थिति में निमग्न हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर से हमारी प्रार्थना है कि वह अपने न्याय की गरिमा से कृपापूर्वक उन्हें प्रकाशित करे और उन्हें वह तलाशने में सक्षम बनाए जो सदा-सर्वदा और सभी परिस्थितियों में उनके लिए लाभदायक हो।" और पुनः उनका यह कथन भी है: *"इसमें कदापि कुछ भी संदेह नहीं हो सकता कि यदि न्याय का सूर्य, जिसे अत्याचार के बादलों ने ढँक रखा है, लोगों पर अपनी प्रभा बिखेर पाता तो धरती का स्वरूप बिल्कुल ही बदल जाता।"*

और फिर अब्दुल-बहा कहते हैं: *"ईश्वर का गुणगान हो, बहाउल्लाह के क्षितिज पर न्याय के सूर्य का उदय हुआ है, क्योंकि उनकी पातियों में ऐसे न्याय की आधारशिलाएँ रखी गई हैं जिसकी परिकल्पना सृष्टि के आदिकाल से ही कोई भी मस्तिष्क नहीं कर पाया है।"* उन्होंने आगे लिखा है: *"अस्तित्व का वितान न्याय के स्तंभ पर टिका है, क्षमाशीलता के स्तंभ पर नहीं, और मनुष्य का जीवन न्याय पर आधारित है, क्षमा पर नहीं।"*

अतः इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि बहाई प्रकटीकरण के प्रणेता ने उस 'न्याय मन्दिर' की नामोपाधि को, जो कि उनकी प्रशासनिक संस्थाओं का सिरमौर होने वाला है, क्षमा से नहीं बल्कि न्याय से संयोजित करना पसन्द किया, केवल न्याय को ही अपनी परम महान शांति का एकमात्र और स्थायी आधार बनाया और अपने 'निगूढ़ वचन' में उसे अपनी दृष्टि में '"सर्वाधिक प्रिय वस्तु" होने की घोषणा की। मैं खासतौर पर अमेरिकी धर्मानुयायियों के प्रति अपना यह भाव-प्रवण निवेदन करना चाहता हूँ कि वे इस नैतिक दृढ़ता के अभिप्रायों के बारे में अपने मन में विचार करें और व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों रूपों में अपने हृदय और अपनी आत्मा से इस उच्च आदर्श को अड़िग रूप से धारण करें - एक ऐसे आदर्श को जिसका एक अत्यावश्यक और शक्तिशाली तत्व है न्याय।

जहाँ तक पवित्र और सच्चरित्र जीवन की बात है, इसे बहाई सामुदायिक जीवन के सशक्तिकरण और उसे ऊर्जस्वित करने में अपना समुचित योगदान देने वाले कम आवश्यक कारक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, एक ऐसे कारक के रूप में जिस पर आखिरकार किसी भी बहाई योजना या उपक्रम की सफलता निर्भर करती है। आज के इस युग में जब कि धर्महीनता की ताकतें नैतिकता के तन्तुओं को कमजोर बनाने में जुटी हैं और वे व्यक्तियों के नैतिक आधार को नष्ट कर रही हैं, सच्चरित्रता और पवित्रता के अनिवार्य तत्व पर अमेरिकी धर्मानुयायियों को ज्यादा-से-ज्यादा ध्यान देना चाहिए - अपनी व्यक्तिगत हैसियत से भी और बहाउल्लाह के धर्म के हितों के जिम्मेवार संरक्षक के रूप में भी। ऐसे अनिवार्य कर्त्तव्य के निर्वहन में, जिसका महत्व उनके देश में परिव्याप्त घोर एवं दुर्बलकारी भौतिकतावाद के कारण उत्पन्न विशेष परिस्थितियों के कारण और भी अधिक बढ़ गया है, उन्हें एक महत्वपूर्ण और अग्रणी भूमिका निभानी है। इस चुनौतीपूर्ण घड़ी

में जबकि धर्म की ज्योति बुझती-सी दिख रही है और लोगों पर उसकी पकड़ क्रमशः समाप्त होती जा रही है, उन सबको - चाहे वे स्त्री हों या पुरुष - जरा रुक कर अपना आत्म-परीक्षण करना चाहिए, अपने आचरण को कसौटी पर कस कर देखना चाहिए और दृढ़ इरादे के साथ अपने सामुदायिक जीवन को ऐसी हर नैतिक शिथिलता से मुक्त करने के लिए उठ खड़ा होना चाहिए जिसके लव-लेश मात्र से भी इस पवित्र और मूल्यवान धर्म का नाम बदनाम न हो, या इसकी अखंडता पर बट्टा न पड़े।

उनके अपने समुदाय के सदस्यों के साथ उनके सामाजिक सम्बन्धों में और वृहत्तर विश्व के साथ उनके सम्पर्क दोनों में, सच्चरित्र और पवित्र जीवन सभी बहाइयों के व्यवहार और आचरण का नियंत्रक सिद्धान्त बनाया जाना चाहिए। जो लोग बहाउल्लाह के धर्म के सन्देश का प्रसार करने और इसके अनेक मामलों का प्रशासनिक दायित्व निभाने के स्पृहणीय पद पर काम कर रहे हैं उनके अथक और प्रशंसनीय प्रयास इसी सच्चरित्रता और पावनता से विभूषित होने चाहिए। ये ही गुण अपनी सम्पूर्णता और अंतर्निहित अभिप्रायों के साथ तथा जीवन के प्रत्येक चरण में उन लोगों द्वारा भी अपनाए जाने चाहिए जो प्रभुधर्म में अन्य हैसियतों से अपनी सेवाएँ दे रहे हैं - चाहे वे अपने घरों में हों, या यात्री हों, क्लबों में, सामाजिक दायरों में, मनोरंजन के क्षेत्रों में, स्कूलों में, या विश्वविद्यालयों में... यानी हर जगह। प्रत्येक बहाई समर स्कूल के सामाजिक कार्यकलापों के संचालन में तथा अन्य सभी अवसरों पर जबकि बहाई सामुदायिक जीवन का सुगठन और विकास किया जाता है, इसे विशेष विचार का विषय माना जाना चाहिए। बहाई सामुदायिक जीवन के एक तत्व के रूप में तथा उनके अपने देश के युवाओं के उत्प्रेरण और भावी विकास के एक कारक इन दोनों ही रूपों में इसे बहाई युवाओं के जीवन के ध्येय की एक सतत और घनिष्ठ पहचान बननी चाहिए।

ऐसा सच्चरित्र और पवित्र जीवन, जिसमें सलज्जता, पावन-हृदयता, मर्यादा, औचित्य और मानसिक शुचिता जैसे अभिप्राय निहित हैं, वेश-भूषा, भाषा, मनोरंजन तथा साहित्य एवं कला के क्षेत्र में हर तरह की मर्यादा का समावेश प्रस्तुत करता है। यह मनुष्य की दैहिक लालसाओं और भ्रष्ट इच्छाओं पर नियमित निगरानी रखने की माँग करता है। यह तुच्छ एवं दिग्भ्रमित आनन्द के प्रति अत्यधिक आसक्त निकृष्ट आचरण को त्यागने का आह्वान करता है। यह सभी मादक पेयों, अफीम और ऐसी ही अन्य लत लगने वाली वस्तुओं को बिल्कुल त्याग देने की अपेक्षा करता है। ऐसे सच्चरित्र और पवित्र जीवन में साहित्य और कला के क्षेत्र में अश्लीलता, नग्नतावाद, साहचर्य विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध में वफादारी के अभाव, स्वच्छंदता, तुरन्त परिचित हो जाने और खुलेपन दिखाने की संस्कृति, और यौन अपराधों को निंदनीय समझा जाता है। इसमें पतनशील युग के सिद्धान्तों, पैमानों, रिवाजों और मर्यादाओं के अतिक्रमण के साथ कोई भी समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाता। बल्कि इस तरह का जीवन तो अपने आदर्श की गतिशील शक्ति से उन सिद्धान्तों की विनाशकारी प्रकृति, उन पैमानों की असत्यता, उनके दावों का खोखलापन, उन

रिवाजों की विकृति और उन मर्यादारहित आचरणों के पतित स्वभाव की झलक दिखाने के लिए प्रयासरत होता है।

बहाउल्लाह ने लिखा हैः *"ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! परमेश्वर की दृष्टि में यह संसार, इसकी झूठी गरिमा और इसके मिथ्याभिमान और उनसे प्राप्त होने वाला हर आनन्द इतना तुच्छ है जितना कि धूल और राख, नहीं, बल्कि वह उससे भी निकृष्ट है। काश लोगों के हृदय इसे समझ पाते! हे बहा के लोगों! स्वयं को इस संसार की गंदगियों से और उससे जुड़ी हुई हर विषय-वस्तु से धो डाल। ईश्वर स्वयं मेरा साक्षी है! ये पार्थिव वस्तुएँ तेरे लिये उपयुक्त नहीं हैं। उसे उन्हीं लोगों के लिए त्याग दे जिन्हें उनकी कामना है और अपनी दृष्टि इस परम पावन और ज्योतिर्मय 'दृष्टि' पर केन्द्रित कर।"* अपने अनुयायियों को सलाह देते हुए वे कहते हैं: *"हे मेरे प्रियजनो! मेरे पावन परिधान के कोर को पार्थिव वस्तुओं की धूल और गन्दगी से कलुषित न करो, और अपनी दुष्ट एवं भ्रष्ट लालसाओं के अनुगामी न बनो।"* उन्होंने आगे यह भी कहा है कि *"हे एकमेव सत्य ईश्वर के प्रियजनो! अपनी दुष्ट और भ्रष्ट इच्छाओं के संकीर्ण आरामगाह से आगे बढ़ो, और ईश्वर के साम्राज्य के विस्तीर्ण क्षेत्र में कदम रखो, तथा पावनता एवं अनासक्ति की शस्य-भूमि में निवास करो, ताकि तुम्हारे कर्मों की सुरभि समस्त मानवजाति को परमात्मा की सदाबहार गरिमा के महासिंधु की ओर ले जा सके।"* वे आदेश देते हैं: *"अपने ऊपर से सांसारिक आसक्तियों और मिथ्याभिमानों का भार उतार फेंक। सावधान, तू उनसे दूर रह, क्योंकि वे तुम्हें तुम्हारी ही लालसाओं और लिप्साओं के पीछे भागने को प्रेरित करते हैं और तुम्हें सीधे एवं गरिमामय पथ पर प्रवेश करने से रोक देते हैं।'"* उनका यह भी आदेश है कि *"हर तरह की धूर्तता का परित्याग कर, क्योंकि ऐसी बातों का तुझे उन पवित्र पुस्तकों में निषेध किया गया है जिनका स्पर्श और कोई नहीं कर सकता, सिवाय उनके जिन्हें ईश्वर ने पाप के लव-लेश मात्र से मुक्त, पावन बनाया है और जिनकी गिनती उसने पवित्र आत्माओं में की है।"* उन्होंने लिखित रूप से यह वचन दिया है कि *"अतुलनीय चरित्र-शक्ति से सम्पन्न एक मानव-प्रजाति उठ खड़ी होगी जो अनासक्ति के चरणों से उन सबके ऊपर विचरण करेगी जो स्वर्ग में और इस धरा पर हैं और जो मिट्टी और पानी से सृजित सभी जीवों पर अपनी पवित्रता की बाँहें फैलाएगी।"* उनकी कठोर चेतावनी है कि *"कला और ज्ञान के विद्वान व्याख्याकारों द्वारा जिस सभ्यता की शान बघारी जाती है, यदि उसे मर्यादा की सीमा-रेखाओं को तोड़ने दिया जाएगा तो वह मनुष्य पर घोर पाप लादने वाली साबित होगी। ...वही सभ्यता जो एक सीमा में बँधे रहने से अच्छाइयों का स्रोत रही थी, मर्यादा के अतिशय अतिक्रमण से अपार पातक का स्रोत बन जाएगी।"* उन्होंने समझाया है कि *"ईश्वर ने इस पूरी दुनिया में से अपने लिए अपने सेवकों के हृदयों को चुना है और उनमें से प्रत्येक को अपनी गरिमा के प्राकट्य का आसन बनाया है। अतः, अपने हृदय को हर मैल से मुक्त और स्वच्छ बना ताकि उस पर वे बातें अंकित की जा सकें जिनके लिए उसे रचा गया है। यह, वस्तुतः, ईश्वर की उदार कृपालुता का प्रतीक है।"*

उन्होंने घोषणा की है कि *"कहो: उस व्यक्ति को बहा के लोगों में नहीं गिना जाएगा जो अपनी तुच्छ इच्छाओं के पीछे भागता हो या सांसारिक वस्तुओं में अपना मन रमाता हो। मेरा सच्चा अनुयायी वह है जो विशुद्ध सोने की घाटी में आने पर भी एक बादल की तरह सीधे उसके ऊपर से गुजर जाएगा और न कभी पीछे मुड़कर देखेगा न रुकेगा। ऐसा ही व्यक्ति सचमुच मेरा व्यक्ति है। उच्च लोक के सहचर उसके परिधान से पावनता की सुरभि पा सकेंगे.......। और यदि सर्वाधिक सुन्दरी और रूपवती नारी भी उसके सम्मुख आ जाए तो भी वह अपने हृदय में उसकी सुन्दरता के प्रति रंच मात्र का भी लोभ महसूस नहीं करेगा। ऐसा व्यक्ति सचमुच निर्मल पावनता का मूर्तिमान रूप है। तुम्हारे सर्वशक्तिमान, सर्वकृपालु परमेश्वर के आदेश से 'दिवसाधिक प्राचीन' की लेखनी तुम्हें ऐसा ही निर्देश देती है।"* एक अन्य चेतावनी में वे कहते हैं: *"जो लोग अपनी लालसाओं और भ्रष्ट प्रवृत्तियों का अनुसरण करते हैं, उन्होंने भूल की है और अपने प्रयासों को व्यर्थ गँवाया है। वे वस्तुतः नष्ट हो चुके लोगों में से हैं।"* उन्होंने यह भी लिखा है कि *"बहा के लोगों के योग्य यह है कि वे इस संसार और इसकी वस्तुओं के प्रति मृत हो जाएँ, सभी पार्थिव वस्तुओं से इतने अनासक्त हो जाएँ कि स्वर्ग के अंतरंग सहचर उनके परिधान से पावनता की मनमोहक सुरभि का आस्वाद ग्रहण कर सकें.....। जिन्होंने ईश्वर के धर्म के पावन नाम को मांसल वस्तुओं के अनुगामी बनकर कलुषित किया है वे घोर भूल की अवस्था में हैं!"* उन्होंने खास तौर पर यह चेतावनी दी है कि *"पवित्रता और सच्चरित्रता ईश्वर की सेविकाओं के लिए महानतम आभूषण रही हैं और अभी भी हैं। ईश्वर मेरा साक्षी है! सच्चरित्रता के प्रकाश की प्रभा चेतना के लोकों पर अपनी ज्योति बिखेरती है, और इसकी सुरभि का संचार परम उदात्त स्वर्ग तक होता है।"* उन्होंने पुनः यह कहा है कि *"वस्तुतः, ईश्वर ने सच्चरित्रता को अपनी सेविकाओं के सिरों का मुकुट बनाया है। महान है उस सेविका की पवित्रता जिसने इस परम पद को प्राप्त किया है।"* उन्होंने हमें यह आश्वासन दिया है कि *"हमने वस्तुतः अपनी पुस्तक में उन सबके लिए एक शुभ और उदारतामय पुरस्कार आदेशित किया है जिन्होंने दुष्टता का परित्याग किया है और जो पवित्र तथा सदाचारी जीवन जीते हैं। वह, सत्य ही, महान दाता है, सर्वदयालु है।"* उन्होंने प्रमाणित किया है कि *"हमने सभी संकटों का भार तुझ पर इसलिए डाला है ताकि तू सांसारिक भ्रष्ट वृत्तियों से मुक्त, पावन बन सके और फिर भी तुझपर कोई असर नहीं..... हम, सत्य ही, तुम्हारे कर्मों को देख रहे हैं। यदि हमें उनसे पवित्रता और पावनता के सुमधुर सुवास का भान होगा तो हम निस्संदेह तुम्हें आशीर्वाद देंगे। तब स्वर्ग के अंतरंग सहचरों की जिह्वा से तुम्हारे गुणगान मुखरित होंगे और वे परमात्मा के निकट आ चुके जनों के बीच तुम्हारे नाम का प्रसार करेंगे।"*

अब्दुल-बहा ने लिखा है कि *"परम पवित्र ग्रंथ के पाठ्य के अनुसार, मदिरा-पान का निषेध है, क्योंकि यह घातक रोगों की वाहिका है, यह स्नायु-तंतुओं को शिथिल और मस्तिष्क का विनाश करती है।"* स्वयं बहाउल्लाह ने कहा है कि *"हे ईश्वर की सेविकाओं! मेरे शब्दों की प्याली से*

रहस्यमय मदिरा का पान कर। अतः, उन चीजों का परित्याग कर जो तेरे मस्तिष्क के लिए घृणित है, क्योंकि 'उसकी' पातियों और 'उसके' पवित्र ग्रंथों में तुम्हारे लिए उन वस्तुओं का निषेध किया गया है। सावधान कि कहीं तुम उन वस्तुओं के बदले जिनसे पवित्र-हृदय वाले लोग घृणा करते हैं, उस 'सरिता' का सौदा न कर लेना जो वस्तुतः जीवन है। हे ईश्वर की आराधिका! तू परमात्मा के प्रेम की मदिरा से उन्मत्त बन, उन वस्तुओं से नहीं जो तुम्हारे मन को मृतप्राय बना देती हैं। वस्तुतः, इसका निषेध प्रत्येक अनुयायी के लिए किया गया है, चाहे वे स्त्री हों या पुरुष। इस तरह मेरी आज्ञा का सूर्य मेरी वाणी के क्षितिज पर जगमगाया है, ताकि मुझमें आस्था रखने वाली सेविकाएँ प्रकाशित बन सकें।"

परन्तु यह याद रखा जाना चाहिए कि नैतिक आचरण के ऐसे उच्च मानदंड का सम्बन्ध भूलवश किसी प्रकार के संन्यासवाद अथवा अतिशयतापूर्ण एवं कट्टर 'शुद्धतावाद' से नहीं जोड़ दिया जाना चाहिए। बहाउल्लाह द्वारा प्रतिपादित आदर्श किसी भी परिस्थिति में व्यक्तियों के लिए मान्य अधिकारों अथवा सुविधाओं का निषेध नहीं करता और न ही सर्वप्रेमी सृजनहार द्वारा इस संसार में इतनी प्रचुरता से उपलब्ध कराए गए आनन्दों, सुन्दरताओं और खुशियों से वंचित रहने की शिक्षा देता है। बहाउल्लाह ने स्वयं ही यह आश्वासन दिया है कि *"यदि कोई व्यक्ति स्वयं को धरती के आभूषणों से अलंकृत करना चाहे, इसके परिधानों को धारण करना चाहे और इसके द्वारा प्रदत्त लाभों को ग्रहण करना चाहे तो इससे उसे कोई हानि नहीं होगी, बशर्ते कि वह किसी भी वस्तु को अपने और ईश्वर के बीच बाधक न बनने दे, क्योंकि ईश्वर ने सभी शुभ वस्तुएँ, चाहे वे स्वर्ग में सृजित हों या इस धरती पर, अपने ऐसे सेवकों के लिए रची हैं जो वस्तुतः उसमें विश्वास करते हैं। हे लोगो! ईश्वर ने तुम्हें जिन शुभ वस्तुओं की अनुमति दी है, उन्हें खाओ-पियो, और स्वयं को उसकी विलक्षण कृपाओं से वंचित मत करो। ईश्वर को धन्यवाद दो, उसका गुणगान करो, और ऐसे लोगों में से बनो जो सचमुच आभारी हैं।"*

सबसे चुनौतीपूर्ण विषय

जहाँ तक नस्लीय (प्रजातीय) पूर्वाग्रह का सवाल है, जो कि लगभग एक शताब्दी से अमेरिकी समाज के ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करता आ रहा है और जिसने इसकी सम्पूर्ण सामाजिक संरचना पर ही हमला बोल दिया है, उसे बहाई समुदाय के मौजूदा विकास के चरण में उसके सम्मुख उपस्थित सबसे अपरिहार्य और चुनौतीपूर्ण मसला समझा जाना चाहिए। इस अति महत्वपूर्ण मुद्दे के लिए जिस अथक प्रयास की जरूरत है, इसके लिए जिस त्याग-भावना, सावधानी और सजगता की दरकार है, जिस नैतिक साहस और दृढ़ता की अपेक्षा है, जिस हिकमत और संवेदना की आवश्यकता है, उसके परिप्रेक्ष्य में यह अनिवार्य लगता है कि अमेरिका के

धर्मानुयायियों को, जो अभी तक संतोषप्रद तरीके से इस समस्या का निराकरण नहीं कर पाए हैं, अत्यंत फुर्ती और महत्व के साथ इसके समाधान में जुट जाना चाहिए। इस कार्य के महत्व को कम करके नहीं आँका जा सकता। चाहे वे श्वेत हों या नीग्रो, उच्चवर्गीय या निम्नवर्गीय, युवा या वृद्ध, प्रभुधर्म को उन्होंने अभी-अभी स्वीकार किया हो या पुराने हों - उन सभी लोगों को जो इस धर्म से एकाकार हैं, अब्दुल-बहा के निर्देशों को पूरा करने, उनकी आशाओं को साकार करने और उनके उदाहरण का अनुसरण करने के सर्वसामान्य कार्य में, अपनी-अपनी शक्ति, अपने-अपने अनुभवों और अवसरों के अनुरूप, भागीदार बनने और अपना सहयोग प्रदान करने के लिए उठ खड़ा होना चाहिए। किसी भी प्रजाति को - चाहे वह श्वेत हो या अश्वेत - यह अधिकार नहीं है और न ही अपनी अंतर्रात्मा से वह इसका दावा कर सकती है, कि उसे इस अनिवार्य कर्त्तव्य को पूरा करने, उन आशाओं को साकार करने अथवा निष्ठापूर्वक उस उदाहरण का अनुगमन करने से छूट मिली हुई है। बहाउल्लाह के इस मुक्तिकारी धर्म के श्वेत एवं अश्वेत दोनों ही प्रकार के समर्थकों को अभी एक लम्बे और कंटकाकीर्ण यात्रा-पथ पर चलना होगा, जो संकटों से आच्छन्न है और जिस पर अभी किसी के कदम नहीं पड़े हैं। उनके द्वारा तय की गई दूरी और उस पथ पर चलने के उनके तौर-तरीके ही बहुत हद तक उन अकल्पनीय प्रभावों को तय करेंगे जो कि अमेरिकी धर्मानुयायियों की आध्यात्मिक विजय और उनके नए-नए प्रारंभ किए गए प्रायोजनों की भौतिक सफलता के लिए अपरिहार्य हैं।

उन्हें अपने बीच निर्भयता और दृढ़ इरादे के साथ, अब्दुल-बहा के उदाहरण और आचरण का ध्यान रखना चाहिए। उन्हें याद रखना चाहिए उनका साहस और सच्चा प्रेम, उनकी सहज और भेदभाव-रहित बन्धुता की भावना, आलोचना के प्रति उनकी घृणा और अधीरता, और साथ ही उनकी बुद्धिमत्ता और हिकमत। उन्हें उन अविस्मरणीय ऐतिहासिक वृतान्तों और अवसरों की याद ताजा करनी चाहिए जब उन्होंने न्याय के प्रति अपनी उत्कटता, दलितों के प्रति अपनी स्वतःस्फूर्त सहानुभूति, मानवजाति के एकता के प्रति अपनी अक्षुण भावना, तथा लोगों के प्रति अपने अपार स्नेह का परिचय दिया था, और उन लोगों के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर की थी जो उनकी इच्छा की अवज्ञा करने का दुःसाहस दिखाते थे, उनके तौर-तरीकों की खिल्ली उड़ाते थे, उनके सिद्धान्तों को चुनौती देते थे या उनके कार्यों को खारिज करने के प्रयास में जुटे रहते थे।

महज इस आधार पर किसी नस्ल या प्रजाति के साथ भेदभाव बरतना कि वह सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई, राजनीतिक रूप से अपरिपक्व, और अल्पसंख्यक है, बहाउल्लाह के धर्म को जीवन्त बनाने वाली चेतना का खुला उल्लंघन है। विभिन्न प्रकार के जन-समुदाय के बीच किसी प्रकार का विभाजन या फूट इस धर्म के उद्देश्य, उसके सिद्धान्तों और आदर्शों की दृष्टि से एक अजनबी-सी बात है। जैसे ही इस समुदाय के सदस्य इस धर्म के प्रणेता के दावों को पूर्णतः पहचान लेते हैं, और इसकी प्रशासनिक व्यवस्था से अपना तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं, और इसकी शिक्षाओं में

निहित नियमों और शिक्षाओं को बेहिचक स्वीकार कर लेते हैं, वैसे ही वर्ग, वर्ण और मान्यताओं से जुड़े सभी विभेद स्वतः मिट जाने चाहिए और किसी भी बहाने, चाहे घटनाओं या लोगों की राय का कितना भी भारी दबाव क्यों न हो, उन विभेदों को कदापि सिर नहीं उठाने देना चाहिए। यदि किसी प्रकार के भेदभाव को बर्दास्त किया ही जाना है तो यह भेदभाव अल्पसंख्यकों के पक्ष में होना चाहिए, न कि उनके खिलाफ - चाहे वह नस्लीय भेदभाव हो या अन्य प्रकार का। दुनिया के उन राष्ट्रों और लोगों के ठीक विपरीत - चाहे वे पूरब के हों या पश्चिम के, लोकतांत्रिक या अधिनायकवादी, साम्यवादी अथवा पूँजीवादी, पुरानी व्यवस्था के हिमायती या नई व्यवस्था के - जो अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले प्रजातीय, धार्मिक, या राजनीतिक अल्पसंख्यकों की उपेक्षा करते हैं, उनका दमन करते हैं अथवा उनके विनाश के लिए तत्पर रहते हैं, बहाउल्लाह की ध्वजा के नीचे एकत्रित हर सुसंगठित समुदाय को चाहिए कि वे अपने दायरे में आने वाले हर अल्पसंख्यक समुदाय को - चाहे वे किसी भी धर्म, नस्ल, वर्ग या देशीयता से सम्बंध रखते हों - पोषित, प्रोत्साहित और संरक्षित करना अपना प्रथम और अपरिहार्य कर्त्तव्य समझें। यह सिद्धान्त इतना महान और महत्वपूर्ण है कि ऐसी परिस्थितियों में जबकि किसी चुनाव में समान संख्या में मतपत्र प्राप्त किए गए हों, अथवा किसी समुदाय के अन्दर जहाँ किसी पद के लिए वांछित योग्यताएँ विभिन्न प्रजातियों, धर्मों या राष्ट्रीयताओं के बीच संतुलित हो रही हों, वहाँ बेहिचक रूप से अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले पक्ष को वरीयता दी जानी चाहिए और वह भी किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि उसे प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए, और समुदाय के हितों को आगे बढ़ाने हेतु उसे अवसर प्रदान करने के लिए। इस सिद्धान्त के आलोक में और बहाई कार्यकलापों में अल्पसंख्यक तत्वों की भागीदारी और उनके द्वारा दायित्व ग्रहण करना अत्यंत वांछित समझकर, प्रत्येक बहाई समुदाय का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह अपने कार्यकलापों का व्यवस्थापन इस तरह से करे कि जहाँ कहीं भी विभिन्न प्रजातीय या अन्य प्रकार के अल्पसंख्यक समुदायों के सदस्य सुयोग्य हों और आवश्यक शर्तों को पूरा करते हों, वहाँ बहाई प्रतिनिधिक संस्थाओं में उन्हें यथासंभव अधिकाधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त होना चाहिए - चाहे वे संस्थाएँ आध्यात्मिक सभाएँ हों, अधिवेशन हों, कॉन्फ्रेंस या समितियाँ हों। ऐसी प्रक्रिया अपनाने और निष्ठापूर्वक उसका पालन करने से इन अल्पसंख्यक और अपर्याप्त प्रतिनिधित्व वाले तत्वों को न केवल प्रोत्साहन प्राप्त होगा बल्कि इससे विश्व को बहाउल्लाह के धर्म की सर्वव्यापी और सार्वप्रतिनिधिक प्रकृति की भी झलक मिलेगी, और यह भी परिलक्षित होगा कि बहाउल्लाह के अनुयायी उन पूर्वाग्रहों की छाया से कोसों दूर हैं जिन्होंने राष्ट्रों के घरेलू मामलों और उनके विदेशी सम्बंधों में गंभीर उपद्रव मचा रखा है।

आज के ऐसे समय में जबकि मानवजाति का ज्यादा-से-ज्यादा वर्ग नस्लीय पूर्वाग्रह के विनाशकारी कोप का शिकार हो रहा है, उससे मुक्त होना अमेरिकी धर्मानुयायियों का मुख्य

विषय होना चाहिए, चाहे वे किसी भी राज्य में रह रहे हों, उनका दायरा चाहे जो भी हो, उनकी उम्र, परम्पराएँ, अभिरुचियाँ और आदतें चाहे जैसी भी हों। यह विषय उनके जीवन और कार्यकलाप के हर पहलू में सतत् रूप से झलकना चाहिए - बहाई समुदाय के भीतर भी और बाहर भी, औपचारिक और अनौपचारिक दोनों रूपों में, व्यक्तिगत रूप से भी और सुघटित समूहों, समितियों और आध्यात्मिक सभाओं के रूप में उनकी सामूहिक हैसियत से भी। उनके घरों, कार्यस्थलों, स्कूलों और कॉलेजों में, सामाजिक पार्टियों और मनोरंजन गृहों में, बहाई बैठकों, कॉन्फ्रेंसों, अधिवेशनों, समर स्कूलों और सभाओं में प्रस्तुत विभिन्न दैनिक अवसरों के माध्यम से सुविचारित रूप से इस भावना का विकास किया जाना चाहिए, चाहे वे अवसर कितने भी मामूली किस्म के क्यों न हों। यह उस भव्य संस्था की प्रमुख और सर्वोच्च नीति बन जानी चाहिए जिसे राष्ट्रीय प्रतिनिधियों की हैसियत से, समुदाय के मामलों के निर्देशक और संयोजक के रूप में अपने को एक आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। उस संस्था को यह भी चाहिए कि वह इस अति महत्वपूर्ण सिद्धान्त के कार्यान्वयन को उन लोगों के लिए सुगम बनाए जिनके हितों का वह संरक्षण और प्रतिनिधित्व करती है।

बहाउल्लाह ने लिखा हैः *"हे विवेकीजनो! वस्तुतः, ईश्वर की इच्छा के स्वर्ग से अवतरित शब्द दुनिया की एकता और समता के स्रोत हैं। प्रजातीय विभेदों की ओर से अपनी आँखें मूँद ले और एकता के प्रकाश के साथ सबका स्वागत कर।"* वे घोषणा करते हैं कि *".....सभी राष्ट्र एक धर्म के सूत्र में बँध जाएँ और सभी मनुष्य एक-दूसरे के बन्धु बन जाये, कि मनुष्य-पुत्रों के बीच स्नेह और एकता का बन्धन मजबूत हो, कि धार्मिक विविधता का लोप हो जाए और प्रजातियों का भेदभाव निरस्त किया जाए।"* अब्दुल-बहा के शब्दों में: *"बहाउल्लाह ने कहा है कि मानवजाति की विभिन्न प्रजातियाँ एक समग्र विश्व को अखंड समरसता और रंगों की सुन्दरता प्रदान करती हैं। अतः मानवजाति की इस फुलवारी में सब उसी तरह हेलमेल से रहें जैसे विभिन्न फूल एक-दूसरे के आस-पास बिना किसी टकराव या मतभेद के खिलते और हिलमिल कर रहते हैं।'"* अब्दुल-बहा ने आगे यह भी कहा है कि *"एकबार बहाउल्लाह ने काले लोगों की तुलना आँख की काली पुतली से की थी जो चारों ओर सफेद घेरे से घिरी रहती है। उस काली पुतली में ही सामने रखी वस्तुओं की प्रतिच्छाया दिखती है और उसी से चेतना का प्रकाश झलकता है।"*

स्वयं अब्दुल-बहा ने यह घोषणा की है कि *"ईश्वर काले और गोरे के बीच कोई भेदभाव नहीं करता। यदि उनके हृदय पवित्र हैं तो ईश्वर को दोनों ही स्वीकार्य हैं। ईश्वर रंग या प्रजाति के आधार पर लोगों की पहचान नहीं करता। उसे तो सारे रंग स्वीकार हैं, चाहे वे गोरे हों, काले हों, या पीले। चूँकि हर किसी की रचना ईश्वर के प्रतिरूप के अनुसार की गई है, अतः हमें यह महसूस करना चाहिए कि हर कोई दिव्य सम्भावनाओं से सम्पन्न है।"* वे कहते हैं: *"सभी मनुष्य समान हैं।*

ईश्वर के न्याय और उसकी समदर्शिता के साम्राज्य में किसी भी आत्मा को प्राथमिकता या वरीयता प्राप्त नहीं है।'" वे कहते हैं कि *"इस प्रकार के अन्तर ईश्वर ने नहीं बनाए हैं, ये अन्तर तो स्वयं मनुष्य ने उत्पन्न किए हैं। चूँकि ये अन्तर ईश्वर की योजना और उसके उद्देश्य के विरुद्ध हैं इसलिए वे मिथ्या और काल्पनिक हैं।"* आगे उन्होंने यह भी कहा है कि *"ईश्वर के आकलन में कोई भी वर्ण-भेद नहीं है। उसकी सेवा के पथ पर सभी एक रंग के, सब एक समान सुन्दर हैं। रंग का कोई महत्व नहीं है। महत्वपूर्ण है हृदय। यदि हृदय भीतर पवित्र और उज्ज्वल है तो बाहर का रंग-रूप क्या है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ईश्वर रंग और वर्ण के भेदों पर नजर नहीं रखता। वह तो केवल हृदय देखता है। ईश्वर की उपस्थिति में तो वही वरीय है जिसके गुण और आचार प्रशंसनीय हों। जो ईश्वरीय साम्राज्य के प्रति समर्पित है वही सबसे प्यारा है। उत्पत्ति और सृष्टि के साम्राज्य में रंग का सवाल महत्वहीन है।"* वे समझाते हैं कि *"सम्पूर्ण जीव-जगत में हम रंग के आधार पर जीवों को पृथक-पृथक नहीं देखते। वे केवल एक जीव-प्रजाति और अपनी नस्ल की एकता को पहचानते हैं। तो जब हम अपने से निम्न बुद्धि-स्तर और तर्कशक्ति वाले जीवों के साम्राज्य में रंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं देखते तो फिर मानवजाति में उसके औचित्य को भला कैसे सही ठहराया जा सकता है, खासकर तब जबकि हमें पता है कि सबका जन्म एक ही स्रोत से हुआ है और सब एक ही कुटुम्ब के सदस्य हैं? उद्गम और सृष्टि के उद्देश्य की दृष्टि से मानवजाति एक है। रंग और नस्ल सम्बंधी भेद तो बाद में उपजे हैं।"* वे आगे यह भी समझाते हैं कि *"मनुष्य उत्कृष्ट तर्कशक्ति और बोध से सम्पन्न है। वह दिव्य विभूतियों का साक्षात स्वरूप है। क्या प्रजातीयता का विचार उसके साम्राज्य में एकता के रचनात्मक उद्देश्य पर हावी हो सकता है या उस उद्देश्य को ओझल कर सकता है?"* एक महत्वपूर्ण बात यह कहते हैं कि *"मानवजाति की एकता और उसके संगठित स्वरूप को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रश्न है श्वेत एवं अश्वेत प्रजातियों की आपसी बन्धुता और समानता। इन दोनों ही प्रजातियों के बीच सहमति और अन्तर के कतिपय मुद्दे मौजूद हैं जिन्हें समुचित आपसी समझदारी से समझा जाना चाहिए। सम्पर्क के कई बिंदु हैं ....इस देश यानी संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रति देशभक्ति की भावना दोनों ही प्रजातियों में समान रूप से है, सबको एक नागरिक के रूप में समान अधिकार प्राप्त हैं, वे एक ही भाषा बोलते हैं, उन्हें एक ही समान सभ्यता का वरदान हासिल है, और वे एक ही धर्म की शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं। वास्तव में, दोनों ही प्रजातियों के बीच साझेदारी और सहमति के अनेक बिंदु मौजूद हैं, जबकि अन्तर सिर्फ एक बात का है - रंग का। तो क्या सभी अन्तरों में यह सबसे मामूली किस्म का अन्तर इतना प्रबल हो जाना चाहिए कि वह व्यक्तियों और प्रजातियों के रूप में तुम्हें अलग-अलग कर दे?"* वे जोर देकर कहते हैं: *"रूप और रंग की यह विविधता जो सभी सृजित वस्तुओं में पाई जाती है, ईश्वर के विवेक द्वारा रचित हैं और उसमें एक दिव्य उद्देश्य निहित है।"* और वे यह कहते हैं कि *"मानव परिवार में दिखाई पड़ने वाली विविधता एकता और समरसता का कारण बनना चाहिए, ठीक ऐसे ही जैसे संगीत में जहाँ अलग-अलग धुनें मिलकर*

एक परिपूर्ण राग की रचना करती हैं।" उनकी सलाह है : "*यदि तुम अपने से भिन्न रंग और प्रजाति के लोगों से मिलो तो उनमें अविश्वास मत करो और अपनी पारम्परिकता के खोल में दुबक मत जाओ, बल्कि उनके प्रति अपनी खुशी और दयालुता दर्शाओ।*" वे प्रमाणित करते हैं कि "*इस अस्तित्व के संसार में वह मेल-मुलाकात आशीर्वादित है जब काले और गोरे लोग असीम आध्यात्मिक प्यार और स्वर्गिक हेलमेल की भावना से एक-दूसरे से मिलते हैं। ऐसी मेल-मुलाकातों के होने पर और जब प्रतिभागी सम्पूर्ण प्रेम, एकता और दयालुता की भावना से एक-दूसरे के साथ घुलते-मिलते हैं तो स्वर्गिक साम्राज्य के देवदूत उनकी प्रशंसा करते हैं और बहाउल्लाह का सौन्दर्य इन शब्दों में उन्हें संबोधित करता है: 'धन्य हो तुम सब! धन्य हो तुम सब'!*" इसी तरह वे यह कहते हैं कि "*जब इन दो प्रजातियों का सम्मिलन होगा तो वह सभा उच्च स्वर्ग के सहचरों को आकर्षित करने वाली चुम्बक बन जाएगी और 'आशीर्वादित सौन्दर्य' की सम्पुष्टि उसके चतुर्दिक होगी।*" वे पुनः दोनों प्रजातियों को समझाते हैं: "*तुम दोनों अपने बीच इस बन्धुता को प्राप्त करने और भाईचारे के इस बन्धन को मजबूत बनाने के लिए भरपूर प्रयास करो और अपने प्राणपण से जुट जाओ। ऐसी उपलब्धि प्रत्येक पक्ष के प्रयास और इच्छा के बिना सम्भव नहीं है जिसमें एक पक्ष आभार और प्रशंसा की भावना से भरा हो और दूसरा पक्ष दयालुता और समानता को मान्यता देने के विचार से। इस पारस्परिक विकास की दिशा में प्रत्येक पक्ष को एक-दूसरे की सहायता देनी चाहिए और उसके विकास का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए .....तुम्हारे बीच प्रेम और एकता का विकास होगा और इस तरह मानवजाति की एकता स्थापित होगी। काले और गोरे लोगों के बीच एकता स्थापित होने से विश्व शांति का आश्वासन मिलेगा।*" उन्होंने गोरी प्रजाति के लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा: "*मेरी आशा है कि तुम सब दलित प्रजाति को अपना गौरव प्राप्त करने और श्वेत लोगों के समुदाय में सहभागी बनने में, पूर्ण निष्ठा, वफादारी, प्रेम और पवित्र भावना के साथ मानव संसार की सेवा करने में सहायता दोगे। श्वेत और अश्वेत लोगों के बीच की इस शत्रुता, विरोध और पूर्वाग्रह का लोप आस्था, आश्वासन, और 'आशीर्वादित सौन्दर्य' की शिक्षाओं के सिवा अन्य किसी तरह से नहीं हो सकता।*" उन्होंने हमें सचेत किया है कि "*काले और गोरे लोगों के बीच की एकता का यह सवाल अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि इस एकता को साकार नहीं किया जाएगा तो शीघ्र ही बड़ी भारी मुश्किलें सामने आएँगी और हानिकारक परिणाम उपजेंगे।*" एक अन्य चेतावनी में वे कहते हैं: "*यदि इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आएगा तो शत्रुता दिनोंदिन बढ़ती जाएगी और अन्तिम परिणाम के रूप में कठिनाइयाँ सामने आएँगी और इसका अंत रक्तपात में भी हो सकता है।*"

इस अंधकारमय युग में दोनों ही प्रजातियों के दृष्टिकोण, उनके आचरण और व्यवहार से बहाउल्लाह के धर्म की चेतना और उनकी शिक्षाओं को झलकाने के लिए दोनों ही नस्लों द्वारा घोर प्रयास किए जाने की जरूरत है। जातीय श्रेष्ठता के भ्रांतिपूर्ण सिद्धान्त को उसकी समस्त बुराइयों, उलझनों और कष्टप्रद तत्वों सहित सदा-सदा के लिए तिलांजलि देते हुए, सभी नस्लों के

आपस में घुलने-मिलने की प्रक्रिया का स्वागत और उसे प्रोत्साहित करते हुए और दोनों ही प्रजातियों को अलग करने वाली बाधाओं को छिन्न-भिन्न करते हुए, प्रत्येक को यह अहर्निश प्रयास करना चाहिए कि उन दोनों के सामने जो समान और अत्यावश्यक जिम्मेवारी पड़ी है उसके प्रति वे अपना-अपना दायित्व निभाएँ। इस जटिल समस्या के निदान में अपना-अपना योगदान देने के प्रयास के क्रम में उन्हें अब्दुल-बहा की चेतावनियों पर ध्यान देना चाहिए और अभी भी समय रहते उन्हें उन घोर दुःखद परिस्थितियों के बारे में अपने मन में सोच लेना चाहिए जो तब अवश्य सामने आएँगी यदि सम्पूर्ण अमेरिकी राष्ट्र के सामने मुँह बाए खड़ी इस दुःखद और चुनौतीपूर्ण स्थिति का निश्चित निराकरण नहीं किया जाएगा।

इस समस्या के समाधान में अपना योगदान देने के लिए गोरे लोगों को चाहिए कि वे अपने भीतर अचेतन रूप से विद्यमान और अंतर्निहित श्रेष्ठता की भावना को सदा-सदा के लिए तिलांजलि देने, अन्य प्रजातियों के लोगों के प्रति आधिपत्यपूर्ण व्यवहार करने की अपनी प्रवृत्ति को सुधारने, अपने अंतरंग, सहज और अनौपचारिक मेलजोल द्वारा उनकी सच्ची मित्रता और निष्ठा हासिल करने, तथा लम्बे समय तक गंभीर और जल्दी न भरने वाले घाव से पीड़ित इन लोगों से सकारात्मक प्रतिक्रिया न पाकर अधीर हो जाने का अपना रवैय्या त्यागने के लिए पुरजोर प्रयास करें। इसी तरह नीग्रो लोगों को भी अपनी ओर से तदनुरूप प्रयास करते हुए, अपनी पूरी शक्तिभर अपना गर्मजोशी भरा रवैय्या दर्शाना होगा, अतीत के दर्द को भूलने का प्रयास करना होगा, और उन शंका-सन्देहों के हर नामो-निशान को मिटाने की क्षमता का परिचय देना होगा जो अभी भी उनके मनो-मस्तिष्क में उभर रहे हों। दोनों में से किसी भी पक्ष को यह नहीं सोचना चाहिए कि ऐसी विशाल समस्या का समाधान केवल किसी एक पक्ष की चिन्ता का विषय हो सकता है। दोनों में से किसी को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि इस तरह की समस्या का आसानी से या तुरन्त निराकरण हो सकता है। दोनों में से किसी भी पक्ष को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि इस समस्या के समाधान के लिए वे दूसरे पक्ष द्वारा प्रयास शुरू करने और उनके धर्म के दायरे के बाहर की एजेन्सियों द्वारा अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न किए जाने तक निश्चिंत होकर बैठे रह सकते हैं। दोनों में से किसी को भी यह धारणा बनाकर नहीं चलनी चाहिए कि सच्चे प्रेम, अपार धैर्य, सच्ची विनम्रता, उच्च कोटि के बुद्धिचातुर्य, ठोस प्रयास, परिपक्व विवेक तथा सतत, सुविचारित और प्रार्थनामय प्रयत्न के बिना वे उस कलंक को धोने में कामयाब हो सकेंगे जो कि उन दोनों के राष्ट्र के सुन्दर नाम पर एक अमिट बदनुमा धब्बा छोड़ गया है। बल्कि उन्हें यह विश्वास करके चलना चाहिए और इस बात पर पूर्णतः अश्वस्त होना चाहिए, कि अब्दुल-बहा जिस खतरनाक प्रवृत्ति से आशंकित थे और जिसे खत्म करके अमेरिका की भव्य नियति को साकार रूप देने के लिए वे जिन दोनों प्रजातियों के संयुक्त योगदान की आशा सँजोये बैठे थे उसकी पूर्णाहुति उनके धर्म के दायरे से बाहर संचालित किसी शक्ति या संगठन के प्रयासों के मुकाबले स्वयं उनकी आपसी समझदारी, उनकी आपसी बन्धुता और उनके ही पारस्परिक सतत् सहयोग पर कहीं अधिक निर्भर है।

उनका दोहरा धर्मयुद्ध

परमप्रिय मित्रो! आचरण की दृढ़ता जो अपने सभी प्रकट रूपों में इस राष्ट्र के राजनीतिक जीवन और उसके दलों और गुटों में परिलक्षित छल-प्रपंच और भ्रष्टाचार के बिल्कुल विपरीत अपनी चमक बिखेरती है, वह सुचिता और पवित्रता जो इसके नागरिकों के एक व्यापक वर्ग के चरित्र को दूषित करने वाली नैतिक शिथिलता और दुराचार से अत्यंत भिन्न है, और इससे लोगों को कलंकित करने वाले नस्लीय पूर्वाग्रह के अभिशाप से बिल्कुल मुक्त और पावन अंतःप्रजातीय बन्धुता - ये ही वे हथियार हैं जिनका प्रयोग अमेरिकी धर्मानुयायियों को अपने दोहरे धर्मयुद्ध में करना है और करना चाहिए। इस दोहरे धर्मयुद्ध का प्रथम लक्ष्य है स्वयं अपने ही समुदाय के आंतरिक जीवन को पुनरुज्जीवित करना और उसके बाद, दीर्घकाल से चली आ रही उन बुराइयों पर हमला बोलना जो उनके राष्ट्र के जीवन में घात लगाए बैठी हैं। इन हथियारों को अच्छी तरह माँज लेना, उनमें से प्रत्येक हथियार का विवेक और प्रभावशीलता के साथ प्रयोग करना, किसी भी विशेष योजना को आगे बढ़ाने, या किसी खास कार्य को नियोजित करने, अथवा किसी भी हद तक भौतिक संसाधनों का अम्बार जुटा लेने की अपेक्षा उन्हें उस समय के लिए कहीं ज्यादा तैयार करेगा जबकि नियति का हाथ उन्हें उस 'विश्व-व्यवस्था' के निर्माण और संचालन के कार्य में सहयोग देने के लिए मार्गदर्शित करेगा जो अभी प्रभुधर्म की विश्वव्यापी प्रशासनिक संस्थाओं द्वारा निषेचित की जा रही है।

इस दोहरे धर्मयुद्ध के संचालन में, बहाउल्लाह के नाम पर उनके धर्म के लिए संघर्षरत बहादुर योद्धाओं को निश्चित रूप से भीषण प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा और अनेक बाधाओं से जूझना होगा। इस क्रम में उन्हें स्वयं अपने आवेगों से भी उतना ही जूझना होगा, उनका उतना ही प्रतिरोध करना पड़ेगा और उन पर पूर्णतः विजय पानी होगी जितना कि रूढ़िवादी शक्तियों के कोप पर, निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा किए गए विरोध पर और एक भ्रष्ट एवं सुख-लिप्सा से भरी पीढ़ी के प्रतिरोधों पर। जब आनेवाले संघर्षों के लिए वे अपने रक्षात्मक उपायों का सुघटन और विस्तार करेंगे तो दुवहारों और उपहासों के तूफान भी उन पर टूट पड़ेंगे और उनकी निन्दा करने तथा उन्हें गलत ठहराने के अभियान भी जोर पकड़ेंगे। बहुत ही जल्द वे यह देखेंगे कि उनके धर्म पर आक्रमण किए जा रहे हैं, उनकी मंशा को गलत ठहराया जा रहा है, उनके वास्तविक उद्देश्य को बदनाम किया जा रहा है, उनकी सदिच्छाओं की हँसी उड़ाई जा रही है, उनकी संस्थाओं का उपहास किया जा रहा है, उनके प्रभाव को तुच्छ करके आँका जा रहा है, उनके प्राधिकार का दमन किया जा रहा है और कई बार कुछ लोग जो या तो उनके आदर्शों को समझने में असमर्थ होंगे अथवा अपरिहार्य रूप से उभरती हुई आलोचनाओं के प्रहारों को झेलने की इच्छा-शक्ति से विहीन, उनके धर्म को ही छोड़कर चले जाएँगे। प्रिय मास्टर ने यह भविष्यवाणी की है कि "*चूँकि तुम्हारी कई अग्नि-परीक्षाएँ होंगी अतः तुझ पर संकट भी आएँगे और तुझे कष्ट भोगने होंगे।*"

परन्तु पश्चिम में तथा उसके गतिविधियों से भरे एक प्रमुख केन्द्र में, बहाउल्लाह के नाम पर और उनके निमित्त, अपनी एक भीषणतम और परम भव्य लड़ाई लड़ने जा रही बहाउल्लाह की अपराजेय सेना को अपनी किसी भी आलोचना से भयभीत नहीं होना चाहिए। निंदा करने वालों की जुबान उनके मकसद को नीचा दिखाने के लिए चाहे जितने भी लांछन लगा दे, उन्हें रुकना नहीं चाहिए। उनके खिलाफ एकजुट हुई कट्टरता, रूढ़िवादिता, भ्रष्टाचार और पूर्वाग्रह की चुनौतीपूर्ण ताकतों की बढ़त से उन्हें पीछे नहीं हटना चाहिए। आलोचना का स्वर वस्तुतः वह स्वर है जो परोक्ष रूप से प्रभुधर्म की घोषणा को बल प्रदान करता है। अलोकप्रियता वस्तुतः अपने और अपने विरोधियों के बीच के स्पष्ट अन्तर को और उजागर करती है। दूसरी ओर, बहिष्कार अपने आप में वह चुम्बकीय शक्ति है जो आखिरकार अत्यंत हिंसक और घोर शत्रुओं को भी अपने खेमे में खींच लाती है। जिस धरती पर प्रभुधर्म की महानतम लड़ाइयाँ लड़ी गई हैं, और जहाँ उसके अत्यंत खूंखार दुश्मनों का निवास रहा है, वहाँ पहले ही कई घटनाओं के माध्यम से धीमी किन्तु स्थिर गति से प्रभुधर्म के आदर्शों को व्यापक बनाने में सफलता पाई गई है, उसकी भविष्यवाणियाँ चरितार्थ हुई हैं, उनसे न केवल प्रभुधर्म के कतिपय कट्टर शत्रुओं को निहत्था करने में मदद मिली है बल्कि इस धर्म के संस्थापकों के प्रति उनकी दृढ़ और अटूट निष्ठा हासिल करने में भी। ऐसा सम्पूर्ण रूपांतरण, प्रवृत्तियों में इस प्रकार का आश्चर्यजनक बदलाव, सिर्फ तभी लाया जा सकता है जबकि आध्यात्मिक रूप से भूखे, अधीर, नेतृत्वहीन जनसमुदाय तक बहाउल्लाह का सन्देश पहुँचाने के लिए चुना गया माध्यम स्वयं उन दोषों से मुक्त हो जिन्हें दूर करने के लिए वह प्रयासरत है।

अतः, मेरे परमप्रिय मित्रों! वे आप ही हैं जिन्हें मैं न केवल अपने पावन दायित्व की अनिवार्यता और उसे तुरन्त पूरा करने की आवश्यकता के महत्व के बारे में बतलाना चाहता हूँ बल्कि असीम सम्भावनाओं का खाका भी खींचना चाहता हूँ कि उन दायित्वों को निभाकर आप न केवल स्वयं अपने समुदाय को महान स्तर तक ऊँचा उठा सकेंगे बल्कि अपने देश के समुदाय की मनोवृत्ति और उनके आदर्शों को भी। मुझे पूरा विश्वास है कि इस दायित्व की कठिनाइयों से तनिक भी हतप्रभ हुए बिना आप इस वर्तमान समय की चुनौतियों का अपने समुचित तरीके से सामना करेंगे। यह वह समय है जो खतरों से भरा है, जिसमें भ्रष्टाचार का बोलबाला है, परन्तु फिर भी यह एक ऐसे उज्ज्वल भविष्य की प्रतिज्ञा से परिलक्षित है जिसकी गरिमा की तुलना मानवजाति के इतिहास के विगत किसी भी युग से नहीं की जा सकती।

परमप्रिय मित्रों! इन पृष्ठों के आरम्भ में मैंने प्रभुधर्म के रचनात्मक युग के ऐसे निर्णायक चरण और मानव इतिहास के ऐसे कठिन काल में बहाउल्लाह के दूरगामी धर्म के उत्पीड़न के फलस्वरूप अमेरिकी धर्मानुयायियों के समक्ष उपस्थित गौरवमय अवसरों और साथ ही उनके महान दायित्वों के बारे में बताने का प्रयास किया है। मैंने उस मिशन की प्रवृत्ति के बारे में पर्याप्त प्रकाश डाला है जिसे, परिस्थितियों की बाध्यकारी शक्ति के कारण, पूरा करने के लिए उस समुदाय को अति

निकट भविष्य में उठ खड़ा होना होगा। उस समुदाय के सामने खड़े दायित्वों को स्पष्ट रूप से समझ लेने, और उन्हें बेहतर ढंग से पूरा कर पाने की दृष्टि से, मैंने जिन चेतावनियों को आवश्यक समझा है, उनके बारे में बता दिया है। मैंने अपनी पूरी क्षमता भर उन महान और गत्यात्मक सद्‌गुणों, उन उच्च आदर्शों की बात सामने रखी है, और उन्हें रेखांकित किया है, जिन्हें प्राप्त करना भले ही कठिन हो किन्तु वे फिर भी उन दायित्वों की सफलता के लिए अनिवार्य घटक हैं। अब मुझे लगता है कि उनके तात्कालिक दायित्व के भौतिक पक्ष के सम्बंध में एक बात कह देनी चाहिए जिसका समापन होते ही, निर्धारित समय पर, न केवल अब्दुल-बहा द्वारा परिकल्पित दिव्य योजना के परवर्ती चरणों का प्रत्यक्षीकरण निर्भर करेगा बल्कि उन क्षमताओं की प्राप्ति भी जो कि समय आने पर उन्हें उन कर्त्तव्यों और दायित्वों को निभाने की क्षमता भी प्रदान करेगा जिनकी अपेक्षा उस महान मिशन द्वारा की गई है और जिन्हें पूरा करना उनका सौभाग्य होगा।

मन्दिर के अलंकरण और शिक्षण के कार्यकलापों के विस्तार के दोहरे पहलू से सम्पन्न सात वर्षीय योजना, जिसके दायरे में उत्तरी और दक्षिणी दोनों ही अमेरिकी प्रायद्वीप आते हैं, अब अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। जिन लोगों ने भी हाल के महीनों में इसकी प्रगति का जायजा लिया है, उनके सामने इस योजना के वे लक्षण प्रकट हो रहे हैं जो अत्यंत ही उत्साहवर्द्धक हैं और जो निर्धारित समय-सीमा में इसके लक्ष्यों की प्राप्ति का शुभ संकेत झलका रहे हैं। मन्दिर के बाहरी अलंकरण से सम्बंधित कार्यों को सहज बनाने और उसके सम्पूर्ण कार्यक्षेत्र को अपने दायरे में समेटने वाले, क्रमिक चरण अधिकांशतः आरम्भ किए जा चुके हैं। अंततः, इस तीस वर्ष पुराने उपक्रम की विजयी पूर्णाहुति को संकेतित करने वाले अन्तिम चरण में प्रवेश पा लिया गया है। उस ऐतिहासिक भवन की मुख्य और प्रथम मंजिल के सम्बंध में आरम्भिक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। ’परम पावन पत्ती’ के प्रिय नाम पर स्थापित कोष का समारंभ हो चुका है। ऐसे महान रूप से प्रशंसनीय कार्य की अबाधित निरन्तरता के प्रति अब हम आश्वस्त हैं। उस व्यक्ति की जीवन-स्मृतियाँ, जिसका हृदय इस पवित्र ’मन्दिर’ की आरम्भिक संरचना की प्रगति देखकर अत्यंत पुलकित हुआ था, इस महान कार्य को पूर्ण करने की दिशा में हमें इतनी अधिक प्रेरणा से भर देने वाली हैं कि इस पुनीत कार्य की सराहनीय पूर्णाहुति में जुटे निर्माताओं की क्षमता के बारे में बचे-खुचे सन्देह भी जाते रहेंगे।

शिक्षण की आवश्यकता

और अब योजना के शिक्षण (प्रभुधर्म का सन्देश देने) सम्बंधी पहलू पर विचार किया जाना चाहिए। इसकी चुनौतियों का सामना करना जरूरी है और उसकी अपेक्षित बातों का अध्ययन, मूल्यांकन और उन्हें पूरा किया जाना आवश्यक है। इसमें कोई दो मत नहीं कि पश्चिम के प्रथम मशरिकुल-अज़कार (बहाई उपासना मन्दिर) की सुन्दरता अपूर्व और मनोहारी है, इसकी बनावट भव्य है, इसका शिल्प अनूठा है और यह जिन आदर्शों एवं अभिलाषाओं का प्रतीक है वे अमूल्य हैं, परन्तु वर्तमान समय में इसे प्रभुधर्म के और अधिक प्रभावी प्रचार और उसकी शिक्षाओं के ज्यादा

व्यापक प्रसार के उपकरण से अधिक नहीं समझा जाना चाहिए। इस संदर्भ में उसे उसी दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए जैसे प्रभुधर्म की प्रशासनिक संस्थाओं को जिन्हें उसके आदर्शों, सिद्धान्तों और यथार्थों के समुचित प्रसार के माध्यम के रूप में निर्मित किया गया है।

अतः सात वर्षीय योजना के शिक्षण सम्बंधी तत्व ही वे विषय हैं जिन पर भविष्य में अमेरिकी धर्मानुयायियों के समुदाय को पूरे मनोयोग और सतत् रूप से अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्हें पूरा करने के लिए, सम्पूर्ण समुदाय को एक साथ उठ खड़ा होना चाहिए। प्रभुधर्म का सन्देश देना, इसकी सत्यताओं की घोषणा करना, इसके हितों की रक्षा करना, अपने कर्म और अपनी वाणी से इसकी अपरिहार्यता, क्षमता और सर्वव्यापकता की झलक दिखाना - ये काम कभी भी केवल बहाई प्रशासनिक संस्थाओं के ही विशिष्ट कार्य अथवा अधिकार के रूप में नहीं देखे जाने चाहिए - चाहे वे आध्यात्मिक सभाएँ हों या समितियाँ। इस कार्य में हर किसी की भागीदारी आवश्यक है, चाहे वे किसी भी मूल के हों, उनके अनुभव चाहे जितने भी सीमित हों, उनके साधन चाहे जितने अत्यल्प हों, उनकी शिक्षा चाहे जितनी अपूर्ण हो, उनकी परेशानियाँ और व्यस्तताएँ चाहे जितनी भी हों और वे चाहे कितने भी प्रतिकूल वातावरण में क्यों न रह रहे हों। स्वयं बहाउल्लाह ने अपनी अचूक वाणी से यह बात प्रकट की है: *”ईश्वर ने अपने धर्म का सन्देश देने का कर्त्तव्य हर किसी के लिए प्रस्तावित किया है।“* और उन्होंने आगे लिखा है: *“सुनो: हे बहा के लोगों! ईश्वर के धर्म के सन्देश का प्रसार करो, क्योंकि अपने सन्देश की घोषणा का कार्य ईश्वर ने हर किसी के लिए प्रस्तावित किया है और इसे सभी कर्मों में सबसे सुयोग्य कर्म माना है।“*

समुदाय के अंतर्गत व्यक्ति को प्रदत्त उच्चता के साथ-साथ उसे कतिपय सौभाग्य और विशेषाधिकार भी प्रदान किए गए हैं। कोई भी व्यक्ति प्रभुधर्म का सन्देश देने और उसका विकास करने के अपने दायित्व से मुँह मोड़ने में अपने सम्मान का अनुभव नहीं कर सकता। हमेशा नहीं किन्तु कई बार इससे प्रभुधर्म के ज्ञान के प्रसार तथा इसकी संस्थाओं की सहायता करने वाले लोगों को आकर्षित करने के लिए व्यापक अवसर और लाभ प्राप्त हो सकते हैं। परन्तु किसी भी स्थिति में यह जरूरी नहीं है कि जिन्हें प्रभुधर्म का सन्देश दिया जाता हो ऐसे हर किसी व्यक्ति के मनो-मस्तिष्क पर इसका व्यापक प्रभाव पड़े। कई बार - और प्रभुधर्म की जन्मभूमि में उसके आरम्भिक इतिहास में इसके कई अद्‌भुत प्रमाण मौजूद हैं - धर्म के अत्यंत सामान्य कोटि के निष्ठावान व्यक्तियों ने, जो अत्यंत अशिक्षित और बिल्कुल अनुभवहीन और अबोध थे, प्रभुधर्म के लिए ऐसी शानदार उपलब्धियाँ प्राप्त कीं जिनके आगे विद्वानों, बुद्धिमान और अनुभवी लोगों की महान उपलब्धियाँ भी फीकी पड़ जाएँ।

अब्दुल-बहा ने सत्यापित किया है कि *“चर्च के इतिहास के अनुसार, पीटर इतना अशिक्षित था कि वह सप्ताह के दिनों की गिनती करना भी नहीं जानता था। जब कभी भी वह मछली पकड़ने के लिए जाने का निश्चय करता तो वह हफ्ते भर का अपना खाना सात अलग-अलग पोटलियों में बाँध लेता था और हर रोज उनमें से एक पोटली खोलकर खा लिया करता था और जिस दिन*

सातवीं पोटली खुलती थी वह समझ लेता था कि विश्राम का दिन आ गया है। यदि ऐसे बुद्धिहीन और निरीह व्यक्ति में 'मनु-पुत्र' (ईसा मसीह) ऐसी क्षमता भर सकते थे कि, बहाउल्लाह के शब्दों में, 'उसके मुँह से विवेक और दिव्य वाणी के रहस्य प्रवाहित' हो सकते थे, जिसे वे अपने सभी शिष्यों में सबसे श्रेष्ठ स्थान प्रदान कर सकते थे, और अपना उत्तराधिकारी और अपने चर्च के संस्थापक बनने के उपयुक्त बना सकते थे तो फिर 'पिता' (बहाउल्लाह) अपने किसी तुच्छ और महत्वहीन अनुयायी को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए, कितनी अद्‌भुत उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकने योग्य बना सकते हैं, जिन उपलब्धियों के आगे ईसा मसीह के प्रथम धर्मदूत की महानतम उपलब्धियाँ भी बौनी पड़ जाएँ!"

अब्दुल-बहा के अनुसार, *"बाब ने लिखा है कि 'यदि आज के युग में एक छोटी-सी चींटी भी यह इच्छा करे कि उसके पास कुरान के सबसे गूढ़ और उलझा देने वाले अंशों का अर्थ प्रकट करने की क्षमता आ जाए तो उसकी यह इच्छा निस्संदेह पूरी हो जाएगी क्योंकि अनन्त शक्ति का रहस्य हर रचित वस्तु के अभ्यंतर में स्पंदित हो रहा है।' यदि ऐसा तुच्छ जीव ऐसी सूक्ष्म शक्ति से सम्पन्न हो सकता है तो फिर बहाउल्लाह की कृपा के उदार प्रवाह से निकली हुई शक्ति कितनी अधिक प्रभावशाली होगी!"*

वस्तुतः, एक व्यापक क्षेत्र सामने पड़ा है, यह एक निर्णायक घड़ी है, काम करने वाले इतने कम और समय बहुत थोड़ा है जबकि आशीर्वाद इतने अमूल्य कि बहाउल्लाह के धर्म का कोई भी अनुयायी, जो उनके नाम को धारण करने के योग्य है, एक मिनट के लिए भी हिचकना नहीं चाहेगा। वह ईश्वर-जनित 'शक्ति' जिसकी उन्मूलनकारी सामर्थ्य अति अदम्य है, जिसकी क्षमता अपरिमेय है, जिसके रुख का पता नहीं कि कब किधर हो, जिसकी कार्यशैली रहस्य से भरी है और जिसके प्रकटीकरण विस्मय से भर देने वाले हैं - वह 'शक्ति' जिसके बारे में बाब ने लिखा है कि वह *'हर रचित वस्तु के अभ्यंतर में स्पंदित हो रही है'* और जिसने, बहाउल्लाह के अनुसार, *"अपने स्पंदनकारी प्रभाव के माध्यम से विश्व का संतुलन डगमगा दिया है और इसके सुव्यवस्थित जीवन में उथल-पुथल मचा दी है"*- ऐसी प्रचण्ड 'शक्ति' एक दोधारी तलवार की तरह अपना काम करती हुई, ऐन हमारी आँखों के सामने, एक ओर तो सभ्य समाज द्वारा सदियों से सँजोए हुए बन्धनों को काटती चली आ रही है और, दूसरी ओर, उन फंदों को ढीला कर रही है जो अभी भी बहाउल्लाह के उस धर्म को जकड़े हुए है जो अभी भी अपनी शैशवावस्था में है, जो अभी भी पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाया है। इस 'शक्ति' द्वारा प्रस्तुत किए गए अकल्पनीय अवसरों को देखते हुए, अमेरिकी धर्मानुयायियों को चाहिए कि अब वे उठें और उनका पूर्णतया तथा पूरी बहादुरी से सदुपयोग करें। अब्दुल-बहा ने लिखा है: *"आज के युग में, उच्च स्वर्ग के सहचरों की पावन वास्तविकताएँ परम उदात्त स्वर्ग से इस संसार में लौटने को छटपटा रही हैं कि कदाचित वे आभा सौन्दर्य की दहलीज*

पर कुछ सेवा कर पाने में सहायता पा सकें और उस प्रभु की पावन देहरी पर अपनी दासता की झलक दिखा सकें।"

एक ऐसा संसार जो धर्म की सतत बुझती हुई ज्योति से धुँधलाया हुआ है, पूर्वाग्रह और कट्टरता भरे राष्ट्रवाद की विध्वंसक शक्तियों की मार से कराह रहा है, निर्दयतापूर्ण उत्पीड़नों की ज्वालाओं से झुलसा हुआ है - चाहे वे धार्मिक हों या प्रजातीय, उन भ्रमित सिद्धान्तों और मान्यताओं की कुहेलिका में भटका हुआ है जो ईश्वर की उपासना और उसके विधानों को जड़ से उखाड़ने पर तुले हुए हैं, जो एक प्रबल और नृशंस भौतिकतावाद द्वारा जर्जर किया जा चुका है, जो नैतिक-आध्यात्मिक अधोपतन के क्षयकारी प्रभाव से टूटता जा रहा है, और आर्थिक संघर्ष व अराजकता की कुंडली में घिरा पड़ा है - आज लोगों की आँखों के सामने यही दृश्य प्रस्तुत है जो कि इस रूपांतरकारी 'शक्ति' के परिणाम से उत्पन्न उन्मूलनकारी परिवर्तनों के प्रभाव से इस सम्पूर्ण पृथ्वी के जीवन में परिलक्षित है - उस 'शक्ति' के प्रभाव से जो अभी अपनी प्रक्रिया के आरम्भिक चरण में ही है।

ऐसा निराशापूर्ण और मार्मिक परिदृश्य उन लोगों के लिए भले ही विलापकारी हो जिन्हें बहाउल्लाह के उद्देश्यों, उनकी भविष्यवाणियों और वचनों का ज्ञान न हो परन्तु यह परिदृश्य उनके अनुयायियों के हृदय में तनिक भी विस्मय उत्पन्न किए बिना या उनके प्रयासों को पंगु बनाए बिना उल्टे उनकी आस्था को ही प्रगाढ़ करेगा तथा अब्दुल-बहा की लेखनी द्वारा उनके लिए तैयार की गई प्रशस्त कर्मभूमि में उन्हें बहाउल्लाह द्वारा घोषित विश्व की मुक्ति के पुनीत कार्य में अपनी क्षमता दर्शाने और अपनी भूमिका अदा करने के लिए पूरे उत्साह के साथ उठ खड़े होने की भावना का ही संचार करेगा। अपने कई वर्षों के कठिन प्रयास से उन्होंने प्रशासनिक मशीनरी के अपने जो भी साधन तैयार किए हैं उनका पूर्ण उपयोग किया जाना चाहिए और उस उद्देश्य की पूर्णाहुति में जोत दिया जाना चाहिए जिनके लिए उन्हें तैयार किया गया है। आत्म-त्याग की दुर्लभ भावना के अभिमान भरे मूर्तिमान स्वरूप - बहाई मन्दिर - को भी इसी तरह अपनी भूमिका निभाने देनी चाहिए तथा सम्पूर्ण पश्चिमी गोलार्ध को अपने प्रभाव-क्षेत्र में समेटने के लिए उद्दिष्ट शिक्षण अभियान में अपना योगदान देना चाहिए।

वर्तमान युग द्वारा उद्वेलित किए गए सभी दुःखों, आशंकाओं, भ्रमों, उलझनों, आक्रोशों, विद्रोहों, शिकायतों और अधीरताओं के बावजूद इसकी उथल-पुथल से उत्पन्न अवसरों का भी इसी तरह बहाउल्लाह के धर्म की मोक्षदायिनी शक्ति के बारे में दुनिया भर के लोगों को बताने और उनके धर्मानुयायियों की सतत बढ़ती हुई सेना में नए-नए लोगों को शामिल करने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। ऐसा अमूल्य अवसर, अनुकूल परिस्थितियों का ऐसा संगम शायद फिर कभी नहीं आएगा। महानतम नाम के सैनिकों में अग्रणी अमेरिकी धर्मानुयायियों के लिए यही तो वह समय है, वह निर्धारित बेला, जबकि वे विशेष रूप से तैयार की गई प्रशासनिक व्यवस्था की एजेन्सियों और प्रणालियों के माध्यम से, अपने ईश्वर से विद्रोह कर बैठी और उसकी चेतावनियों

की अनदेखी करने वाली एक पतनशील और संत्रस्त पीढ़ी को उबारने की अपनी क्षमता और तत्परता की घोषणा कर सकते हैं, और उन्हें वह सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं जो उनके धर्म के सुदृढ़ दुर्ग में ही प्राप्त हो सकती है।

अतः सम्पूर्ण उत्तरी अमेरिकी गणराज्य और कनाडा के साम्राज्य में जिस शिक्षण अभियान की शुरुआत की गई है वह अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है और उसके महत्व को कम करके नहीं आँका जा सकता। यह शिक्षण अभियान जो कि अब्दुल-बहा के इच्छापत्र से निर्गत रचनात्मक शक्तियों द्वारा आरम्भ किया गया है और अपने द्वारा सृजित ताकत से सम्पूर्ण पश्चिमी गोलार्ध को समेटे हुए आगे बढ़ रहा है, मेरी समझ से उसे उन कतिपय सिद्धान्तों के अनुरूप चलाया जाना चाहिए जिन्हें उसके प्रभावी संचालन और उसके लक्ष्य की शीघ्र प्राप्ति के लिए ही तैयार किया गया है।

जो लोग भी ऐसे अभियान में हिस्सेदार हैं, चाहे सुघटन करने वाले व्यक्तियों की क्षमता से या ऐसे कार्यकर्ताओं की हैसियत से जिन्हें इस दायित्व को पूरा करने की जिम्मेवारी दी गई है, उन्हें अपने कर्त्तव्य-निर्वहन के एक आवश्यक तत्व के रूप में अपने धर्म के इतिहास और उसकी शिक्षाओं के विभिन्न पहलुओं से सुपरिचित हो जाना चाहिए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के अपने प्रयासों के क्रम में उन्हें पूरी निष्ठा और परिश्रम से अपने धर्म के साहित्य का अध्ययन करना चाहिए, उसकी शिक्षाओं की गहराइयों में उतरना चाहिए, उसके सिद्धान्तों और विधानों का अनुशीलन करना चाहिए, उसकी चेतावनियों, सैद्धांतिक बातों और उद्देश्यों पर मनन करना चाहिए, उसके कतिपय उपदेशों और प्रार्थनाओं को कंठस्थ कर लेना चाहिए, उसकी प्रशासनिक बातों के अनिवार्य तत्वों के ज्ञान में महारत हासिल करनी चाहिए और इसके वर्तमान मामलों और प्रगतियों से वाकिफ होना चाहिए। उन्हें प्रामाणिक और निष्पक्ष स्रोतों से अपने धर्म के स्रोत और पृष्ठभूमि के रूप में इस्लाम धर्म के इतिहास और सैद्धांतिक बातों का भी गहन ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और आदर एवं पूर्वधारणाओं से मुक्त, पावन विचारों के साथ कुरान के अध्ययन की प्रवृत्ति भी रखनी चाहिए जिसे, बाबी एवं बहाई प्रकटीकरणों के पवित्र ग्रंथों के अलावा, परमात्मा की वाणी का बिल्कुल प्रामाणिक कोषागार माना जा सकता है। उन संस्थाओं और परिस्थितियों के बारे में पता लगाने के लिए उन्हें खास ध्यान देना चाहिए जिनका प्रत्यक्ष सम्बंध उनके धर्म के उद्गम और उसके जन्म से है, उस धर्म के अग्रदूत द्वारा अपने महान पद के बारे में किए गए दावों और उसके संस्थापक द्वारा प्रकटित विधानों से है।

शिक्षण-क्षेत्र में सफलता की इन आवश्यक शर्तों को पूरा कर लेने के बाद उन्हें चाहिए कि जब कभी सम्भव होने पर वे लैटिन अमेरिका के देशों में किसी खास मिशन को पूरा करने का विचार करें तो उन देशवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं में एक निश्चित हद तक दक्षता प्राप्त करें और उनकी परम्पराओं, आदतों और नजरियों के बारे में जानकारी हासिल करें। मध्य अमेरिकी गणराज्यों को सम्बोधित दिव्य योजना की एक पाती में अब्दुल-बहा कहते हैं: *"इन हिस्सों में जाने वाले शिक्षकों को चाहिए कि वे स्पैनिश भाषा से भी सुपरिचित हों।"* एक अन्य पाती में उन्होंने

लिखा है: *"उनकी भाषाएँ बोल सकने वाले दल को चाहिए कि .....वे प्रशान्त महासागर के तीन विशाल द्वीपसमूहों की ओर रुख करें और वहाँ की यात्रा करें।"* वे आगे लिखते हैं: *"विभिन्न दिशाओं में यात्रा करने वाले शिक्षक जिस देश में प्रवेश करें उन्हें वहाँ की भाषा का ज्ञान होना चाहिए। उदाहरण के लिए, जापानी भाषा में निष्णात व्यक्ति जापान की यात्रा कर सकता है, अथवा चायनीज जानने वाला व्यक्ति चीन जा सकता है, इत्यादि।"*

शिक्षण के इस अंतर-अमेरिकी अभियान में भाग लेने वाले किसी भी व्यक्ति को यह सोचकर नहीं चलना चाहिए कि इस मिशन से सम्बंधित किसी भी खास कार्य के लिए पहल करना केवल उन्हीं एजेन्सियों - आध्यात्मिक सभाओं या समितियों - का कर्त्तव्य है जिन्हें सात वर्षीय योजना के इस महत्वपूर्ण लक्ष्य जो पूरा करने का कार्य आगे बढ़ाने और उसे सहज करने का मुख्य दायित्व सौंपा गया है। अब्दुल-बहा की दिव्य योजना के विश्वस्त न्यासी के रूप में, यह प्रत्येक अमेरिकी धर्मानुयायी का कर्त्तव्य है कि वह प्रभुधर्म के प्रशासनिक सिद्धान्तों द्वारा तय की गई सीमा में ऐसा हर कार्यकलाप आरम्भ करे, उसे आगे बढ़ाए, उसका सुघटन करे जिसे वह योजना के विकास की दिशा में उपयुक्त समझता हो। न तो विश्व की चुनौतीपूर्ण स्थितियाँ, न ही भौतिक संसाधनों की कमी की चिन्ता और न ही ज्ञान और अनुभव जैसे मानसिक गुणों के अभाव - यद्यपि वे वांछित हैं - के कारण ही किसी पायनीयर शिक्षक को स्वतंत्र रूप से उन शक्तियों को क्रियाशील करने के लिए उठ खड़े होने में संकोच करना चाहिए जिन शक्तियों को एकबार सक्रिय करते ही, अब्दुल-बहा द्वारा हमें बार-बार दिए गए आश्वासन के अनुसार, वे एक चुम्बक की तरह बहाउल्लाह की प्रतिज्ञापित और अचूक सहायता को आकर्षित करने में सक्षम हैं। उसे अपने समुदाय के निर्वाचित प्रतिनिधियों के किसी दिशानिर्देश या किसी खास प्रोत्साहन की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है, न ही उसे अपने सगे-सम्बंधियों अथवा अपने ही देश के नागरिकों द्वारा खड़ी की जा सकने वाली बाधाओं से रुकने की आवश्यकता है और न ही अपने शत्रुओं और आलोचकों द्वारा की गई आलोचनाओं पर ध्यान देने की जरूरत है। अपने धर्म के सभी भावी शिक्षकों को बहाउल्लाह का परामर्श है: *"अपने उस प्रभु का सन्देश लेकर जाते समय जो दिव्य मार्गदर्शन के प्रभात का जन्मदाता है, हवा की तरह अबाधित बनो। जरा विचार करो कि ईश्वर ने उसे जो दायित्व सौंपा है उसके प्रति पूरी निष्ठा दर्शाते हुए हवा किस तरह धरती के सभी क्षेत्रों के ऊपर प्रवाहित होती है, चाहे वहाँ लोग रहते हों या वह निर्जन हो। चाहे वीरानी का मंजर हो या समृद्धि के संकेत, उसे इससे हर्ष या विषाद का कोई अनुभव नहीं होता। अपने सृष्टिकर्ता के आदेशानुसार वह हर दिशा में बहती रहती है।"* अपने धर्म के ऐसे शिक्षक के बारे में संकेतित करते हुए, एक अन्य स्थान पर बहाउल्लाह कहते हैं: *"और जब वह अपने प्रभु के धर्म के लिए अपने घर से प्रस्थान करने का निश्चय करे तो अपनी यात्रा के सर्वोत्तम पाथेय के रूप में उसे ईश्वर में अपना सम्पूर्ण विश्वास रखना चाहिए और सदाचार का वस्त्र धारण करना चाहिए .....यदि वह ईश्वर के प्रेम की अग्नि से*

प्रदीप्त होगा, यदि वह सृष्टि की सभी वस्तुओं से स्वयं को निर्लिप्त कर लेगा तो उसके मुख से निकले हुए शब्द सुनने वालों के हृदय में एक ज्वाला सुलगा देंगे।"

प्रभुधर्म का सन्देश देने के आह्वान के प्रत्युत्तर में, स्वयं अपनी ओर से पहल करते हुए उठ खड़े होने के लिए कृतसंकल्प और उन बाधाओं की परवाह किए बिना जो उसके पथ पर उसके मित्रों या शत्रुओं द्वारा जाने या अनजाने में खड़ी की गई हों, उसे चाहिए कि वह जिन लोगों को प्रभुधर्म के दायरे में लाना चाहता है उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए, प्रभुधर्म में उनकी रुचि जागृत करने के लिए, और उनकी निष्ठा को दृढ़ करने के लिए अपने इस व्यक्तिगत प्रयास में हर संभव तरीकों के बारे में सावधानीपूर्वक विचार कर ले। वह जिन खास परिस्थितियों में रह रहा है उनमें उपलब्ध हो सकने वाली सभी सम्भावनाओं का उसे जायजा ले लेना चाहिए, उनके फायदों का मूल्यांकन कर लेना चाहिए और अपने मनःचिन्तित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्हें उपयोग में लाने के लिए बुद्धिमत्तापूर्वक और सुनियोजित तरीके से आगे बढ़ना चाहिए। साथ ही उसे क्लबों, प्रदर्शनियों और सोसायटियों इत्यादि के साथ सहयोग, शिक्षण और प्रभुधर्म के आदर्शों के अनुरूप विषयों, जैसे संयम, नैतिकता, समाज-कल्याण, धार्मिक एवं प्रजातीय सहिष्णुता, आर्थिक सहयोग, इस्लाम एवं धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन इत्यादि पर लेक्चर अथवा सामाजिक, सांस्कृतिक, मानवतावादी, लोकोपकारी एवं शैक्षणिक संगठनों और उपक्रमों के साथ सहभागिता जैसे उपायों को भी आजमाने की कोशिश करनी चाहिए जिनसे, प्रभुधर्म की अपनी अखंडता को कायम रखते हुए, उसके लिए ऐसे अनेक रास्ते और साधन उपलब्ध होंगे जिनके माध्यम से वह अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों की सहानुभूति, सहायता और आखिर में प्रभुधर्म के प्रति उनकी निष्ठा हासिल करने में सफल हो सकेगा। जब इस तरह के सम्पर्क बनाए जा रहे हों तो उस दरम्यान उसे ध्यान रहना चाहिए कि प्रभुधर्म द्वारा उससे सतत अपेक्षा की जा रही है कि वह इसकी प्रतिष्ठा, इसके उच्च स्थान की गरिमा बनाए रखे, इसके विधानों और सिद्धान्तों की अखंडता कायम रखे, इसकी विशालता और सर्वव्यापकता की झलक दिखाए और निर्भय होकर इसके अनेक और महत्वपूर्ण हितों की रक्षा करे। उसे अपने श्रोता की ग्रहणशीलता के स्तर का विचार करना चाहिए और स्वयं निर्णय करना चाहिए कि उसे प्रत्यक्ष तरीके से सन्देश देने की जरूरत है या अप्रत्यक्ष तरीके से ताकि यथोचित विधि से उस जिज्ञासु व्यक्ति के मस्तिष्क पर दिव्य सन्देश का गहन प्रभाव डाला जा सके और उन लोगों की जमात में शामिल होने की उत्सुकता से भरा जा सके जो पहले ही प्रभुधर्म के दायरे में आ चुके हैं। उसे अब्दुल-बहा का उदाहरण याद रखना चाहिए और उनके द्वारा निरन्तर दी गई यह सलाह कि जिज्ञासु व्यक्ति के प्रति ऐसी दयालुता दर्शाई जानी चाहिए और शिक्षण की चेतना की ऐसी झलक दिखाई जानी चाहिए कि वह व्यक्ति स्वतः ही ऐसी महान शिक्षाओं को समाहित करने वाले धर्म से अपना तादात्म्य स्थापित कर ले। शुरू में उसे ऐसे विधानों और नियमों पर ज्यादा जोर देने से बचना चाहिए जिनके कारण जिज्ञासु व्यक्ति के मन में नव-अंकुरित धर्म-निष्ठा पर बहुत दबाव पड़ने जैसी स्थिति बन जाए। उस व्यक्ति

को धैर्य और बुद्धिमत्ता के साथ, किन्तु दृढ इरादे से, परिपक्क बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए, और बहाउल्लाह द्वारा निर्धारित की गई बातों को बेहिचक रूप से स्वीकार करने की घोषणा करने में उसकी सहायता दी जानी चाहिए। जैसे ही यह स्थिति प्राप्त कर ली जाए, उस व्यक्ति को अन्य बहाइयों से परिचित किया जाना चाहिए तथा सतत् बन्धुता एवं समुदाय के स्थानीय कार्यकलापों में उसकी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए अन्य सहयोगी समुदायों सहित उस समुदाय के जीवन को और समृद्ध बनाने, उसके कार्यों को आगे बढाने, और उसके हितों को सुघटित करने में उसे अपना योगदान देने में सक्षम बनाया जाना चाहिए। उसे तब तक संतुष्ट नहीं होना चाहिए जबतक कि अपने इस 'आध्यात्मिक शिशु' में उसने इतनी प्रबल उत्कंठा न भर दी हो कि अपनी बारी आने पर वह स्वयं स्वतंत्र रूप से उठ खड़े होने और अन्य लोगों को स्फूर्त करने के कार्य में अपनी शक्ति लगाने की ललक से भर उठे, और अपने इस नवीन आत्मार्पित धर्म के सिद्धान्तों और विधानों के पालन के लिए तत्पर हो जाए।

अमेरिकी धर्मानुयायियों द्वारा पूरे महाद्वीपीय स्तर पर शुरू किए गए इस अभियान में हर प्रतिभागी को, और खास तौर पर अछूते प्रदेशों में कार्यरत पायनियरों को, इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उस समस्त समुदाय में शिक्षण सम्बंधी कार्यकलापों का निर्देशन, संयोजन और सहजीकरण के लिए उत्तरदायी एजेन्सियों के साथ घनिष्ठ और सतत सम्पर्क बनाए रखना उनके लिए आवश्यक है। चाहे वह उनके निर्वाचित राष्ट्रीय प्रतिनिधियों की संस्था हो, या उसकी प्रमुख सहायक संस्था, राष्ट्रीय शिक्षण समिति, या इसकी उप-संस्थाएँ, क्षेत्रीय शिक्षण समितियाँ, अथवा स्थानीय आध्यात्मिक सभाएँ और उनकी शिक्षण समितियाँ, जो लोग भी बहाउल्लाह के धर्म के विस्तार के लिए प्रयासरत हैं उन्हें अपने विचारों के नियमित आदान-प्रदान, पत्रों, परिपत्रों, रिपोर्टों, बुलेटिनों एवं अन्य संचार-साधनों के माध्यम से धर्म के प्रसार के लिए स्थापित इन साधनों के जरिये अपनी प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु रूप से और तीव्रता से क्रियाशील करने पर ध्यान देना चाहिए। इससे उलझन, विलम्ब, एक ही कार्य दो जगह किए जाने, शक्ति के अपव्यय, इत्यादि की सम्भावनाएँ एकदम खत्म हो जाएँगी और इन अत्यावश्यक प्रणालियों के माध्यम से प्रवाहित होने वाली बहाउल्लाह की कृपा का अजस्र प्रवाह अबाधित रूप से बह सकेगा और उससे लोगों के हृदय और उनकी आत्माएँ इस तरह आप्लावित हो उठेंगी कि वे उन परिणामों को उत्पन्न करने में सक्षम हो सकेंगे जिनकी भविष्यवाणी अब्दुल-बहा द्वारा बार-बार की गई है।

अमेरिकी बहाई समुदाय के इतिहास में इस अभूतपूर्व संकेन्द्रित प्रयास में, प्रत्येक भागीदार के ऊपर यह आध्यात्मिक जिम्मेवारी बनती है कि शिक्षण (यानि प्रभुधर्म का सन्देश देने) के अनिवार्य कर्त्तव्य को वह हर किसी के लिए इतना महत्वपूर्ण बना दे कि वह उसके जीवन का सर्वव्यापी विषय बन जाए। अपने दैनिक कार्यकलापों और सम्पर्कों में, अपनी तमाम यात्राओं के दौरान - चाहे वह व्यावसायिक उद्देश्य के लिए की जाए या अन्य कारणों से, अवकाश के दिनों और बाहर

भ्रमण के समय, और उसे चाहे किसी मिशन पर जाने का मौका मिले, बहाउल्लाह के हर सन्देशवाहक को चाहिए कि वह उनके धर्म के बीजों को सर्वत्र बिखेरना न केवल अपना अनिवार्य कर्त्तव्य समझे बल्कि एक सौभाग्य भी। और तब उसे इस शाश्वत ज्ञान में भरोसा रखना चाहिए कि उस सन्देश के प्रति लोगों की त्वरित प्रतिक्रिया चाहे जैसी भी हो, और उस सन्देश को देने वाला माध्यम चाहे जितना भी अपूर्ण हो, उस धर्म-प्रवर्तक (बहाउल्लाह) की शक्ति अपनी उपयुक्त रीति से उन बीजों को अंकुरित होने में सक्षम बनाएगी और ऐसी परिस्थितियों के माध्यम से जो कि किसी भी व्यक्ति द्वारा अकल्पनीय है, वह उसकी फसल को समृद्ध करेगी जिसके फल उनके अनुयायियों को प्राप्त होंगे। यदि वह व्यक्ति किसी आध्यात्मिक सभा का सदस्य है तो वह अपनी आध्यात्मिक सभा को इस बात के लिए प्रेरित कर सकता है कि वह अपने सत्र में से थोड़ा-सा समय निकालकर पूरी उत्कंठा और प्रार्थनामय भाव से ऐसे तरीकों और साधनों के बारे में विचार करे जिनसे शिक्षण अभियान को फलीभूत किया जा सके, अथवा अपने उपलब्ध संसाधनों से उस अभियान की प्रगति, उसके विस्तार और सुगठन के कार्य को सम्पन्न कर सके। यदि वह व्यक्ति किसी समर स्कूल में भाग ले रहा हो - और बिना किसी अपवाद के हर किसी को इसमें भाग लेकर इससे लाभ उठाने का आग्रह किया जाता है - तो उसे व्याख्यानों, अध्ययन, और विचार-विमर्श के जरिये प्रभुधर्म की बुनियादी बातों में अपने ज्ञान को गहन बनाने की दृष्टि से ऐसे अवसर को मूल्यवान मानना चाहिए ताकि जो महान सन्देश उसके जिम्मे दिया गया है उसे वह बेहतर आत्मविश्वास और क्षमता से लोगों को दे सके। इसके अलावा, जब कभी भी सम्भव हो, दूसरे समुदायों में यात्रा करके उसे दूसरों में भी प्रभुधर्म का सन्देश देने की उमंग का संचार करना चाहिए, और उन बाहरी लोगों के समक्ष प्रभुधर्म को विकसित करने वाले लोगों की उत्साह-भावना और सजगता एवं प्रभुधर्म की संस्थाओं की सहज एकता की झलक दिखानी चाहिए।

सम्पूर्ण पश्चिमी गोलार्ध के सभी नस्लों, गणतंत्रों, वर्गों और जन-समुदायों को अपने दायरे में समेटने वाले इस धर्मयुद्ध के प्रतिभागियों में से जो कोई भी आत्म-प्रेरणा का अनुभव करे उसे उठ खड़ा होना चाहिए और, यदि परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो, उसे खास तौर पर अपना ध्यान नीग्रो, इंडियन, एस्किमो और यहूदी प्रजातियों पर केन्द्रित करना चाहिए और प्रभुधर्म के प्रति उनकी बेहिचक निष्ठा पाने की कोशिश करनी चाहिए। इन नस्लों के अधिक से अधिक सदस्यों को प्रभुधर्म के दायरे में लाकर अमेरिकी बहाई समुदाय की संख्या और विविधता बढ़ाने से बढ़कर इस वर्तमान समय में ईश्वर के धर्म की और अधिक प्रशंसनीय एवं सुयोग्य कोई अन्य सेवा नहीं की जा सकती। मानवजाति के इन अत्यंत विविधतापरक तत्वों का सम्मिश्रण और उन्हें सबको अपने दायरे में समेटने वाली बहाई बन्धुता के ताने-बाने में पिरोना, तथा ईश्वर द्वारा निर्धारित प्रशासनिक व्यवस्था की गत्यात्मक प्रक्रियाओं के माध्यम से उन्हें एक संघटित स्वरूप में ढालना जिसमें हर कोई बहाई सामुदायिक जीवन को समृद्ध बनाने, उसकी गरिमा बढ़ाने, में अपना-अपना योगदान दे रहा हो - वस्तुतः यह एक ऐसी उपलब्धि होगी जिसके विचार मात्र से प्रत्येक

बहाई का हृदय रोमांचित हो उठेगा। अब्दुल-बहा ने लिखा है: *"किसी बगीचे में खिले फूलों के बारे में विचार करो। हालाँकि वे अलग-अलग किस्मों, रंग, रूप और आकार के होते हैं किन्तु वे एक ही फब्बारे के जलों से अभिसिंचित होते हैं, एक ही हवा के झोंकों से जीवन पाते हैं, एक ही सूर्य की रोशनी उनमें शक्ति भरती है। इस विविधता से उनका आकर्षण और बढ़ता है और उनकी सुन्दरता का विकास होता है। यदि सभी फूल और पौधे, पत्तियाँ और बहार, फल और टहनियाँ तथा बगीचे के सारे पेड़-पौधे एक ही रंग-रूप के होते तो यह देखने में कितना बुरा लगता! रंग, रूप और आकार की विविधता बगीचे को समृद्ध और सुन्दर बनाती है, और उसके प्रभाव को बढ़ाती है। इसी तरह, जब अलग-अलग प्रकार के विचार, स्वभाव और चरित्र एक केन्द्रीय कारक की शक्ति और प्रभावशीलता के दायरे में लाए जाएँगे तो मानवीय पूर्णता की गरिमा और सुन्दरता प्रकट होकर अपनी झलक दिखाएगी। सभी वस्तुओं के यथार्थ पर शासन करने वाली और उन सबसे श्रेष्ठ 'ईश्वर की वाणी' की स्वर्गिक शक्ति के सिवा और कुछ भी नहीं है जो मानव-पुत्रों के इन विभिन्न विचारों, भावनाओं, संकल्पनाओं और धारणाओं को एक लय में ढाल सके।"* अब्दुल-बहा ने यह इच्छा प्रकट की है कि *"मुझे आशा है कि तुम सब दलित प्रजाति (नीग्रो) को गरिमावान बनाओगे तथा अत्यधिक निष्ठा, वफादारी, प्रेम और पवित्रता की भावनाओं के साथ उन्हें श्वेत प्रजाति के लोगों के साथ मिल-जुलकर मानव-जगत की सेवा करने के योग्य बनने में मदद दोगे।"* उन्होंने यह भी लिखा है कि *"मानवजाति की एकता और अखंडता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण प्रश्न है श्वेत और अश्वेत प्रजातियों की बन्धुता और समानता।"* दिव्य योजना की पातियों में अब्दुल-बहा ने लिखा है कि *"तुम्हें अमेरिका के मूल निवासियों, इंडियन्स, को अत्यधिक महत्व देना चाहिए। इन लोगों की तुलना अरब प्रायद्वीप के आदिम कबीलों से की जा सकती है जो कि मुहम्मद के प्रकटीकरण से पहले बर्बर लोगों की तरह थे। जब उनके बीच मुहम्मद की ज्योति छिटकी तो वे इतने प्रकाशित हो गए कि उन्होंने पूरी दुनिया पर अपना प्रकाश बिखेर दिया। इसी तरह, जब इन इंडियन लोगों को शिक्षित और सही रूप से मार्गदर्शित किया जाएगा तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि दिव्य शिक्षाओं के माध्यम से वे इतने प्रकाशित हो उठेंगे कि सारी धरती उनकी रोशनी में नहा उठेगी।"* अब्दुल-बहा ने यह भी लिखा है कि *"यदि सम्भव हो तो कनाडा के अन्य हिस्सों में भी अपने शिक्षकों को भेजो, इसी तरह ग्रीनलैंड और एस्किमो लोगों के मूल स्थान पर शिक्षकों को भेजो।"* उन्हीं पातियों में वे यह भी लिखते हैं कि *"ईश्वर ने चाहा तो दिव्य साम्राज्य की पुकार एस्किमो लोगों के कानों तक भी पहुँचेगी .....बशर्ते कि तुम प्रयास करो कि परमात्मा की सुरभि एस्किमो लोगों के बीच फैल सके। इसका प्रभाव बहुत ही बड़ा और दूरगामी होगा।"* अब्दुल-बहा लिखते हैं : *"ईश्वर का गुणगान हो, पवित्र पातियों में इजरायली लोगों के लिए जो कुछ भी घोषित किया गया है, और अब्दुल-बहा के पत्रों में जो बातें स्पष्ट रूप से अंकित हैं वे पूरी हो गई हैं। कुछ बातें घटित हो चुकी हैं, कुछ भविष्य में प्रकट होंगी। अपनी पावन*

पातियों में 'चिरन्तन सौन्दर्य' ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि उनके अनादर के दिन अब चले गए। ईश्वरीय कृपा अब उन्हें आच्छादित करेगी। यह प्रजाति दिनोंदिन उन्नति करेगी और चिरकाल से चली आ रही अपनी गुमनामी और अवमानना से मुक्ति पाएगी।"

जो लोग राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा अथवा राष्ट्रीय, क्षेत्रीय या स्थानीय शिक्षण समितियों की हैसियत से प्रशासनिक पद सँभाल रहे हैं उन्हें यथासंभव जल्द से जल्द उत्तरी अमेरिकी गणराज्य के थोड़े-बहुत बचे हुए राज्यों तथा कनाडा साम्राज्य के प्रान्तों में बहाई ग्रुपों के गठन की महत्वपूर्ण और अत्यावश्यक जिम्मेवारी का निरन्तर ध्यान रखना चाहिए, भले ही वे ग्रुप बहुत ही छोटे और सरल किस्म के क्यों न हों। साथ ही उन्हें इन नवगठित नाभिकीय केन्द्रों को अपनी क्षमता के अनुसार हर सम्भव सुविधा प्रदान करनी चाहिए ताकि वे तेजी से और स्वस्थ ढंग से समुचित रूप से क्रियाशील, आत्मनिर्भर एवं मान्य आध्यात्मिक सभाओं के रूप में विकसित हो सकें। ऐसी आधारभूत संरचनाओं का निर्माण, ऐसे स्थापित केन्द्र तैयार करने का काम - जो कि निस्संदेह एक कठिन काम है किन्तु अति आवश्यक और अत्यंत प्रेरणापूर्ण - एक ऐसा कार्य है जिसमें अमेरिकी बहाई समुदाय के हर व्यक्तिगत सदस्य को अपनी उदारतापूर्ण, सतत् और उत्साहपूर्ण सहायता देनी चाहिए। उनके निर्वाचित प्रतिनिधि चाहे कितने भी बुद्धिमत्तापूर्ण उपाय सोच लें, चाहे वे कितने भी व्यावहारिक तथा सुविचारित योजनाएँ तैयार कर लें, किन्तु ऐसे उपायों और ऐसी योजनाओं से तब तक कोई संतोषप्रद परिणाम हासिल नहीं किया जा सकता जब तक पर्याप्त संख्या में पायनीयर आवश्यक त्याग करने और इन परियोजनाओं को आगे बढ़ाने वाले स्वयंसेवकों के रूप में दृढ़ इरादे के साथ उठ खड़े नहीं होंगे। इन अछूते प्रदेशों के बीच सदा-सर्वदा के लिए बहाउल्लाह की धर्म-ध्वजा फहराना, उनके शहरों और गाँवों में उनकी प्रशासनिक व्यवस्था के संरचनात्मक आधार तैयार करना और उनके निवासियों के दिलो-दिमाग में बहाई प्रशासनिक संस्थाओं के लिए दृढ़ और स्थायी आश्रय संस्थापित करना - मेरी समझ से ये काम आने वाले चरणों में प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण काम हैं जिनसे होकर ही सात वर्षीय योजना के अंतर्गत आरम्भ किए गए शिक्षण अभियानों को गुजरना चाहिए। हालाँकि इसी योजना के अंतर्गत मशरिकुल-अज़कार (बहाई उपासना मन्दिर) के बाहरी अलंकरण का काम अपने विकास के अन्तिम चरण में पहुँच गया है किन्तु शिक्षण अभियान अभी भी अपने आरंभिक चरण में ही है, और अभी भी वह इन अछूते प्रदेशों अथवा दक्षिण अमेरिकी प्रायद्वीप में स्थित गणराज्यों तक प्रभावी रूप से अपनी शाखाओं का विस्तार नहीं कर पाया है। इसके लिए अभूतपूर्व प्रयास की जरूरत है। जिन स्थितियों में ये आरंभिक संस्थापन किए जाने हैं वे अक्सर अनाकर्षक एवं प्रतिकूल हैं, जो कार्यकर्ता ऐसे कार्यों को करने की स्थिति में हैं, उनकी संख्या बहुत कम है और उनके संसाधन अल्प एवं अपर्याप्त। किन्तु फिर भी बहाउल्लाह की लेखनी द्वारा न जाने कितनी बार हमें यह आश्वासन दिया गया है कि *"यदि कोई व्यक्ति, बिल्कुल अकेला ही सही, बहा के नाम पर उठ खड़ा होगा और उसके प्रेम का कवच पहन लेगा तो उसे सर्वशक्तिमान परमात्मा विजयी बनाएगा, भले ही समस्त धरती और स्वर्ग की शक्तियाँ उसके खिलाफ क्यों न खड़ी हों।"* क्या

उन्होंने यह नहीं लिखा है: *"उस ईश्वर की सौगन्ध जिसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, यदि कोई हमारे धर्म की विजय के लिए उठ खड़ा होगा तो उसे ईश्वर अवश्य विजयी बनाएगा, भले ही हजारों-हजार दुश्मन उसके खिलाफ एकजुट क्यों न हो जाएँ। और यदि मेरे लिए उसका प्रेम प्रबल होगा तो ईश्वर धरती और स्वर्ग की सभी शक्तियों पर उसका प्रभुत्व स्थापित करेगा।"* अब्दुल-बहा ने लिखा है: *"पिछली पीढ़ियों के कार्य पर विचार करो। ईसा मसीह के जीवन-काल में आस्थावान और दृढ़ व्यक्तियों की संख्या बहुत ही कम और सीमित थी परन्तु ईश्वरीय आशीर्वाद की वर्षा उन पर इतनी प्रचुरता से हुई कि आनेवाले कई वर्षों में असंख्य लोग 'ईशवाणी' की छत्रछाया तले एकजुट हो गए। ईश्वर ने कुरान में ये वचन कहे हैं : 'एक दाना सात गट्ठरों को जन्म देगा और हर गट्ठर में सौ-सौ दाने होंगे।' दूसरे शब्दों में, एक दाने से सौ दाने बन जाएँगे, और यदि ईश्वर चाहेंगे तो यह संख्या इससे भी दोगुनी होगी। अक्सर ऐसा हुआ है कि एक आशीर्वादित व्यक्ति एक पूरे राष्ट्र के लिए मार्गदर्शक बन गया है। आज हमें अपनी योग्यता और क्षमता के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है। नहीं, बल्कि आज के युग में हमें ईश्वर की कृपाओं और वरदानों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जिसने एक बूँद को सागर बना दिया है, और एक कण को सूर्य।"* ऐसी परिस्थितियों में, और ऐसे प्रदेशों में, जिन्होंने भी ऐसे महान धर्म की ध्वजा फहराने वालों में अग्रणी होने का इरादा किया है उन्हें अपनी आत्मा का पोषण इन शब्दों की जीवन्तकारी शक्ति से करना चाहिए और अपने एकाकी दायित्व को परिश्रमपूर्वक निभाते हुए 'उसके प्रेम का कवच पहनकर' - एक ऐसे प्रेम का जो अवश्य ही 'प्रबल हो' -- उन्हें अपने कर्मों के आख्यान से अपने देश के आध्यात्मिक इतिहास के अत्यंत उज्ज्वल पृष्ठों को अलंकृत करने के लिए उठ खड़ा होना चाहिए।

अब्दुल-बहा ने दिव्य योजना की पातियों में लिखा है: *"ईश्वर की महिमा हो, हालाँकि संयुक्त राज्य अमेरिका के ज्यादातर राज्यों और शहरों में उसकी सुरभि का संचार किया जा चुका है, और अनगिनत संख्या में लोग ईश्वर के साम्राज्य की ओर उन्मुख हो रहे हैं और उसकी ओर बढ़ रहे हैं, किन्तु फिर भी कुछ राज्यों में एकता की ध्वजा अभी तक फहराई नहीं जा सकी है जैसाकि होना चाहिए था, और न ही ईशवाणी बाइबिल और कुरान की तरह पवित्र ग्रंथों के रहस्य ही प्रकट किए जा सके हैं। सभी मित्रों के संकेन्द्रित प्रयासों के माध्यम से इन राज्यों में एकता की ध्वजा को फहराए जाने और दिव्य शिक्षाओं के प्रसार की जरूरत है ताकि ये राज्य भी स्वर्गिक उपहारों का अपना अनुदान और महानतम मार्गदर्शन का अंश प्राप्त कर सकें।"* दिव्य योजना की एक अन्य पाती में उन्होंने यह कहा है कि *"कनाडा साम्राज्य का भविष्य अत्यंत महान है और इससे जुड़ी घटनाएँ असीम रूप से गरिमामय। ईश्वर की स्नेहमयी दयालुता भरी दृष्टि इसकी ओर पड़ेगी और यह सर्व-महिमामय ईश्वर की कृपाओं का प्रकट रूप बनेगा।"* उसी पाती में अपने पिछले कथन को

पुष्ट करते हुए वे कहते हैं: *"मैं फिर से कहता हूँ कि आध्यात्मिक या भौतिक किसी भी दृष्टिकोण से, कनाडा का भविष्य अत्यंत महान है।"*

लैटिन अमेरिका का जागरण

जैसे ही यह आरम्भिक कदम उठा लिया जाए, जिसके अंतर्गत उत्तरी अमेरिकी प्रायद्वीप के प्रत्येक अछूते राज्य और प्रदेश में कम-से-कम एक नाभिकीय केन्द्र का गठन शामिल है, वैसे ही संकेन्द्रित बहाई प्रयासों को अत्यंत तेज करने का काम भी आरम्भ कर दिया जाना चाहिए जिसका उद्देश्य होना चाहिए उन शुभ प्रयत्नों को मजबूत बनाना जो कि वर्तमान समय में बहाउल्लाह के आह्वान के प्रति लैटिन अमेरिका को जागृत करने की दिशा में इने-गिने बहाइयों द्वारा ही किए जा रहे हैं। जब तक सात वर्षीय योजना के इस दूसरे चरण में प्रवेश नहीं कर लिया जाता या जब तक यह योजना स्वयं ही अपने विकास के निर्णायक चरण में नहीं पहुँच जाती तब तक इस अभियान को पूर्णतः आरम्भ किया हुआ नहीं माना जा सकता। एक शौर्यपूर्ण समुदाय के ऊपर, जो अपने प्रशासनिक दायरे के अंतर्गत, बाहरी अलंकरण की पूरी भव्यता के साथ उसकी मुख्य 'संरचना' का निर्माण कर चुका है, तथा जिसने उत्तरी अमेरिकी प्रायद्वीप के सभी राज्यों और प्रदेशों में अपने धर्म की ध्वजा को ऊँचा उठाया है, दिव्य कृपा का प्रचुर प्रवाह आलोड़ित होगा। ये प्रवाह इतने शक्तिशाली होंगे कि इस समुदाय के सदस्य उनकी सृजनात्मक ऊर्जा के प्रमाणों से चमत्कृत रह जाएँगे।

ऐसे चरण में आकर, बल्कि उस चरण में प्रवेश करने से पहले ही, अंतर-अमेरिका समिति को स्वयं को अपने अवसरों के अनुरूप स्तरों तक उठाना होगा और ऐसी शक्ति, ऐसा समर्पण और ऐसी उद्यमिता दर्शानी होगी जो कि उसके द्वारा उठाए गए दायित्वों के अनुरूप हों। एक क्षण के लिए भी यह नहीं भुलाना चाहिए कि मध्य और दक्षिण अमेरिकी महाद्वीप में कम-से-कम बीस स्वतंत्र राष्ट्र समाहित हैं और इस प्रकार वे दुनिया के एक-तिहाई सम्प्रभु राज्यों का प्रतिनिधित्व प्रस्तुत करते हैं जिन्हें विश्व की भावी नियति का रूप निर्धारित करने में अपनी महती भूमिका निभानी है। आज जबकि दुनिया पास-पड़ोस के एक समुदाय के रूप में सिकुड़ती जा रही है और उसकी प्रजातियों, राष्ट्रों और लोगों की किस्मत गहन रूप से परस्पर गूँथी हुई-सी हो गई है, पश्चिमी गोलार्ध के इन राज्यों की दूरियाँ अब मिटती जा रही हैं और उनमें से प्रत्येक में अंतर्निहित सम्भावनाएँ दिनोंदिन और अधिक उजागर होती जा रही हैं।

सात वर्षीय योजना के अंतर्गत, जब शिक्षण अभियानों और उपक्रमों के प्रगतिशील प्रकटीकरण के इस दूसरे चरण तक पहुँच जाएगा, और जब इस योजना के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक मशीनरी क्रियाशील हो उठेगी तो इस महान आंदोलन के शूरवीर पायनियरों - अमेरिकी धर्मानुयायियों - को बहाउल्लाह के अचूक प्रकाश से मार्गदर्शन पाते हुए, अब्दुल-बहा द्वारा तैयार की गई योजना के सख्त अनुपालन के साथ, अपनी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के निर्देश के अनुसार

कार्य करते हुए, तथा अंतर-अमेरिका समिति की सहायता के प्रति पूरी तरह आश्वस्त होकर, अंधकार और भ्रष्टाचार तथा अज्ञान की ताकतों के खिलाफ अपने युद्ध का शंखनाद करना होगा - एक ऐसा शंखनाद जिसकी प्रतिगूँज दक्षिणी प्रायद्वीप के सुदूर छोर तक सुनाई पड़े, और जिसके दायरे में उस प्रायद्वीप के सभी बीस राष्ट्र समाहित हों।

आज के इस मुहूर्त में, थोड़े-से ऐसे लोगों की जरूरत है जो पूरी तरह अपनी कमर कसकर, अपने शहरों, गृहनगरों और राज्यों का मोह त्यागकर, अपने देश को छोड़कर, और *"अपनी यात्रा के सर्वोत्तम पाथेय के रूप में ईश्वर में अपना सम्पूर्ण विश्वास रखकर"* उन दूर-दराज के प्रदेशों, उन अछूते क्षेत्रों, उन अविजित नगरों की ओर उन्मुख हो सकें जहाँ जाकर वे लोगों के हृदय रूपी दुर्गों पर अपना आधिपत्य जमा सकें - उन हृदयों पर जिन पर, बहाउल्लाह के अनुसार, *"प्रकटीकरण और दिव्य वाणी के देवदूत विजय पाएँगे।"* जब तक उनके साथ प्रयासरत उनके अन्य साथी अपने शिक्षण-अभियान का प्रथम चरण पार न कर जाएँ तब तक वे पीछे न हटें, बल्कि इसी क्षण से वे उस समय के आरम्भिक चरण का सूत्रपात करने के लिए उठ खड़े हों जिसे एकदिन उनके धर्म के अंतर्राष्ट्रीय इतिहास के अत्यंत गरिमामय अध्यायों में से एक माना जाएगा। सबसे पहले उन्हें चाहिए कि *"वे अपने आप को धर्म-संदेश दें ताकि उनकी वाणी उनके श्रोताओं के हृदयों को आकर्षित कर सके।"* उन्हें चाहिए कि अपने धर्म की जीत ही उनका 'सर्वोच्च लक्ष्य' हो। उन्हें उस *"पात्र की लघुता या विशालता का विचार नहीं करना चाहिए"* जिसमें आज के युग में ईश्वर द्वारा उड़ेली गई कृपा का पैमाना भरा हुआ है। उन्हें *"इस संसार और उसके तमाम मिथ्याभिमानों के प्रति हर लगाव के बोझ से स्वयं को मुक्त"* कर लेना चाहिए, तथा अब्दुल-बहा ने जिस अनासक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया था और जिसका अनुसरण वे चाहते थे कि सभी धर्मानुयायी करें, उसी अनासक्ति की भावना से उन्हें विविध जन-समुदायों और देशों को ईश्वर के स्मरण के दरबार और उसके सर्वोच्च प्रकटीकरण के निकट लाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। उसदिन जबकि *"हर स्तम्भ हिल उठेगा, जब लोगों की अपनी त्वचाएँ रेंग उठेंगी, जब सबकी आँखें आतंक से फटी रह जाएँगी"* तब उसका प्रेम ही *"उनकी आत्माओं के लिए खजाने का भंडार"* हो। उनकी *"आत्मा उस अमर्त्य 'अग्नि' की ज्वाला से जो कि विश्व के हृदय-मध्य में सुलग रही है, इस तरह प्रज्वलित हो उठे कि ब्रह्मांड के समस्त जल भी मिलकर उसकी उत्कंठा को बुझाने में शक्तिहीन सिद्ध हों।"* उन्हें *"हवा की तरह अबाधित होना चाहिए"* जिसे *"चाहे वीरानी का मंजर हो या समृद्धि के संकेत, इससे हर्ष या विषाद का अनुभव नहीं होता।"* उन्हें *"अपनी मुक्त जिह्वा से निरन्तर प्रभुधर्म की घोषणा"* करनी चाहिए। उन्हें वह *"घोषणा करनी चाहिए जो कि परम महान चेतना उन्हें अपने प्रभु के धर्म की सेवा में बोलने के लिए अनुप्रेरित करे।"* उन्हें *"सावधान रहना चाहिए कि वे किसी*

से विवाद न करें, नहीं, बल्कि दयापूर्ण व्यवहार और अत्यंत युक्तियुक्त तरीके से उसे सत्य से अवगत कराना चाहिए।'" उन्हें *"पूर्णतः ईश्वर के निमित्त उसके सन्देश की घोषणा करनी चाहिए और उसी भावना के साथ अपने शब्दों द्वारा श्रोता के मन में उठने वाले प्रत्युत्तर को स्वीकार कर लेना चाहिए।"* उन्हें एक क्षण के लिए भी यह नहीं भूलना चाहिए कि *"वफादार चेतना अपनी शक्ति द्वारा उन्हें सुदृढ़ करेगी"* और *"वह जो कि सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ है, उसके आदेश से उसके चुने हुए देवदूत उसके साथ जाएँगे।"* उन्हें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि *"जिन्होंने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सेवा करने का मान प्राप्त किया है उन्हें प्राप्त आशीर्वाद कितने महान हैं"* और यह भी याद रखना चाहिए कि *"ऐसी सेवा वास्तव में सभी सत्कर्मों का सिरमौर है और हर अच्छे कार्य का विभूषण।"*

और, अंत में, जब वे समस्त दक्षिणी अमेरिकी प्रायद्वीप में अपने कार्य का अनुसरण करें तो उनके हृदय के लिए एक आश्वासन के रूप में, उनके पथ के प्रदीप, उनके एकान्त के एक सखा और उनकी यात्रा के एक दैनिक सहारे के रूप में बहाउल्लाह के ये मर्मस्पर्शी शब्द हमेशा उनके ओठों पर होने चाहिएः *"हे ईश्वर के मार्ग के पथिक! तू परमेश्वर की कृपा के महासिंधु से अपना अंश ग्रहण कर और उसकी गहराइयों में निमग्न चीजों से स्वयं को वंचित मत कर .....यदि इस महासिंधु की एक अत्यंत छोटी-सी बूँद स्वर्गों और धरती की सभी वस्तुओं पर टपका दी जाए तो वह उसे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ परमात्मा की उदार कृपा से विभूषित करने के लिए पर्याप्त होगी। त्याग के करों से इसके जीवन्त जलकणों को बाहर निकाल और सभी रचित वस्तुओं पर उनका अभिसिंचन कर ताकि वे मानव द्वारा रचित सभी सीमाओं से मुक्त और पावन हो सकें और ईश्वर के शक्तिमान आसन, इस पवित्र और ज्योतिर्मय 'स्थल' के निकट आ सकें। यदि यह कार्य तुझे अकेला करना पड़े तो इससे दुखी न हो। तेरे लिए ईश्वर ही सर्व-पर्याप्त हो .....स्वर्गों और धरती के सभी जीवों के समक्ष धर्म की घोषणा कर। यदि कोई तेरे आह्वान का प्रत्युत्तर दे तो उसके समक्ष अपने प्रभु, परमात्मा, के उन प्रज्ञा-रत्नों को खोलकर रख दे जो कि उसकी 'चेतना' ने तुम्हारे पास भेजे हैं, और तू उनमें से बन जो सचमुच विश्वास रखते हैं। और यदि कोई तेरे प्रस्ताव को अस्वीकार कर दे तो उससे विमुख हो जा और अपना भरोसा और विश्वास सभी लोकों के प्रभु में रख। ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! इस युग में जो कोई अपने ओठ खोलेगा और अपने प्रभु के नाम का उल्लेख करेगा उस पर मुझ सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ के नाम के स्वर्ग से दिव्य प्रेरणा के समूह अवतरित होंगे। उस पर उच्च स्वर्ग के सहचर भी अवतरित होंगे जिनमें से प्रत्येक अपने हाथ में शुभ्र प्रकाश का पात्र ऊँचा किए आएगा। वह जो कि सर्वगरिमामय, परम शक्तिशाली है, उसकी आज्ञा से ईश्वर के प्रकटीकरण के साम्राज्य में ऐसा ही पूर्व-नियत किया गया है।"*

इसी तरह, जब वे आश्वस्त और निर्भय होकर ईश्वरीय मिशन पर निकलें तो दिव्य योजना की पाती से संकलित अब्दुल-बहा के ये शब्द भी उनके कानों में प्रतिगुंजित होने चाहिए: *"हे बहाउल्लाह के धर्मदूतों! मेरा जीवन तुझ पर न्योछावर हो! ....देखो उन द्वारों को जिन्हें बहाउल्लाह ने तुम्हारे सामने खोले हैं! विचार करो कि तुम कितने उदात्त और उच्च स्थान को प्राप्त करने वाले हो! कितनी अद्भुत हैं वे कृपाएँ जो तुझे प्रदान की गई हैं!" "मेरा ध्यान तुम्हारी ओर केन्द्रित है, और तुम्हारा उल्लेख करते हुए मेरा हृदय रोमांचित हो रहा है। यदि तुम जान पाते कि मेरी आत्मा तुम्हारे प्रेम से कितनी प्रदीप्त है तो तुम्हारा हृदय इतना आनन्द-विभोर हो उठता कि तुम एक-दूसरे के प्रेम से भर उठते।" "तुम्हारी सफलता का पूरा पैमाना अभी भी प्रकट नहीं हुआ है, इसके महत्व को अभी भी समझा नहीं गया है, बहुत ही जल्द तुम स्वयं अपनी आँखों से यह देखोगे कि तुझमें से प्रत्येक किस तरह एक चमकते हुए सितारे की तरह अपने देश के आकाश में दिव्य मार्गदर्शन की प्रभा झलकाओगे और उसके लोगों को अनन्त जीवन की गरिमा प्रदान करोगे।" "मेरी यह उत्कट आशा है कि निकट भविष्य में तुम्हारी उपलब्धियों के नतीजों से पूरी धरती आंदोलित हो उठेगी, हिल उठेगी।" "इसमें कोई सन्देह नहीं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा तुम्हें अपनी कृपा की सहायता प्रदान करेगा, तुम्हें अपनी शक्ति के संकेतों से विभूषित करेगा, और तुम्हारी आत्माओं को अपनी पवित्र चेतना की शक्ति के सहारे से सम्पन्न करेगा।" "अपनी संख्या कम होने की चिन्ता न करो, न ही एक विश्वासहीन दुनिया की विशालता देखकर व्यथित हो .....अपना पूरा प्रयास करो, तुम्हारा मिशन अवर्णनीय रूप से गौरवशाली है। यदि तुम्हारे प्रयास में सफलता मिली तो निस्संदेह अमेरिका एक ऐसे केन्द्र के रूप में उभरेगा जहाँ से आध्यात्मिक शक्ति की लहरें तरंगित होंगी और ईश्वर के साम्राज्य का सिंहासन अपनी अपार गरिमा और भव्यता के साथ सुदृढ़ रूप से संस्थापित होगा।"*

यह याद रखा जाना चाहिए कि जहाँ तक प्रभुधर्म का सन्देश देने का कार्य है, सात वर्षीय योजना के क्रियान्वयन के अंतर्गत मध्य और दक्षिण अमेरिकी गणराज्यों में से प्रत्येक में कम-से-कम एक केन्द्र के गठन का कार्य शामिल है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। यदि पहले से ही आरम्भ की जा चुकी इस योजना को सफल होना है तो बहाउल्लाह के धर्म की जन्मशती के अवसर पर इनमें से प्रत्येक देश में एक आधार की स्थापना का स्वप्न साकार हो जाना चाहिए, चाहे वे कितने ही आरम्भिक किस्म के क्यों न हों, जिस आधार के ऊपर अमेरिकी धर्मानुयायियों की विकसित होती पीढ़ी बहाई युग की दूसरी शताब्दी में अपना आगे का निर्माण कर सकें। आगे आने वाले दशकों में उनका काम होगा उन आधारों को मजबूत बनाना और उनका विस्तार करना तथा आवश्यक मार्गदर्शन, सहायता और प्रोत्साहन प्रदान करना ताकि उन देशों में दूर-दूर तक फैले हुए धर्मानुयायियों के समूह अपनी स्वतंत्र और सुसंसगठित आध्यात्मिक सभाएँ स्थापित कर सकें, और उनके माध्यम से अपने धर्म की प्रशासनिक व्यवस्था की संरचना खड़ी कर सकें। इस संरचना को खड़ा करने का

मुख्य दायित्व उन लोगों का है जिन्हें उत्तरी अमेरिकी धर्मानुयायियों के समूह ने दिव्य सन्देश प्रदान किया है। इस दायित्व के अंतर्गत, प्रत्येक ग्रुप को एक आध्यात्मिक सभा के रूप में विकसित होने की क्षमता प्रदान करने के अलावा, पूरी दुनिया में संस्थापित प्रत्येक बहाई समुदाय के जीवन और कार्यकलापों को अनुप्राणित करने वाले आध्यात्मिक और प्रशासनिक सिद्धान्तों के अनुरूप प्रशासनिक व्यवस्था की मशीनरी तैयार करने का काम आता है। इन बुनियादी एवं स्पष्ट रूप से अंकित सिद्धान्तों से, जो कि सभी बहाई समुदायों के लिए सामान्य हैं, तनिक भी विचलन बर्दाश्त नहीं की जा सकती। परन्तु यह दायित्व उन लोगों के सरोकार का विषय है जिन्हें आने वाली अवधि में उस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अवश्य उठ खड़ा होना चाहिए जो कि अपने सभी अभिप्रायों और उद्देश्यों के साथ अभी तक आरम्भ नहीं किया जा सका है।

अनिवार्य आधारशिला

उस आवश्यक आधार को अधिक सुव्यवस्थित तरीके से तैयार करना जिस पर ऐसे स्थायी स्वरूप वाली आध्यात्मिक और स्थानीय संस्थाओं का पोषण और ठोस स्थापना की जा सके एक ऐसा काम है जो कि शीघ्र ही सात वर्षीय योजना के कार्यवाहकों द्वारा संकेन्द्रित ध्यान दिए जाने की माँग करेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में बचे हुए शेष प्रदेशों में प्रभुधर्म की संस्थापना से सम्बन्धित उनके तात्कालिक अनिवार्य कर्त्तव्य के पूरा होते ही, ऐसे आधार की स्थापना के उद्देश्य को लेकर एक सुनियोजित प्रारूप तैयार कर लिया जाना चाहिए। जैसाकि पहले ही कहा जा चुका है, इन महान और आरम्भिक कार्यों का व्यवस्थापन, जिनके दायरे में मध्य और दक्षिण अमेरिकी गणराज्यों के आधिपत्य में आने वाले समस्त क्षेत्र को आना चाहिए, एक ऐसा कार्य है जो कि सात वर्षीय योजना के अंतर्गत संचालित शिक्षण अभियान का मूल बिंदु है और जो कि निश्चित रूप से अंततः उस अभियान की नियति तय करेगा। उस शिक्षण अभियान पर न केवल वर्तमान योजना सम्बन्धी गम्भीर अनिवार्य कर्त्तव्यों को प्रभावी रूप से सम्पादित करना निर्भर करेगा बल्कि अपने धर्म के विश्वव्यापी प्रसार के लिए अमेरिकी धर्मानुयायियों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका के संदर्भ में अब्दुल-बहा की संकल्पना को साकार करने के क्रम में आने वाले अत्यावश्यक चरणों का प्रगतिशील प्रकटीकरण भी।

भले ही ये कार्य लैटिन देशों के धर्मानुयायियों की भावी पीढ़ियों के उन श्रमपूर्ण और सुगठित प्रयासों के आरम्भिक स्वरूप हों जिनके माध्यम से वे अपनी विशिष्टता प्रदर्शित करेंगे, परन्तु इस क्रम में यह जरूरी है कि पल भर का भी समय गँवाए बिना राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा और राष्ट्रीय शिक्षण समिति एवं अंतर-अमेरिका समिति उन पायनियरों और भ्रमणशील शिक्षकों की तलाश पूरे जोर-शोर से शुरू करें जो एक नए प्रायद्वीप में जाकर नए युग के आगमन की बिगुल बजाने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

जो लोग ऐसे महान दायित्व निभाने जा रहे हैं, और जो आत्मत्याग की ऐसी भावना झलकाने वाले हैं, उन्हें अपनी यत्किंचित सेवा प्रदान करने की अपनी अभिलाषा में मैं केवल कुछ उपयोगी सुझाव देने का प्रयास कर सकता हूँ जिनसे मेरा विश्वास है कि अत्यंत निकट भविष्य में प्राप्त की

जाने वाली महान उपलब्धियों का पथ प्रशस्त होगा। अत्यंत प्राथमिक महत्व को रेखांकित करने वाले इस कार्य की दिशा में पूरे समुदाय को कृतसंकल्प होकर अपना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। बहाई शिक्षकों की संख्या में अच्छी-खासी वृद्धि की जानी चाहिए, चाहे वे किसी स्थान विशेष पर जाकर स्थायी रूप से रहने वाले शिक्षक हों या भ्रमणशील शिक्षक। उनके लिए उपलब्ध कराए जाने वाले भौतिक संसाधनों में भी वृद्धि होनी चाहिए और उनका प्रभावी रूप से उपयोग किया जाना चाहिए। उन्हें ज्यादा विस्तृत साहित्य-सामग्रियों से सुसज्जित किया जाना चाहिए। ऐसी साहित्य-सामग्रियों को वितरित करने में उनकी सहायता के लिए व्यापक प्रचार शुरू किया जाना चाहिए, उस प्रचार को केन्द्रीय रूप से सुगठित किया जाना चाहिए और उसका पूरी ताकत से संचालन किया जाना चाहिए। इन देशों में निहित क्षमताओं का यत्नपूर्वक लाभ उठाया जाना चाहिए और सुव्यवस्थित तरीके से उनका विकास किया जाना चाहिए। इन देशों में विद्यमान अलग-अलग प्रकार की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों द्वारा उत्पन्न की गई विभिन्न प्रकार की बाधाओं की गहन जाँच-पड़ताल की जानी चाहिए और दृढ़तापूर्वक उन पर विजय प्राप्त की जानी चाहिए। संक्षेप में कहें तो अमेरिकी बहाई समुदाय द्वारा अभी तक के इतिहास में आरम्भ किए गए सबसे बड़े शिक्षण अभियान की प्रगति और विकास के लिए एक व्यापक और ठोस आधार तैयार करने की दृष्टि से किसी भी अवसर की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए और कोई भी प्रयास छोड़ा नहीं जाना चाहिए।

बहाई धर्म के इतिहास, उसकी शिक्षाओं अथवा प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बहाई लेखों का सावधानीपूर्वक किया गया अनुवाद तथा बड़ी संख्या में और यथासम्भव इन ज्यादा-से-ज्यादा गणराज्यों में उनका वितरण, वो भी ऐसी भाषाओं में जो सबसे उपयुक्त और आवश्यक हों - ये कुछ ऐसे उपाय हैं जो इन क्षेत्रों में पायनियरों के आगमन के साथ ही सम्पन्न किए जाने वाले प्रमुख और अत्यावश्यक कार्य प्रतीत होते हैं। दिव्य योजना की एक पाती में अब्दुल-बहा ने लिखा है: *"किताबों और पुस्तिकाओं का इन देशों और द्वीपों की भाषाओं में अनुवाद किया जाना या लिखा जाना तथा सभी भागों, सभी दिशाओं में उनका प्रसार जरूरी है।"* जिन देशों में नागरिक अधिकारियों अथवा अन्य प्रभावशाली वर्गों द्वारा कोई आपत्ति न खड़ी की जाए वहाँ प्रभुधर्म के मर्मस्पर्शी इतिहास की कतिपय विशेषताओं और इसकी शिक्षाओं की विविधता और उसकी प्रकृति के बारे में लोगों पर प्रभाव डालने के उद्देश्य से सावधानीपूर्वक लिखे गए लेखों और पत्रों द्वारा इस उपाय को प्रेस के विभिन्न अंगों में प्रकाशन के माध्यम से सशक्त बनाया जाना चाहिए।

मुझे लगता है कि इन क्षेत्रों में कार्य करने वाले सभी लोगों को, चाहे वे भ्रमणशील शिक्षक हों या स्थायी रूप से वहाँ रह कर सेवा करने वाले, उनका मुख्य और सतत सरोकार इस बात से होना चाहिए कि वे उस जनसंख्या में निवास करने वाले सभी लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण ढंग से घुल-मिलकर रहें, चाहे वे किसी भी वर्ग, मत-सम्प्रदाय, राष्ट्रीयता या वर्ण के हों। उन्हें चाहिए कि वे उनके विचारों, उनकी अभिरुचियों और आदतों से वाकिफ हों, उनके लिए किस सर्वाधिक उपयुक्त

तरीके का इस्तेमाल किया जा सकता है इसका अध्ययन करें, धैर्य और बुद्धिमत्ता के साथ ऐसे थोड़े-से लोगों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें जिन्होंने उल्लेखनीय क्षमता और ग्रहणशीलता का परिचय दिया है, तथा अत्यंत दयालुता की भावना के साथ उनके दिलों में ऐसे प्रेम, उत्साह और भक्ति-भावना का बीजारोपण करें कि अपनी बारी आने पर वे अपने-अपने स्थानों में प्रभुधर्म के स्वतंत्र और आत्म-निर्भर उन्नायक बन सकें। बहाउल्लाह ने हमें शिक्षा दी है कि *"हे बहा के लोगों! मित्रता और बन्धुता की भावना के साथ सभी लोगों से हिल-मिलकर रहो। यदि तुम्हें किसी सत्य का ज्ञान है, यदि तुम्हारे पास कोई ऐसा रत्न है जो दूसरों के पास नहीं है, तो अत्यंत दयालुता और सदिच्छा के साथ उसे दूसरों में बाँटो। यदि उसे स्वीकार कर लिया जाता है, यदि उसका लक्ष्य पूरा हो जाता है, तो तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया। यदि कोई उसे अस्वीकार करता है तो उसे उसके हाल पर छोड़ दो, और ईश्वर से याचना करो कि वह उसका मार्गदर्शन करे। सावधान, तुम उसके साथ कठोरता का व्यवहार न करो। मृदुल वाणी लोगों के हृदयों को आकर्षित करने वाली लौहमणि के समान है। यह चेतना का आहार है, यह शब्दों को अर्थ का जामा पहनाती है, यह बोध और बुद्धिमत्ता के प्रकाश का स्रोत है।"*

इसके अतिरिक्त, एक और प्रयास है जो किया जा सकता है और किया जाना चाहिए - केवल बहाई संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा ही नहीं बल्कि धर्म के भावी संदेशवाहकों और व्यक्तिगत रूप से उन बहाइयों द्वारा भी जिन्हें उन सुदूर तटों तक पहुँचने या उस प्रायद्वीप में बसने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका। यह प्रयास होना चाहिए सामने आने वाले ऐसे हर अवसर का उपयोग करने का प्रयास जिनके माध्यम से उन लोगों से परिचय प्राप्त करने और प्रभुधर्म के प्रति उनकी सच्ची उत्सुकता जगाने का काम किया जा सके जो या तो उन देशों के नागरिक हैं या किसी भाँति उनसे जुड़े हुए हैं - चाहे उनकी अभिरुचि या व्यवसाय का क्षेत्र कुछ भी हो। उनके प्रति दर्शाई गई दयालुता या उन्हें दिए जा सकने वाले साहित्य, अथवा उनके साथ स्थापित किए जा सकने वाले किसी भी सम्पर्क के माध्यम से, अमेरिका के धर्मानुयायी उनके हृदयों में ऐसे बीज बो सकते हैं जो भविष्य में अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर अंकुरित हो सकते हैं और अप्रत्याशित परिणाम उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु हर वक्त यह सावधानी भी बरती जानी चाहिए कि प्रभुधर्म के अंतर्राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने की उत्सुकता में वे अपने मूल उद्देश्य का ही गला न घोंट दें, और उन्हें ऐसे किसी भी कार्य से बचना चाहिए जिन्हें धर्म-परिवर्तन का लोभ देने और जिन लोगों को वे प्रभुधर्म की ओर आकर्षित करना चाहते हैं उनपर अनुचित दबाव डालने के गलत अर्थ में लिया जा सके।

पायनियरों के लिए अपील

यद्यपि वे वर्तमान समय में अनेक अत्यावश्यक और सतत बढ़ते हुए मामलों में व्यस्त और अत्यधिक दबाव की स्थिति में हैं, तथापि मैं खास तौर पर उन अमेरिकी धर्मानुयायियों से अपील करना चाहूँगा जो चाहे किसी भी पेशे या व्यवसाय में हों, व्यापारी हों, स्कूल शिक्षक हों, वकील,

डॉक्टर, लेखक, कार्यालयों के कर्मचारी या ऐसे किसी भी कार्य में निरत हों, कि जिनके लिए भी यह सम्भव हो वे स्थायी रूप से ऐसे देशों में अपना निवास बनाएँ जहाँ उन्हें अपनी आजीविका कमाने के समुचित साधन उपलब्ध हो सकें। ऐसा करके वे शिक्षण कोष पर निरन्तर बढ़ते हुए दबाव को कम कर सकेंगे जिसे, अपने सीमित आयामों को देखते हुए, इस वृहत उपक्रम के विकास के लिए यात्रा एवं ऐसे अन्य खर्चों के लिए काम में लाया जा सके जिनका व्यय अन्य माध्यमों से उपलब्ध नहीं हो सकता है। यदि ऐसे दुर्लभ और पवित्र सौभाग्य का लाभ उठा पाना उन्हें असम्भव लगे तो, बहाउल्लाह के इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए, उनमें से प्रत्येक को अपने-अपने उपलब्ध साधनों के अनुसार, अपना एक नायब या प्रतिनिधि (डिप्युटी) नियुक्त करना चाहिए जो उनकी ओर से इस नेक कार्य को पूरा करने के लिए उठ खड़ा होगा। बहाउल्लाह ने कहा है: *"अपनी शक्ति ईश्वर के धर्म के प्रसार में लगाओ। जो कोई भी ऐसे उच्च कार्य को करने के योग्य हो उसे इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। जो कोई ऐसा करने में सक्षम न हो, उसका कर्त्तव्य है कि वह ऐसे व्यक्ति को प्रतिनियुक्त करे जो उसके बदले में प्रभु के उस 'प्रकटीकरण' की घोषणा करेगा जिसकी सामर्थ्य ने सर्वाधिक शक्तिशाली संरचनाओं की भी चूलें हिला दी हैं, हर पर्वत को धूल-धूसरित कर दिया है और हर आत्मा को विस्मित करके रख दिया है।"*

जहाँ तक उन लोगों का सवाल है जो अपना घर-बार और देश छोड़ने और उन क्षेत्रों में - स्थायी अथवा अस्थायी रूप से - अपनी सेवाएँ दे पाने में सक्षम हो पाए हैं, उनके लिए एक विशेष कर्त्तव्य है जिसका उन्हें हमेशा ध्यान रखना चाहिए। एक ओर तो उनका एक प्रमुख उद्देश्य यह होना चाहिए कि उनके कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए खास तौर पर उत्तरदायी राष्ट्रीय समिति से वे लगातार सम्पर्क बनाए रखें और, दूसरी ओर, हर सम्भव साधन का प्रयोग करते हुए तथा उन देशों में अपने साथी धर्मानुयायियों के साथ अत्यंत हेलमेल के साथ सहयोग करें - चाहे वे किसी भी क्षेत्र में प्रयासरत हों, उनका जो भी पद या रुतबा, योग्यता या अनुभव हो। अपने प्रथम कर्त्तव्य को पूरा करते हुए उन्हें आवश्यक उत्प्रेरण प्राप्त होगा तथा वे आवश्यक दिशानिर्देश प्राप्त करेंगे जिससे वे अपने मिशन को प्रभावी तरीके से सम्पादित करने में सक्षम होंगे। साथ ही, उस समिति को दी गई अपनी नियमित रिपोर्टों के माध्यम से वे अपने साथी धर्मानुयायियों के समूह को अपने कार्यकलापों की नवीनतम उपलब्धियों के समाचार भी देते रहेंगे। अपने दूसरे कर्त्तव्य को पूरा करके वे अपने सर्वसामान्य प्रयास का सुचारु रूप से जारी रहना सुनिश्चित करेंगे, उसकी प्रगति को सहज बनाएँगे तथा उसके विकास को बाधित कर सकने वाली किन्हीं भी अवांछित घटनाओं की रोकथाम कर सकेंगे। अंतर-अमेरिका समिति, जिसे ऐसे दूरगामी उपक्रम को सुगठित करने का प्रथम दायित्व सौंपा गया है, तथा उन सौभाग्यशाली पायनियरों के बीच जो कि यथार्थ रूप से उस उपक्रम का कार्य-सम्पादन कर रहे हैं तथा दूर-दूर तक उसकी शाखा-प्रशाखाओं का विस्तार कर रहे हैं, और इसके साथ ही स्वयं इन पायनियरों के बीच, गहन सम्पर्क और हेलमेल

भरा सम्बन्ध बनाए रखने से तात्कालिक लाभ तो प्राप्त होंगे ही, साथ ही उन अजन्मी पीढ़ियों के सामने भी प्रेरक उदाहरण पेश होगा जो कि वर्तमान समय में आरम्भ किए गए कार्यों को आगे बढ़ाएँगे - उन कार्यों को जिनकी जटिलताएँ भविष्य में और अधिक बढ़ेंगी।

खास तौर पर एक ऐसे समय में जबकि इन देशों में लागू कई प्रतिबंधों के कारण काफी संख्या में बहाई पायनियरों के लिए उन राज्यों में अपना निवास बनाना और अपनी आजीविका कमाना कठिन हो गया है, यह काम असाधारण रूप से मूल्यवान और महत्वपूर्ण होगा कि कुछ धर्मानुयायी जिनकी आय कम होते हुए भी पर्याप्त हो, वे उन पायनियरों को आत्मनिर्भरता प्रदान कर सकें ताकि वे अनिश्चित काल तक उन देशों में रहकर अपनी सेवाएँ दे सकें। इस कार्य के लिए अत्यधिक त्याग, साहस और सतत परिश्रम की जरूरत है। परन्तु उसका महत्व वर्तमान समय में ठीक से आँका नहीं जा सकता और न ही उस असीम पुरस्कार का पर्याप्त वर्णन किया जा सकता है जो इन गुणों को झलकाने वालों को प्राप्त होगा। स्वयं बहाउल्लाह ने प्रमाणित किया है कि *"जिन लोगों ने अपना देश छोड़कर हमारे धर्म का सन्देश देने का व्रत लिया है, उन्हें निष्ठावान चेतना अपनी शक्ति से सुदृढ़ करेगी .....मेरे जीवन की सौगन्ध कोई भी कार्य चाहे वह कितना ही महान क्यों न हो, इससे तुलना नहीं कर सकता, सिवाय उन कार्यों के जिन्हें सर्वशक्तिशाली, सर्वमहिमामय ईश्वर ने निर्धारित किया है। ऐसी सेवा वास्तव में सभी सत्कर्मों का सिरमौर है और प्रत्येक शुभ कार्य का आभूषण।"* यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि ऐसे महान पारितोषिक को केवल भविष्य के जीवन के एक सारभूत आशीर्वाद के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि एक ऐसे ठोस लाभ के रूप में जो कि इस भौतिक संसार में केवल साहस, आस्था और अध्यवसाय से ही प्राप्त हो सकता है। सुदूर ऑस्ट्रेलेशिया प्रायद्वीप और हाल के दिनों में बुल्गेरिया तथा कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रतिनिधि धर्मानुयायियों ने जो ठोस आध्यात्मिक एवं प्रशासनिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं वे निर्विवाद रूप से उन पुरस्कारों की घोषणा करती हैं जो ऐसी आदर्श शूरता के माध्यम से इस संसार में भी प्राप्त किए जा सकते हैं। बहाउल्लाह ने अपने उन प्रियजनों की प्रशंसा करते हुए जिन्होंने *"उनके नाम पर और उनके गुणगान के लिए देश-देशांतरों की यात्राएँ की हैं"* एक स्मरणीय अनुच्छेद में लिखा है कि *"जिन्होंने भी उनका सत्संग प्राप्त किया है वे उनसे मिलन का गौरव प्राप्त करेंगे और हर भूभाग उनकी स्मृति के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा।"*

प्रबल हिस्सेदारी

इस समय मैं अभिभूत हूँ, खास तौर पर प्रभुधर्म के आदिकाल से ही बहाउल्लाह की सेविकाओं द्वारा किए गए योगदान को याद करके - एक ऐसा योगदान जो पुरुषों से बिल्कुल अलग किस्म का है और जो उन्होंने अकेले ही इस पृथ्वी के दूर-दूर तक फैले अनेक और विविधतापूर्ण देशों में प्रभुधर्म के द्वार खोलकर दिया है। मैं न केवल धर्म-संदेश के प्रसार के लिए झलकाए गए उनके इस उत्साह के प्रति आदर व्यक्त करना चाहता हूँ जो कि वस्तुतः बहाउल्लाह के धर्म के जन्म के लिए

उत्तरदायी शूरवीर पुरुषों की याद ताजा कर देता है, बल्कि सम्पूर्ण विश्व में बहाई धर्म के संस्थापन के कार्य में पश्चिम की महिलाओं द्वारा दिए गए ऐसे अमूल्य योगदान के महत्व को भी रेखांकित करना चाहता हूँ। स्वयं अब्दुल-बहा ने प्रमाणित किया है: *"इस पवित्र धर्मयुग को विशेषता प्रदान करने वाले चमत्कारों में से एक यह है कि प्रभुधर्म में शामिल किए जाने पर स्त्रियों ने पुरुषों के मुकाबले कहीं अधिक साहस का परिचय दिया है।"* ऐसा महत्वपूर्ण और भव्य प्रमाण खास तौर पर पश्चिमी मुल्क के संदर्भ में लागू होता है, और यद्यपि इस कार्य ने अभी तक प्रचुर और आश्वासन भरी संपुष्टि प्राप्त कर ली है किन्तु आने वाले वर्षों में जबकि अमेरिकी धर्मानुयायी सात वर्षीय योजना के अंतर्गत अपने कार्यकलापों के सर्वाधिक गौरवमय चरण में प्रवेश करेंगे, इसे और अधिक सशक्त बनाए जाने की जरूरत है। अब्दुल-बहा के शब्दों में जिस "साहस" ने बीते हुए समय में उनकी उपलब्धियों को रेखांकित किया है, उसे आने वाले समय में ग्रहण नहीं लगना चाहिए जबकि वे और अधिक महान एवं प्रशंसनीय उपलब्धियों की दहलीज पर खड़ी होंगी। नहीं, बल्कि कालक्रम में तथा लैटिन अमेरिका के सम्पूर्ण विशाल और अछूते प्रदेशों में उस साहसिक भावना को और अधिक दृढ़ता से झलकाया जाना चाहिए तथा प्रिय प्रभुधर्म के लिए अब तक प्राप्त की गई विजयों से भी अधिक प्रबल सफलताएँ प्राप्त की जानी चाहिए।

बहाई युवाओं से

इसके अतिरिक्त, जब मैं ऐसे व्यापक अभियान द्वारा युवाओं की उत्कंठा और साहसिकता भरी चेतना पर पड़ रहे उन प्रबल एवं जीवन्तकारी प्रभावों पर नजर डालता हूँ जो उन्हें बहाउल्लाह के धर्म की सेवा के लिए अनुप्राणित कर रहे हैं तो मुझे लगता है कि खास तौर पर अमेरिका के बहाई युवाओं का भी उद्बोधन किया जाना चाहिए। यद्यपि उनमें अनुभव की कमी है और उनके पास पर्याप्त संसाधन भी नहीं हैं परन्तु फिर भी उनमें निहित साहसिक भावना तथा अभी तक उन्होंने सतत रूप से जिस ऊर्जस्विता, सजगता और आशावादिता की झलक दिखाई है वह उन्हें उन देशों में अपने साथी युवाओं की निष्ठा हासिल करने के कार्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के योग्य बना देती है। इन दोनों ही महाद्वीपों के समक्ष बहाउल्लाह के नवजात धर्म की संस्थाओं और उनके जीवन को अनुप्राणित करने वाली ऊर्जस्वित और युवा शक्ति को झलकाने का इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता कि हर नस्ल, राष्ट्रीयता और वर्ग के बहाई युवाओं को बहाई कार्यकलापों के शिक्षण और प्रशासन सम्बन्धी पहलुओं में सुविचारित, सतत् और प्रभावी भागीदारी निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। ऐसी भागीदारी के माध्यम से ही प्रभुधर्म के उन शत्रुओं और आलोचकों को जो प्रभुधर्म और इसकी संस्थाओं के विकास की गति को संदेह और प्रतिशोध भरी निगाह से देखते आ रहे हैं, इस अकाट्य सच्चाई का कायल बनाया जा सकेगा कि ऐसा धर्म गहन रूप से जीवन्त तथा अंदरूनी तौर पर मजबूत है और उसका भविष्य सुरक्षित हाथों में है। मेरी आशा है, और वस्तुतः मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि ऐसी भागीदारी केवल प्रभुधर्म की गरिमा, उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने में ही कारगर सिद्ध न हो बल्कि उससे बहाई समुदाय के युवा

सदस्यों के आध्यात्मिक जीवन में भी एक सुदृढ़ परिवर्तन आए और उनकी शक्तियाँ इस तरह आलोड़ित हो उठें कि वे और अधिक परिपूर्णता के साथ अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को झलकाने के काबिल बन सकें तथा बहाउल्लाह के धर्म की छत्रछाया तले अपने आध्यात्मिक विकास के अगले चरण का अध्याय शुरू कर सकें।

पनामा की खास स्थिति

अब्दुल-बहा की लेखनी द्वारा अंकित किए गए चार्टर के प्रावधानों के प्रति निष्ठावान रहते हुए, मुझे लगता है यह मेरा कर्त्तव्य है कि जिन्हें यह जिम्मेवारी सौंपी गई है उन लोगों का खास ध्यान मैं पनामा गणराज्य की त्वरित जरूरतों और उसकी विशिष्ट स्थिति की ओर आकर्षित करूँ जो कि उत्तरी अमेरिका में प्रभुधर्म के हृदय-स्थल के निकट होने तथा दो प्रायद्वीपों के बीच एक सेतु के रूप में अपनी खास भौगोलिक अवस्थिति दोनों ही कारणों से महत्वपूर्ण है। अब्दुल-बहा ने दिव्य योजना की एक पाती में लैटिन राज्यों की ओर संकेतित करते हुए लिखा है: *"ये सभी देश महत्वपूर्ण हैं, लेकिन पनामा गणराज्य की स्थिति खास है जहाँ पनामा नहर के माध्यम से अटलांटिक और प्रशान्त महासागरों का संगम होता है। यह अमेरिका से दुनिया के अन्य प्रायद्वीपों में आने-जाने का एक केन्द्र है और भविष्य में वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण होने वाला है।"* उन्होंने पुनः लिखा है: *"इसी तरह, तुम लोगों को पनामा गणराज्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह बिंदु है जहाँ पनामा नहर के माध्यम से पूरब और पश्चिम स्वयं को एकता की दहलीज पर पाते हैं, और फिर वह दो महासागरों के बीच भी स्थित है। वह स्थान भविष्य में बहुत ही महत्वपूर्ण होगा। वहाँ बहाई शिक्षाओं के संस्थापन से पूरब और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, एकसूत्र में बँधेंगे।"* ऐसी लाभदायक अवस्थिति निस्संदेह अमेरिकी बहाई समुदाय द्वारा उस पर विशेष और तुरन्त ध्यान दिए जाने की अपेक्षा रखती है। अब जबकि मेक्सिको गणराज्य में प्रभुधर्म के द्वार पहले ही खुल चुके हैं और उसकी राजधानी में एक आध्यात्मिक सभा सुगठित हो चुकी है, तब बहाउल्लाह के धर्म की पैठ उसके एक दक्षिणवर्ती पड़ोसी देश में होना एक सहज और तर्कसंगत कदम है और आशा की जानी चाहिए कि यह काम कठिन नहीं होगा। एक ऐसे गणराज्य में जो कि आध्यात्मिक और भौगोलिक दोनों ही दृष्टियों से इतनी महत्वपूर्ण स्थिति में है वहाँ, भले ही एक छोटे-से, बहाई ग्रुप की स्थापना के लिए हर सम्भव प्रयास किया जाना चाहिए। इस कार्य के लिए किया गया कोई भी त्याग बहुत बड़ा नहीं होगा। यह एक ऐसा ग्रुप होगा जो कि अब्दुल-बहा के शब्दों में ऐसी क्षमता से सम्पन्न होगा कि अपने गठन के साथ ही वह आभा-साम्राज्य की अपार कृपाओं को आकर्षित करने का साधन बनेगा और ऐसी आश्चर्यजनक तेजी से विकास करेगा कि वे लोग भी हैरत में पड़ जाएँगे और प्रशंसा से भर उठेंगे जो बहाउल्लाह के धर्म की शक्ति और सामथ्र्य के ऐसे उद्वेलनकारी प्रमाण पहले भी देख चुके हैं। भविष्य के सभी पायनियरों तथा अंतर-अमेरिका समिति के सदस्यों द्वारा, निस्संदेह, इस सौभाग्यशाली गणराज्य की आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करने के कार्य पर प्राथमिक ध्यान दिया जाना चाहिए, किन्तु साथ ही साथ ग्वाटेमाला, होंडरास, अल सेल्वाडोर, निकारागुआ, एवं कोस्टा रिका इत्यादि गणराज्यों में भी लोगों को प्रभुधर्म से

परिचित कराने का, भले ही केवल आधारभूत रूप से ही सही, कार्य भी भरपूर प्रयास के साथ किया जाना चाहिए। इससे उत्तरी अमेरिकी प्रायद्वीप में इसकी मातृ आध्यात्मिक सभा के साथ उनका एक अटूट सम्पर्क कायम होगा। बाधाएँ चाहे जितनी भी चुनौतीपूर्ण हों उन पर विजय पाई जानी चाहिए, इसके लिए बहाई कोष को उदारतापूर्वक खर्च किया जाना चाहिए और उसके जागरण के लिए अलग से मूल्यवान एवं गहन प्रयास किए जाने चाहिए। मेरा पूरा विश्वास है कि उसके हृदय-स्थल में प्रभुधर्म के एक और केन्द्र का निर्माण नई दुनिया में बहाउल्लाह के धर्म के रचनात्मक काल के इतिहास में एक-एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित होगा। इससे असीम अवसर उत्पन्न होंगे, प्रयासों में तेजी आएगी और इस साहसिक कार्य को सम्पन्न करने वाले लोगों के जीवन सम्बलित होंगे। साथ ही, इस कार्य से आस-पास और दूर-दराज के एकाकी ग्रुपों के दिलों में अथाह उत्साह और अपार आनन्द का संचार होगा, और उनके लोगों के जीवन और भावी विकास पर सूक्ष्म किन्तु सशक्त आध्यात्मिक प्रभाव दृष्टिगोचर होंगे।

अथाह विवेक, सर्वबाध्यकारी इच्छा

परमप्रिय मित्रो! बहाई युग की प्रथम शताब्दी के इन अन्तिम वर्षों में, ऐसा ही है वह परिदृश्य जो अमेरिकी बहाई समुदाय के समक्ष उपस्थित है और जो उनके संसाधनों के सामने एक चुनौती बनकर खड़ा है। उनके दायित्वों और कर्त्तव्यों के समुचित निर्वहन की दृष्टि से ऐसी ही कुशलताओं और योग्यताओं की अपेक्षा है। वह योजना जो उनसे पूरे दमखम के साथ उठ खड़े होने की अपेक्षा रखती है, उसकी आशाएँ, सम्भावनाएँ और उसके लक्ष्य ऐसे ही हैं। किसे पता कि तेजी से गुजरते हुए इन बचे-खुचे वर्षों के गर्भ में ऐसी अकल्पनीय रूप से प्रचण्ड घटनाएँ नहीं छिपी होंगी, ऐसी अग्नि-परीक्षाएँ निहित नहीं होंगी जैसीकि मानवजाति के अनुभव में अभी तक नहीं आई होंगी, या ऐसे संघर्ष सामने नहीं आएँगे जो अतीत के किसी भी संघर्ष से अधिक विनाशकारी होंगे! परन्तु खतरे चाहे जितने भी गम्भीर क्यों न हों, उन्हें कदापि इस नवजात धर्म की प्रभा को धूमिल नहीं करना चाहिए। संघर्ष और उलझन की स्थिति चाहे कितनी भी विलापकारी क्यों न हो, उससे उनकी दृष्टि धुँधली नहीं होनी चाहिए। परीक्षाएँ चाहे जितनी भी यातनाएँ भरी हों, उनका दृढ़ संकल्प नहीं टूटना चाहिए। अस्वीकृतियों का कोलाहल चाहे जितना भी प्रबल हो, उनकी निष्ठा नहीं डिगनी चाहिए, और उपद्रवों के बवंडर चाहे जितना भी तूफान क्यों न खड़ा कर दें किन्तु उन्हें अपने सन्मार्ग से नहीं हटना चाहिए। यह वर्तमान योजना हमारे स्वर्गीय मास्टर (अब्दुल-बहा) की आशाओं के अंकुर सँजोये हुए है, इसे पूरा किया ही जाना चाहिए, अथक रूप से पूरा किया जाना चाहिए, चाहे भविष्य में उन पर जो भी मुसीबतें टूटने वाली हों और उनके देश या दुनिया को उद्वेलित कर देने वाले चाहे जितने भी संकट इस योजना से उनका ध्यान हटाने पर आमादा क्यों न हों। अपने संकल्प को त्यागने और अपने दायित्व को भुलाने की बात तो दूर रहे, इसके विपरीत उन्हें इन घोर परिस्थितियों के आघात झेलने के बावजूद कभी भी यह नहीं भूलना

चाहिए कि दुनिया को हिला देने वाले ये संकट और उनके साथ ही ईश्वर द्वारा निर्धारित उनके दायित्व का क्रमिक रूप से फलीभूत होना अपने आप में विधाता की योजना का ही अंग है, एक अकाट्य विवेक द्वारा तैयार की गई रूपरेखा है, एक सर्वबाध्यकारी 'इच्छा' का उद्देश्य है, एक ऐसी 'इच्छा' का जो अपने ही रहस्यमय तरीके से अपने धर्म के भविष्य और लोगों की नियति दोनों को ही नियंत्रित करती है। उत्थान और पतन, सुघटन और विघटन, व्यवस्था और अराजकता की ये साथ-साथ चलने वाली, एक-दूसरे पर अपने सतत और पारस्परिक प्रभाव डालने वाली प्रक्रियाएँ और कुछ नही बल्कि एक वृहत 'योजना' के पहलू हैं। ये दोनों प्रक्रियाएँ अविभाज्य हैं, जिनका स्रोत है परमेश्वर, जिसके प्रणेता हैं बहाउल्लाह, जिसका रंगमंच है यह सम्पूर्ण धरती, और जिसका चरम उद्देश्य है मानवजाति की एकता और सभी मनुष्यों के बीच शांति।

ऐसे ही विचारों को धारण करके सम्पूर्ण बहाई समुदाय का संकल्प और सुदृढ़ होना चाहिए, उनके संशय छिन्न-भिन्न होने चाहिए और उस दिव्य चार्टर या घोषणा के एक-एक प्रावधान को पूरा करने के लिए उन्हें नई समर्पण भावना के साथ उन्हें उठ खड़ा होना चाहिए जिस चार्टर की रूपरेखा उनके लिए स्वयं अब्दुल-बहा की लेखनी द्वारा तैयार की गई है। जैसाकि पहले ही कहा जा चुका है, सात वर्षीय योजना केवल एक आरम्भिक चरण है, इस चार्टर में निहित अभिप्रायों के प्रकटीकरण की दिशा में मात्र एक सोपान। उनकी लेखनी के स्पंदन से मूल रूप से उत्पन्न संवेग, अर्थात अर्थात सात वर्षीय योजना रूपी मशीनरी जो कि अब तेजी से आग बढ़ रही है, उसे अगली शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में और अधिक गति प्रदान की जानी चाहिए और अमेरिकी बहाई समुदायों को उसके माध्यम से अवश्य ही प्रेरित होना चाहिए कि वे इस दिव्य योजना के प्रकटीकरण के क्रम में अगले चरणों का सूत्रपात करें - उन चरणों का जो उस समुदाय को उत्तरी गोलार्ध के दायरों से भी बाहर ले जाएगा, उन भूभागों और लोगों की ओर जहाँ उस समुदाय की बहादुरी के सुन्दरतम कार्य किए जाने हैं।

प्रभु-साम्राज्य का आविर्भाव

कोई भी व्यक्ति जिसके मन में इस आदर्श समुदाय द्वारा अनुसरण किए जाने वाले मार्ग को लेकर तनिक भी सन्देह हो उसे सदा-सर्वदा के लिए "दिव्य योजना की पाती" में निहित एवं संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के समस्त समुदाय को सम्बोधित अब्दुल-बहा के इन शब्दों पर मनन करना चाहिए: *"तुम्हारी सफलता का पूरा पैमाना अभी भी प्रकट नहीं हुआ है, उसके महत्व को अभी भी पूरी तरह समझा नहीं गया है। बहुत ही जल्द, तुम अपनी ही आँखों से देखोगे कि तुममें से प्रत्येक अपने देश के आकाश में किस तरह एक देदीप्यमान सितारे की तरह दिव्य मार्गदर्शन की प्रभा झलकाओगे और वहाँ के लोगों को अनन्त जीवन का गौरव प्रदान करोगे .....तुम्हारी भावी उपलब्धियों का दायरा अभी भी प्रकट नहीं हुआ है। मेरी यह उत्कट आशा है कि निकट भविष्य में*

तुम्हारी उपलब्धियों के परिणामों से यह पूरी पृथ्वी उद्वेलित और आंदोलित हो उठेगी। अतः, अब्दुल-बहा ने तुमसे जो आशा सँजो रखी है वह यह है कि अमेरिका में तुम्हारे प्रयासों को जो सफलता मिली है वही सफलता तुम्हें दुनिया के अन्य हिस्सों में भी प्राप्त हो, और तुम्हारे माध्यम से प्रभुधर्म की ख्याति पूरब से पश्चिम तक फैल जाए और धरती के सभी पाँच महाद्वीपों में 'आतिथेयों के प्रभु' के साम्राज्य के अवतरण की घोषणा गुंजित हो उठे।" उन्होंने यह महत्वपूर्ण बात भी जोड़ी है कि *"जिस क्षण अमेरिका के धर्मानुयायी इस दिव्य सन्देश को अमेरिकी तटों से बाहर यूरोप, एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलेशिया महाद्वीपों और प्रशान्त महासागर के द्वीपों जैसे सुदूर क्षेत्रों तक ले जाएँगे, उसी क्षण यह समुदाय स्वयं को एक अनन्त साम्राज्य के सिंहासन पर सुरक्षित रूप से आसीन पाएगा। तब दुनिया के सारे लोग यह देखेंगे कि यह एक आध्यात्मिक रूप से प्रकाशित और दिव्य मार्गदर्शन-प्राप्त समुदाय है। और तब सारी धरती इसकी महानता और भव्यता के गुणगान से गुंजित हो उठेगी।"*

ऐसे वचन जिन्हें सात वर्षीय योजना की विजयी पूर्णाहुति भी पूरा नहीं कर सकती, ऐसी प्रतिज्ञा भरी इन पंक्तियों को पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति एक ऐसे उन्नत एवं प्रचुर वरदान से सम्पन्न समुदाय से यह अपेक्षा नहीं करेगा कि वह निकट भविष्य में प्राप्त होने वाली किसी भी सफलता से संतुष्ट होकर बैठा रहेगा। ऐसी सफलताएँ पाकर आराम से बैठ जाना वस्तुतः उस समुदाय पर अब्दुल-बहा द्वारा किए गए भरोसे के साथ विश्वासघात करना होगा। उन विजय-श्रृंखला को बीच में ही तोड़ देना जो उस समुदाय को सर्वोच्च विजय के उस मुकाम तक ले जाएगी जब उसकी उपलब्धियों के परिणामों से *"सारी धरती उद्वेलित और आंदोलित हो उठेगी"*, अब्दुल-बहा की आशाओं पर तुषारापात करने के बराबर होगा। हिचकना और अमेरिकी महाद्वीप में इतनी भव्यता से घोषित प्रभुधर्म के सन्देश को *"यूरोप, एशिया, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलेशिया महाद्वीपों और प्रशान्त महासागर के द्वीपों जैसे सुदूर क्षेत्रों तक"* फैलाने से चूक जाना उस समुदाय को *"अनन्त साम्राज्य के सिंहासन पर सुरक्षित रूप से आसीन"* होने के लाभ से वंचित कर देगा। *"धरती के सभी पाँच महाद्वीपों में 'आतिथेयों के प्रभु' के साम्राज्य के अवतरण की घोषणा"* करने के सम्मान को नकार देना *"महानता और भव्यता के गुणगान"* की उन ध्वनियों को शान्त कर देगा जो अन्यथा *"सारी धरती पर"* गुंजित होती।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि अमेरिका के धर्मानुयायी - वे जो कि बहाउल्लाह के धर्म के राजदूत हैं - ऐसी हिचक, चूक या उपेक्षा का प्रदर्शन कभी नहीं करेंगे। (अब्दुल-बहा के) उस महान विश्वास के प्रति निष्ठाहीनता कदापि नहीं दर्शाई जाएगी, वे आशाएँ कभी टूटेंगी नहीं, ऐसा सौभाग्य भरा अवसर वे कभी नहीं गँवाएगें और न ही वे गुणगान कभी अनबोले रह जाएँगे। नहीं, बल्कि इस आशीर्वादित, इस बारम्बार आशीर्वादित, समुदाय की वर्तमान पीढ़ी अपनी शक्तियों का निरन्तर

विकास करते हुए आगे बढ़ेगी और प्रथम शताब्दी के समाप्त होते-होते, उनकी जो नई पीढ़ी सामने आएगी, उसे वे दिव्य मार्गदर्शन का वह प्रदीप थमा जाएँगे जो उसे बुझाने को आतुर तूफानी हवाओं के आघात से भी कभी धूमिल नहीं होगी, ताकि अपनी बारी आने पर वह आने वाली पीढ़ी, अब्दुल-बहा की इच्छा और उनके आदेश के प्रति अपनी निष्ठा झलकाते हुए, उस प्रदीप को उसी पौरुष, उसी आस्था, उसी उत्साह के साथ धरती के सुदूर अंधकारमय कोनों तक ले जाएँगे।

परमप्रिय मित्रों! यद्यपि मैं बहुत उत्सुक हूँ कि आपके दिव्य-निर्धारित और सतत् रूप से बढ़ते हुए दायित्व में आप सबको अपनी शक्तिभर सहायता प्रदान कर सकूँ, किन्तु मैं इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकता कि इस निर्णायक घड़ी में आप सबका विशेष ध्यान इन अविनाशी अनुच्छेदों की ओर आकर्षित करूँ जो ज्यादातर बहाउल्लाह के उन लेखों से लिए गए हैं जो अभी तक प्रकाशित नहीं हो सके हैं और न ही उनका अनुवाद हो पाया है। बहाउल्लाह के ये वचन जिनमें चाहे वे अपने प्रियजनों के पद की उच्चता या उनकी जिम्मेवारियों का वर्णन कर रहे हों, अथवा अपने धर्म की महानता का गुणगान, अथवा प्रभुधर्म का सन्देश देने के अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य को रेखांकित कर रहे हों, अथवा उन खतरों के बारे में आगाह कर रहे हों जिनका उन्हें पूर्वज्ञान था, उनके द्वारा दिए गए परामर्श, ध्वनित की गई चेतावनियाँ, वर्णित किए गए परिदृश्य, उनके आश्वासन और वायदे - इन सभी संदर्भों में बहाउल्लाह की उदात्त वाणी के ये आदर्श उदाहरण, जिनमें से प्रत्येक उस दायित्व पर सीधा प्रभाव डालता है जिनका निर्वहन वस्तुतः आज अमेरिकी बहाई समुदाय कर रहा है या जो उनके सामने पड़े हैं, उनके ऐसे किसी भी सदस्य के मनो-मस्तिष्क पर - जो समुचित विनम्रता और अनासक्ति के साथ उनका परायण करेगा - ऐसा प्रबल प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकते जिनसे उनका सम्पूर्ण अस्तित्व प्रकाशित हो उठेगा और उनके दैनिक प्रयासों में गजब की स्फूर्ति भर उठेगी।

"हे मित्रो! उन सद्‌गुणों के प्रति असावधान न बनो जो तुम्हें प्रदान किए गए हैं, न ही अपनी महान नियति की उपेक्षा करने वाले बनो। .....तुम सब समझ के स्वर्ग के सितारे हो, वह बयार हो जो उषाःकाल में प्रवाहित होती है, वे मृदुवाही जलधाराएँ हो जिस पर सभी लोगों का जीवन निर्भर है, उस प्रभु की पवित्र पाती पर अंकित अक्षर हो।" "हे बहा के लोगों! तुम इस संसार पर प्रवाहित की गई वसन्त के मृदुल समीर हो। तुम्हारे माध्यम से हमने इस अस्तित्व के संसार को उस 'परम दयालु' के ज्ञान के आभूषण से विभूषित किया है। तुम्हारे माध्यम से इस संसार की मुख-मुद्रा को स्मृतियों के हार में पिरोया गया है, और उस प्रभु के प्रकाश की दमक कौंध उठी है। तू इस तरह से दृढ़ता का दामन थाम कि सभी व्यर्थ कल्पनाएँ एकदम से ओझल हो जाएँ। अपने अप्रतिबाधित प्रभु के नाम पर तू शक्ति के क्षितिज से तेजी से बाहर आ, और उसके सेवकों के सम्मुख, विवेक और वाकपटुता के साथ, उसके धर्म के सुसमाचार की घोषणा कर जिसकी आभा इस अस्तित्व के

संसार पर बिखेरी गई है। सावधान कि कोई भी चीज तुम्हें उस प्रभु की पाती पर सार्वभौम महिमा और सामर्थ्य के साथ अंकित 'गरिमा की लेखनी' द्वारा प्रस्तावित बातों का पालन करने में बाधित न करे। महान है उसका आशीर्वाद जिसने सत्य की शक्ति के साथ स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों के समक्ष उच्चारित इसकी तीक्ष्ण आवाज पर ध्यान दिया है। .....हे बहा के लोगों! वह सरिता जो वस्तुतः जीवन है, तुम्हारे निमित्त प्रवाहित कर दी गई है। प्रकटीकरण के प्रभु परमेश्वर में विश्वास न रखने वाले लोगों के बावजूद, तू मेरे नाम से उसके जल का पान कर। हमने तुम्हें अपने धर्म की भुजाएँ बनाई हैं। इस 'प्रवंचित' को विजयी बना जिसने अन्याय के कारसाजों के हाथों अनेक यातनाएँ झेली हैं। वह वस्तुतः उन सबकी मदद करेगा जो उसकी मदद करेंगे और उन सबका स्मरण करेगा जो उसका स्मरण करेंगे। इसकी साक्षी है यह पाती जिसने तुम्हारे सर्व-गरिमामय, सर्व-बाध्यकारी प्रभु की आभा बिखेरी है।" "धन्य हैं बहा के लोग! ईश्वर मेरा साक्षी है! वे सृष्टि के नयनों की सांत्वना हैं। उनके जरिये यह ब्रह्मांड विभूषित हुआ है और 'संरक्षित पाती' अलंकृत हुई है। ये वे लोग हैं जो 'सौन्दर्य के दिवानक्षत्र' की ओर अपने मुखड़े किए हुए, पूर्ण स्वतंत्रता की नौका पर सवार हुए हैं। कितना महान है उनका आशीर्वाद कि उन्होंने उसे प्राप्त किया है जिसकी कामना उनके सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ प्रभु ने की है। उनके प्रकाश से स्वर्गों को विभूषित किया गया है, और उन लोगों के मुखड़े प्रभासित किए गए हैं जिन्होंने उस प्रभु का सामीप्य प्राप्त किया है।" "उस सर्व-गरिमामय के सौन्दर्य को प्रताड़ित करने वाले दुःखों की सौगन्ध! सच्चे अनुयायी के लिए निर्धारित पद इतना महान है कि यदि उस पद की गरिमा लोगों के समक्ष सूई के छिद्र से भी छोटा करके दर्शा दी जाए तो उसे देखने वाला हर व्यक्ति उस पद को पाने की चरम उत्कंठा से भर उठेगा। इसी कारण, यह निर्णय लिया गया है कि इस पार्थिव संसार में ऐसे अनुयायी के अपने ही पद की महानता की पूरी झलक उसकी आँखों से छिपाकर रखी जाए।" "यदि पर्दा उठा दिया जाएगा, और जो लोग पूर्णतः ईश्वर की ओर अभिमुख हो चुके हैं तथा जिन्होंने उसके प्रेम में पग कर इस संसार को त्याग दिया है, उनके पद की उच्चता की सम्पूर्ण गरिमा प्रकट कर दी जाएगी तो यह पूरी सृष्टि अवाक रह जाएगी।"

"मैं सत्य कहता हूँ! किसी को भी इस धर्म के मूल का पता नहीं है। आज के युग में, यह हर किसी का कत्र्तव्य है कि वह ईश्वर की दृष्टि से समझे, और उसके ही कानों से सुने। जो कोई भी मेरी दृष्टि के सिवा किसी अन्य दृष्टि से मुझे देखेगा वह मुझे कभी नहीं जान सकेगा। अतीत के प्रकटावतारों में से किसी ने भी, एक निर्धारित अंश से ज्यादा, इस 'प्रकटीकरण' की प्रकृति को कभी भी पूरी तरह नहीं समझा है।" "मैं परमात्मा के सम्मुख इस प्रकटीकरण की महानता, इसकी अबोधगम्य महानता, का साक्षी देता हूँ। हमने अपनी अधिकांश पातियों में बारम्बार इस सत्य का साक्ष्य प्रमाणित किया है ताकि मानवजाति अपनी असावधानी की निद्रा से जाग सके।" "कितना महान

है यह धर्म, इसके सन्देश की गुरुता कितनी आश्चर्यकारी है!" "इस परम शक्तिमान प्रकटीकरण में अतीत के सभी धर्मयुगों ने अपनी चरम और उच्चतम परिणति पा ली है।" "इस परम उत्कृष्ट, परम उदात्त प्रकटीकरण में जो कुछ भी प्रकट किया गया है अतीत के इतिहास में उसकी कोई सानी नहीं है और न ही भविष्य के युगों में उस जैसा कोई अन्य प्रकटीकरण देखा जाएगा।" "सम्पूर्ण सृष्टि का अंतर्निहित उद्देश्य है इस परम उदात्त, इस परम पवित्र युग का प्रकटीकरण जिसे परमात्मा के ग्रंथों और पवित्र पुस्तकों में 'ईश्वर के युग' का नाम दिया गया है - वह युग जिसे देखने की अभिलाषा सभी अवतारों, ईश्वर के चुने हुए जनों और संतों ने प्रकट की है।" "बीते हुए युग के लोगों ने जो कुछ भी कहा या लिखा है उसका चरम सार और उसकी परिपूर्ण अभिव्यक्ति, इस सर्वाधिक शक्तिमान प्रकटीकरण के माध्यम से, सर्वसम्पदामय, सदा शाश्वत परमात्मा की इच्छा के स्वर्ग से भेज दी गई है।" "यह वह युग है जब ईश्वर की सर्वाधिक उत्कृष्ट कृपाएँ लोगों पर उड़ेल दी गई हैं, वह युग जब उसकी परम सामर्थ्य भरी कृपालुता सभी रचित वस्तुओं में फूँक दी गई है।" "यह वह युग है जिसमें ईश्वर की करुणा का महासिंधु लोगों के समक्ष प्रकट कर दिया गया है, वह युग जिसमें उसकी स्नेहिल करुणा के दिवानक्षत्र ने उनपर अपनी प्रभा बिखेरी है, वह युग जिसमें उसकी उदार कृपालुता के बादलों ने समस्त मानवजाति को आच्छादित कर रखा है।" "स्वयं मेरी धर्मपरायणता की सौगन्ध! यह धर्म महान, अपरिमेय रूप से महान है! यह युग शक्तिमान है, इतना शक्तिमान कि उसे समझा नहीं जा सकता।" "इस युग के आगमन की घोषणा हर अवतार ने की है और इस प्रकटीकरण की अभिलाषा में हर संदेशवाहक ने आहें भरी हैं - ऐसा प्रकटीकरण जिसे प्रकट किए जाते ही सभी रचित वस्तुएँ चिल्लाकर बोल उठीं: "यह पृथ्वी ईश्वर की है, उस परम उदात्त, परम महान परमेश्वर की!" "प्रतिज्ञापित युग आ चुका है और वह जो कि प्रतिज्ञापित अवतार है, स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों के समक्ष यह घोषणा करता है कि 'वस्तुतः, उस संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमात्मा के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है!' मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ : दृश्य और अदृश्य के ज्ञाता ईश्वर के ज्ञान में जो कुछ भी अनन्त काल से निगूढ़ था, वह सब कुछ प्रकट कर दिया गया है। धन्य हैं वे नयन जो सर्व सृष्टि के प्रभु, परमात्मा, की मुखमुद्रा को निहारते हैं, और धन्य है वह मुखड़ा जो उसकी ओर उन्मुख है।" "यह युग सचमुच महान है। सभी पवित्र ग्रंथों में 'ईश्वर के युग' के रूप में निर्दिष्ट होना इसकी महानता की पुष्टि करता है। इस विलक्षण युग के लिए ईश्वर के हर अवतार, हर दिव्य संदेशवाहक, की आत्मा तृषित रही है। इसी तरह धरती के सभी विविध प्रकार के निवासी इसे पाने के लिए लालायित रहे हैं।" "इस युग में स्वर्ग और धरती दोनों से अधिक प्रशस्त द्वार खोल दिया गया है। वह जो कि 'लोकों की अभिलाषा' है, उसकी करुणा की दृष्टि सभी लोगों पर पड़ी है। कोई भी कार्य, चाहे वह अत्यंत

छोटा-से-छोटा क्यों न हो, उसे जब ईश्वर के ज्ञान रूपी दर्पण में देखा जाएगा तो वह पर्वत से भी अधिक विशाल दृष्टिगोचर होगा। उसके पथ पर अर्पित हर बूँद उस दर्पण में समुद्र के तुल्य है। क्योंकि यह वह युग है जिसे उस एकमेव सत्य ईश्वर ने - महिमावान हो वह प्रभु - अपने सभी ग्रंथों में अपने अवतारों और सन्देशवाहकों के समक्ष घोषित किया है।" "यह वह प्रकटीकरण है जिसके अंतर्गत यदि कोई व्यक्ति उसके निमित्त एक बूँद भी खून बहाएगा तो अनेक महासागर उसका मुआवज़ा होंगे।" "इस युग का एक प्रवहमान क्षण मात्र भी अतीत की अनेक शताब्दियों से श्रेष्ठतर है .....इस युग जैसा कोई युग न सूरज ने देखा है, न चन्द्रमा ने।" "यह वह युग है जिसमें अदृश्य जगत पुकार उठा हैः 'महान है तेरा सौभाग्य, हे धरती! कि तुझे अपने परमेश्वर का चरणाधार बनाया गया है, और तू उसके पराक्रमी सिंहासन की आसनी चुनी गई है'।" "इस युग में अस्तित्व का संसार इस दिव्य प्रकटीकरण की प्रखरता से चमक उठा है। सभी रचित वस्तुएँ इसकी उद्धारक कृपा का महिमा गायन कर रही हैं और इसके गुणगान में निरत हैं। समस्त ब्रह्माण्ड आनन्द और उल्लास की अतिशयता में निमग्न है। अतीत के धर्मयुगों के पवित्र गंथ वह महान उत्सव मना रहे हैं जिसके द्वारा ईश्वर के इस महान युग का अभिनंदन किया जाना है। धन्य है वह जो इस युग को देखने के लिए जीवित है और जिसने इसकी उच्च महत्ता पहचान ली है।" "आज के युग में एक अलग 'सूर्य' का उदय हुआ है और एक भिन्न 'स्वर्ग' को उसके ग्रह-नक्षत्रों से शोभायमान कर दिया गया है। यह एक भिन्न दुनिया है और यह धर्म एक अलग, अनूठा धर्म।" "यह वह युग है जबकि मानव के कानों को वह सुनने का सौभाग्य मिला है जिसे 'उसने' जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया था (प्रभुदूत मूसा या मोसेज) ने सिनाय पर्वत के ऊपर सुना था, जिसे 'वह' जो कि 'ईश्वर का सखा' (पैगम्बर मुहम्मद) है ने उसकी ओर ध्वनित किए जाने पर सुना था, जिसे 'उसने' सुना था जो 'ईश्वर की चेतना' (ईसा मसीह) है - तब जबकि वह उस संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमात्मा तक आरोहण कर गया था।" "यह युग ईश्वर का युग है और यह धर्म ईश्वर का धर्म है। धन्य है वह जिसने इस संसार का परित्याग कर दिया है और उसका दामन थाम लिया है जो 'ईश्वर के प्रकटीकरण का दिवानक्षत्र' है।" "यह युगों का सम्राट है, वह युग जिसने 'परम प्रियतम' का आविर्भाव देखा है - उसका जिसे अनन्त काल से 'विश्व की अभिलाषा' कहकर पुकारा जाता आया है।" "यह सभी युगों का प्रधान है, सभी युगों का राजा। महान है उसका आशीर्वाद जिसने, इन दिनों के सुमधुर आस्वाद के माध्यम से, अनन्त जीवन को प्राप्त किया है और जो, अत्यंत महान दृढ़ता के साथ, उसके धर्म की सहायता के लिए उद्यत हुआ है जो सभी 'नामों का सम्राट' है। ऐसा मनुष्य मानवजाति रूपी शरीर का नेत्र है।" "अनुपम है यह युग, क्योंकि यह अतीत के युगों और सदियों की आँख के समान है, और समय के अंधकार के लिए प्रकाश की तरह।" "यह युग अन्य युगों से भिन्न है और यह धर्म अन्य धर्मों से भिन्न। तुम सब एकमेव सत्य ईश्वर से यह प्रार्थना करो कि वह लोगों के नेत्रों को अपने चिह्नों को देख पाने से वंचित न करे और न ही उनके कानों को

'गरिमा की लेखनी' की तीक्ष्ण आवाज सुनने से।'' ''ये दिन ईश्वर के दिवस हैं जिसके एक क्षण से भी युगों और सदियों की होड़ नहीं की जा सकती। इन दिनों में एक अणु भी सूर्य के समान है, और एक बूँद महासागर की तरह। ईश्वर के प्रेम और उसकी सेवा के पथ पर ली गई एक साँस भी 'गरिमा की लेखनी' द्वारा एक श्रेष्ठ कार्य के रूप में अंकित की गई है। यदि इस युग के गुणों का विवरण प्रस्तुत किया जाए तो हर कोई घोर आश्चर्य से अवाक रह जाएगा, सिवाय उनके जिन्हें प्रभु ने इससे छूट दी है।'' ''ईश्वर की धर्मपरायणता की सौगन्ध! ये वे दिवस हैं जिनमें ईश्वर ने अपने सन्देशवाहकों और अवतारों के हृदयों को, और उनसे भी आगे उन सबके हृदयों को जो उसके पवित्र और अनुल्लंघनीय अभय-स्थल के प्रहरी, स्वर्गिक शिविर के अंतरंग निवासी और गरिमा के चँदोवे तले निवास करने वाले हैं, कसौटी पर कसा है।" "यदि इस युग की महानता को पूर्णरूपेण प्रकट कर दिया जाए तो हर व्यक्ति इसकी महान गरिमा का क्षणमात्र के लिए भी अंशभाग ग्रहण करने के लिए अनेक जीवन त्यागने को उद्यत हो उठेगा, तो फिर इस संसार और इसके विनाशशील खजानों की बिसात ही क्या है!'' ''एकमेव सत्य परमेश्वर मेरा साक्षी है! यह वह युग है जिसमें उस हर व्यक्ति को जिसके पास देखने योग्य आँखें हैं, और उस प्रत्येक श्रवणेंद्रिय को जो सुनने के लिए उत्कंठित है, और उस प्रत्येक हृदय को जो बोध-प्राप्ति के लिए समझता है, और उस प्रत्येक जिह्वा को जो सचमुच बोलने वाली जिह्वा है, यह अनिवार्य दायित्व सौंपा गया है कि वे स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों के समक्ष इस पवित्र, इस उदात्त, इस परमोच्च 'नाम' की घोषणा करें।'' ''सुनो: हे लोगों! यह एक अतुलनीय युग है। अतः वह जिह्वा भी अनुपम होनी चाहिए जो सभी 'राष्ट्रों की कामना' की स्तुति का उत्सव मनाती हो, और वह कार्य भी अतुलनीय होना चाहिए जो 'उसकी' दृष्टि में स्वीकार्य होने का अभिलाषी है। इस युग की उत्कट इच्छा समस्त मानवजाति ने की है ताकि कदाचित यह युग उसे पूरा कर सके जो उसके पद की महानता के अनुरूप और उसकी नियति के योग्य हो।''

"सर्वशक्तिमान विधाता के आदेश से, अपनी गरिमा की लेखनी के स्पंदन द्वारा हमने हर मानवीय ढाँचे के अन्दर एक नया जीवन फूँक दिया है और हर शब्द में एक नई क्षमता भर दी है। इस विश्वव्यापी पुनर्रचना के प्रमाणों की घोषणा हर सृजित वस्तुएँ कर रही हैं।'' ''हे लोगो! मैं एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ! यह वह 'महासागर' है जिससे सभी 'समुद्रों' का जन्म हुआ है और जिसमें अंततः उन सबका मिलन होगा। 'उसी से' सभी 'सूर्यों' की उत्पत्ति हुई है और उसी के पास सभी लौट जाएँगे। उसी की क्षमता से 'दिव्य प्रकटीकरण के वृक्षों' ने अपने फल उत्पन्न किए हैं, जिनमें से प्रत्येक को एक अवतार के रूप में भेजा गया है, जो उन सभी लोकों में जिनकी संख्या केवल ईश्वर ही अपने सर्वव्यापी ज्ञान के दायरे में बता सकता है, परमात्मा के जीवों के

सम्मुख एक 'सन्देश' लेकर आए। यह कार्य उसने अपनी निर्देश देने वाली 'अंगुली' की 'लेखनी' के 'शब्द' के मात्र एक 'अक्षर' रूपी कारक से सम्पन्न किया है, और वह 'उंगुली' खुद ही ईश्वर के सत्य की शक्ति से सम्बलित है।" "एकमेव सत्य ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! यदि किसी रत्न का एक कण भी गुम हो जाए और चट्टानों के पहाड़ों के नीचे जाकर दब जाए तो भी 'सर्वशक्तिमान का हाथ' उसे इस युग में सभी मैलों से मुक्त और पवित्र रूप में लाकर सामने रख देगा।" "हमारे मुख से निकला हुआ हर अक्षर ऐसी सृजनात्मक शक्ति से सम्पन्न है कि वह एक नई सृष्टि को अस्तित्व में लाने में सक्षम होगा - एक ऐसी सृष्टि जिसकी विशालता का परीक्षण परमात्मा के सिवा और कोई नहीं कर सकेगा। उसे वस्तुतः सब कुछ का ज्ञान है।" "यदि हम चाहें तो हममें यह क्षमता है कि हवा में उड़ते हुए एक धूलकण को हम पलक झपकते अनन्त एवं अकल्पनीय आभाओं से युक्त सूर्यों की सृष्टि करने के योग्य बना दें, ओस की एक बूँद को विशाल एवं असंख्य महासागरों में बदल दें, हर अक्षर में ऐसी शक्ति भर दें कि वह अतीत और भविष्य के समस्त ज्ञान पर से पर्दा उठाने में समर्थ हो जाए।" "हम ऐसी शक्ति से सम्पन्न हैं जिसे यदि उजागर किया जाए तो वह घोर प्राणघातक विषों को भी अचूक प्रभावोत्पादक अमृत में बदल दे।"

"दिनों का अंत आ रहा है, फिर भी लोग हैं कि घोर लापरवाही में निमग्न और स्पष्ट रूप से भ्रम के फेरे में पड़े हुए दिख रहे हैं।" "महान है यह धर्म, महान है! वह घड़ी आ रही है जब एक बहुत बड़ी उथल-पुथल सामने आएगी। मैं उसकी शपथ खाता हूँ जो सत्य-स्वरूप है! यह हर किसी को, यहाँ तक कि उन्हें भी जो मेरी परिक्रमा करते हैं, बिछोह की पीड़ा से भर देगा।" "सुनोः हे असावधानों के समूह! मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ, प्रतिज्ञापित दिवस आ चुका है, वह दिन जब उत्पीड़न भरे संकट तुम्हारे सिर से ऊपर और पैरों के नीचे तक पहुँच जाएँगे और कहेंगे: 'लो, तूने जो किए उनका मजा चख'।" "संसार और इसके लोगों के विनाश की घड़ी आ चली है। वह जो कि 'पूर्व-अस्तित्ववान' है, आ चुका है ताकि वह लोगों को अविनाशी जीवन और अनन्त संरक्षण प्रदान कर सके और वह दे सके जो सच्चे जीवन के लिए लाभदायक है।" "वह दिन आ रहा है जब इसकी (मानव-सभ्यता की), लपटें इसके शहरों को निगल जाएँगी, जब गरिमा की वाणी यह घोषित करेगी कि 'साम्राज्य ईश्वर का है, वह जो सर्वशक्तिमान, सर्वप्रशंसित है'।" "हे नासमझ लोगो! एक घोर संकट तुम्हारे पीछे पड़ा है और अचानक तुझ पर टूट पड़ेगा। सचेत हो जा ताकि कदाचित वह चुपचाप गुजर जाए और तुझे कोई हानि न पहुँचाए।" "हे दुनिया के लोगों! वस्तुतः, यह जान ले कि एक अपूर्वचिन्तित विपत्ति तुम्हारे पीछे आ रही है और एक गम्भीर प्रतिशोध तुम्हारी प्रतीक्षा में है। यह मत सोच कि तूने जो कार्य किए हैं वे मेरी दृष्टि में धूमिल हो चुके हैं।" "हे असावधानों! यद्यपि मेरी कृपा के चमत्कार दृश्य एवं अदृश्य सभी रचित वस्तुओं को समेटे हुए हैं और हालाँकि मेरी करुणा और उदारता के प्राकट्य ब्रह्माण्ड के एक-एक कण में व्याप्त हैं, परन्तु फिर भी वह

छड़ी जिससे मैं दुष्टों को दंडित करता हूँ बड़ी कठोर है और उनके प्रति मेरे कोप की भीषणता अत्यंत भयावह।" "उन लोगों के लिए दुःखी न हो जिन्होंने स्वयं को सांसारिक विषयों में लिप्त कर रखा है, और जिन्होंने परम महान परमात्मा के स्मरण को भुला दिया है। सौगन्ध उसकी जो है अनन्त सत्य! वह दिन निकट आ रहा है जब सर्वशक्तिमान का रौद्र कोप उन्हें अपने शिकंजे में कस लेगा। वह, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान है, सर्वदमन है, सर्वाधिक सामर्थ्यवान है। वह धरती को उनकी भ्रष्टता के दूषण से मुक्त और पावन बनाएगा, और इसे उन्हें अपने ऐसे सेवकों को विरासत में दे देगा जो उसके निकट हैं।" "शीघ्र ही यह पुकार कि 'हाँ, हाँ, यहाँ हूँ मैं, यहाँ हूँ मैं' हर भू-भाग से ध्वनित हो उठेगी क्योंकि किसी के भी भागने के लिए कोई अन्य शरण-स्थल न कभी रहा है, न कभी रहेगा।" "और जब वह निर्धारित घड़ी आ जाएगी तो अचानक वह प्रकट होगा जिससे मनुष्यों के अंग-प्रत्यंग काँप उठेंगे। तभी, और सिर्फ तभी, ईश्वरीय ध्वजा को फहराया जाएगा, और स्वर्गिक बुलबुल अपना मधुर आलाप भरेगी।"

"हर प्रकटीकरण के प्रारम्भ में संकटों का प्रभुत्व रहा है किन्तु बाद में वे अपार समृद्धि में बदल गए।" "सुनोः हे ईश्वर के जनों! सावधान, धरती की शक्तियाँ तुझे भयभीत न कर दें, या राष्ट्रों की ताकत तुम्हें कमजोर न बना दें, या विवाद उत्पन्न करने वाले लोगों के शोरगुल तुम्हारे कदमों को रोक न दें, या सांसारिक गरिमा का राग अलापने वाले लोग तुम्हें खिन्न न कर दें। अपने सर्वशक्तिमान, सर्वगरिमामय, अप्रतिबाधित प्रभु के धर्म में तू एक पर्वत की तरह (अडिग) बन।" "सुनो: हे बहा के लोगों! सावधान कि कहीं धरती के बलवान लोग तुझे शक्तिहीन न कर दें, अथवा वे जो संसार पर शासन करते हैं तुझे भयभीत न बना दें। अपना भरोसा ईश्वर में रख और अपने सारे काम-काज उसी के संरक्षण में छोड़ दे। वह, वस्तुतः, सत्य की शक्ति द्वारा तुझे विजयी बनाएगा। वह, वस्तुतः, जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है, और सर्वशक्तिमान सामर्थ्य की बागडोर उसी के हाथ में है।" "मैं अपने जीवन की सौगन्ध खाकर कहता हूँ! मेरे प्रियजनों पर उन्हें लाभ पहुँचाने वाली बातों के सिवा और कुछ भी नहीं आ सकता। इसकी साक्षी है परम शक्तिशाली, परम गरिमामय, परम प्रियतम परमात्मा की लेखनी।" "संसार के घटनाक्रमों से स्वयं को व्यथित न होने दें। मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ! आनन्द का सागर तुझसे मिलने को आतुर है, क्योंकि हर अच्छी वस्तु तुम्हारे ही लिए रची गई है और, समय की जरूरत के अनुरूप, तुम्हारे समक्ष प्रकट की जाएगी।" "हे मेरे सेवकों! इन दिनों में और इस पार्थिव धरातल पर यदि ईश्वर द्वारा तुम्हारी इच्छाओं के विपरीत बातें निर्धारित और प्रकट की गई हैं तो खेद न कर, क्योंकि आशीर्वादित आनन्द और स्वर्गिक उल्लास के दिन निस्संदेह तुम्हारे लिए सुरक्षित हैं। वे लोक जो कि पवित्र और आध्यात्मिक गरिमा से सम्पन्न हैं, वे तुम्हारी आँखों के सामने प्रकट किए जाएँगे।

उस प्रभु द्वारा तुम्हें इस लोक और परलोक में उनके लाभों को हासिल करने, उनकी खुशियों के भागीदार बनने और उनकी संपोषक कृपा का अंशभाग ग्रहण करने के लिए नियत किया गया है। निस्संदेह, तुम इनमें से प्रत्येक और सभी वस्तुओं को प्राप्त करोगे।"

"यह बोलने का युग है। बहा के लोगों का कर्त्तव्य है कि वे अत्यधिक धैर्य और सहिष्णुता के साथ दुनिया के लोगों को 'परम महान क्षितिज' की ओर मार्गदर्शित करने का प्रयास करें। हर काया एक आत्मा के लिए पुकार रही है। स्वर्गिक आत्माओं को चाहिए कि वे ईश्वरीय वाणी की साँस फूँककर मृत शरीरों में एक नई चेतना का स्फूर्तिमय संचार भरें। हर शब्द के अन्दर एक नई चेतना छिपी है। धन्य है वह व्यक्ति जो उसे प्राप्त करता है, और जो उसके धर्म का सन्देश देने के लिए उठ खड़ा हुआ है जो 'अनन्तता का सम्राट' है।" "सुनो: हे सेवकों! इस धर्म की विजय पवित्र आत्माओं के प्रत्यक्षीकरण पर निर्भर रही है और आगे भी रहेगी और शुभ कर्मों को झलकाए जाने पर, तथा परम विवेक भरे शब्दों के प्राकट्य पर।" "अपनी शक्ति ईश्वर के धर्म के प्रसार में लगाओ। जो कोई भी ऐसे उच्च कार्य को करने के योग्य हो उसे इस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। जो कोई ऐसा करने में सक्षम न हो, उसका कर्त्तव्य है कि वह ऐसे व्यक्ति को प्रतिनियुक्त करे जो उसके बदले में प्रभु के उस 'प्रकटीकरण' की घोषणा करेगा जिसकी सामथ्र्य ने सर्वाधिक शक्तिशाली संरचनाओं की भी चूलें हिला दी हैं, हर पर्वत को धूल-धूसरित कर दिया है, और हर आत्मा को विस्मित करके रख दिया है।" "तुम्हारा मुख्य सरोकार गिरे हुए लोगों को आसन्न विनाश की दलदल से उबारना और उन्हें ईश्वर के पुरातन धर्म को स्वीकार करने में सहायता देना होना चाहिए। तुम्हारे पड़ोसी के साथ तुम्हारा व्यवहार ऐसा हो कि उससे एकमेव सत्य ईश्वर के चिह्न झलकते हों, क्योंकि लोगों के बीच तुम उसकी चेतना द्वारा पुनर्सृजित प्रथम जन हो, उस प्रभु की प्रशस्ति करने वाले और उसके सामने विनत होने वाले प्रथम लोग, उसकी गरिमा के सिंहासन के चारों ओर परिक्रमा करने वाले प्रथम जन।" "हे ईश्वर के प्रियजनों! अपनी शैय्या पर आराम से मत पड़े रहो, नहीं, बल्कि जैसे ही तूने अपने सृष्टा प्रभु को पहचान लिया, वैसे ही स्वयं को स्पंदित कर और उन विपदाओं के बारे में सुन जो उस पर आन पड़े हैं और उसकी सहायता के लिए शीघ्रता से आगे बढ़। अपनी जिह्वा खोल और अनवरत रूप से उसके धर्म की घोषणा कर। यह तेरे लिए भूत और भविष्य की सभी सम्पदाओं से बेहतर होगा, बशर्ते कि तू उन लोगों में से हो जो इस सत्य को समझते हैं।" "मैं उसकी सौगन्ध खाता हूँ जो 'सत्य' है! बहुत ही जल्द ईश्वर 'अस्तित्व के ग्रंथ' के आदि को अपने उन प्रियजनों के उल्लेख से विभूषित करेगा जिन्होंने उसके पथ पर यातनाएँ झेली हैं, और उसके नाम पर तथा उसके गुणगान के लिए देश-देशांतरों की यात्राएँ की हैं। जिन्होंने भी उनका सत्संग प्राप्त किया है वे उनसे मिलन का गौरव प्राप्त करेंगे और हर भूभाग उनकी स्मृति के प्रकाश से आलोकित हो उठेगा।" "ईश्वर और उसके धर्म की सेवा के लिए एक-दूसरे से होड़ कर।

यही वह चीज है जो लोक और परलोक में तेरे लिए लाभदायक है। तुम्हारा प्रभु, वह करुणामय परमेश्वर, सर्वसूचित है, सर्वज्ञ है। इन दिनों में तू जो कुछ देख रहा है उनसे दुःखी न हो। वह दिन आएगा जब राष्ट्रों की जिह्वाएँ बोल उठेंगी: 'यह पृथ्वी ईश्वर की है, उस सर्वशक्तिमान, एकमेव, अतुलनीय, सर्वज्ञाता की!'' "मंगलमय है वह स्थल और वह गृह और वह स्थान और वह नगर और वह हृदय और वह पर्वत और वह आश्रय और वह गुफा और वह उपत्यका और वह धरती और वह सागर और वह उपवन जहाँ उस परमेश्वर का उल्लेख हुआ है, और उसके यश की महिमा गाई गई है।" "जब ईश्वर के निमित्त जगह-जगह की यात्राएँ की जाती हैं तो दुनिया पर हमेशा उनसे प्रभाव पड़ा है और अभी भी पड़ेगा। जिन लोगों ने ईश्वर के सेवकों के मार्गदर्शन के लिए दूर-सुदूर की यात्राएँ की हैं उनकी उच्चता पुरातन ग्रंथों में निर्धारित और अंकित की गई है।" "ईश्वर की शपथ! दृढ़ लोगों के लिए निर्धारित बातें इतनी महान हैं कि यदि सूई के छिद्र के बराबर भी उन्हें प्रकट कर दी जाएँ तो स्वर्ग और धरती के सभी निवासी आश्चर्य से भर उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें सभी लोकों के प्रभु ने इससे वार दिया है।" "मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ! जो कोई मेरे धर्म की सहायता करता है उसके लिए नियत चीजें धरती के सभी खजानों से भी बढ़कर है।" "इस युग में जो कोई अपने होंठ खोलेगा और अपने प्रभु के नाम का उल्लेख करेगा उस पर मुझ सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ के नाम के स्वर्ग से दिव्य प्रेरणा के समूह अवतरित होंगे। उसपर उच्च स्वर्ग के सहचर भी अवतरित होंगे जिनमें से प्रत्येक अपने हाथ में शुभ्र प्रकाश का पात्र ऊँचा किए आएगा। वह जो कि सर्वगरिमामय, परम शक्तिशाली है, उसकी आज्ञा से ईश्वर के प्रकटीकरण के साम्राज्य में ऐसा ही पूर्व-नियत किया गया है।" "उसकी सच्चरित्रता की शपथ जो आज के युग में सभी सृजित वस्तुओं के हृदय-मध्य में यह पुकारता है कि 'ईश्वर, मेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है!' यदि कोई व्यक्ति अपने लेखों में प्रभुधर्म पर आक्रमण करने वालों से उसकी रक्षा करेगा तो वह व्यक्ति, चाहे उसका अंशभाग कितना भी तुच्छ क्यों न हो, आने वाले लोक में इतना आदर का पात्र होगा कि उच्च स्वर्ग के सहचर उसके गौरव से ईर्ष्या करेंगे। उसके पद की उच्चता का वर्णन कोई भी लेखनी नहीं कर सकती और न ही कोई वाणी उसकी आभा का विवरण प्रस्तुत कर सकती है।" "ईश्वर की कृपा हो कि तुम सब को उस कार्य को करने की शक्ति मिले जो परमात्मा की इच्छा है और तुम्हें ईश्वर के उन प्रियजनों को प्रदत्त उच्च पद को समझने में सहायता मिले जो उसकी सेवा करने और उसके नाम के विस्तार के लिए उठ खड़े होते हैं। उन पर ईश्वर की महिमा विराजे, स्वर्ग और धरती की सभी वस्तुओं और स्वर्गों के स्वर्ग परमोच्च स्वर्ग के अंतरंग निवासियों की महिमा विराजे।" "हे बहा के लोगों! तेरा कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है यह एक करुणा का संकेत है। उदारता की प्याली से अमरता की मदिरा का पान कर - बावजूद उन सबके जिन्होंने नामों के स्वामी और स्वर्गों के रचयिता परमात्मा की अवनिंदा की है।"

“मैं उस एकमेव सत्य ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ! यह उनका दिन है जिन्होंने स्वयं को परमेश्वर के सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लिया है, उनका दिन जिन्होंने उस प्रभु की एकता को पहचान लिया है, वह दिन जिसमें ईश्वर अपनी शक्ति के हाथों दिव्य जनों और अविनाशी सार-तत्वों को सृजित करता है, जिनमें से प्रत्येक इस संसार और सांसारिक वस्तुओं को परे हटा देगा और ईश्वर के धर्म में इतना दृढ़ होगा कि हर विवेकशील और समझदार हृदय आश्चर्यचकित हो उठेगा।” “पवित्र आवरण के पीछे निगूढ़ और ईश्वर की सेवा के लिए तत्पर उसके चुने हुए जनों का एक समूह खड़ा है जिन्हें लोगों के सामने प्रकट किया जाएगा, जो प्रभु के धर्म को सहायता प्रदान करेंगे और जो किसी से भयभीत नहीं होंगे भले ही सारी मानव जाति उनके विरुद्ध खड़ी और उनसे संघर्ष में निरत क्यों न हो जाए। ये वे लोग हैं जो धरती और स्वर्ग के निवासियों की दृष्टि के सामने उठ खड़े होंगे और उच्च स्वर से पुकारते हुए सर्वशक्तिमान परमात्मा के नाम का स्तुति-गान करेंगे और मानव-सन्तानों को उस सर्वमहिमामय, सर्वप्रशंसित परमात्मा के पथ पर आने का आह्वान करेंगे।” “वह दिन आ रहा है जब ईश्वर अपनी इच्छा की सक्रियता मात्र से मानवों की एक ऐसी प्रजाति को खड़ा कर चुका होगा जिसकी प्रकृति की परख सर्वशक्तिमान, स्वयंजीवी ईश्वर के सिवा और कोई नहीं कर सकेगा।” “बहुत ही शीघ्र, वह अपनी शक्ति के वक्षस्थल पर से प्रभुत्व और सामर्थ्य के ‘हाथ’ बाहर निकालेगा - वे ‘हाथ’ जो इस ‘युवा’ की जीत के लिए उठ खड़े होंगे और जो मानवजाति को बहिष्कृत एवं अनीश्वर लोगों की मलीनताओं से मुक्त और पावन बनाएँगे। ये ‘हाथ’ ईश्वर के धर्म को विजयी बनाने के लिए कटिबद्ध होंगे और मुझ स्वयंजीवी, सामर्थ्यवान के नाम से धरती के लोगों और निवासियों को विनत करेंगे। वे नगरों में प्रवेश करेंगे और उनके निवासियों के दिलों में (परमात्मा के) भय का संचार करेंगे। ईश्वर की शक्ति के ऐसे प्रमाण हैं, उसकी सामर्थ्य कितनी भयावह, कितनी प्रचण्ड है!”

अंत में एक बात और! उत्तरी अमेरिकी प्रायद्वीप की अपनी ऐतिहासिक यात्राओं के दौरान, अब्दुल-बहा द्वारा प्रकट की गई कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विचारोत्तेजक घोषणाओं में से कुछ इस प्रकार से हैं: *“ईश्वर करें कि यह अमेरिकी लोकतंत्र अंतर्राष्ट्रीय सहमति की आधारशिला रखने वाला पहला राष्ट्र बन जाए। यह मानवजाति की एकता की घोषणा करने वाला पहला राष्ट्र बन जाए। यह परम महान शांति का परचम बुलन्द करने वालों में प्रथम हो!”* और वे पुनः लिखते हैं: *“अमेरिकी लोग, वस्तुतः, महान शांति का चँदोवा निर्मित करने और मनुष्यों की एकता की घोषणा करने वाले लोगों में अग्रणी होने योग्य हैं। .....क्योंकि अमेरिका ने अन्य देशों के मुकाबले ज्यादा और अधिक आश्चर्यजनक शक्तियाँ और क्षमताएँ विकसित की हैं .....अमेरिकी राष्ट्र वे उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए सुसज्जित और समर्थ है जो इतिहास के पन्नों को अलंकृत करेंगी, वह विश्व के लिए स्पृहणीय बनने और पूरब तथा पश्चिम दोनों में अपने लोगों की विजय*

के लिए आशीर्वादित होने योग्य है .....अमेरिकी प्रायद्वीप महान विकास के संकेत और प्रमाण झलका रहा है। इसका भविष्य और अधिक उज्ज्वल है क्योंकि इसके प्रभाव और प्रकाश दूरगामी हैं। यह सभी देशों का आध्यात्मिक नेतृत्व करेगा।"

अमेरिका की नियति

बहाउल्लाह की शिशु-रूप विश्व-व्यवस्था की प्रथम हलचल द्वारा रहस्यमय रूप से सृजित रचनात्मक ऊर्जाएँ जैसे ही उस राष्ट्र के अन्दर प्रकट की गईं जिसकी नियति में उस विश्व-व्यवस्था का 'पालना' और चैम्पियन होना लिखा है, वैसे ही उन ऊर्जाओं ने उस राष्ट्र को उन शक्तियों और क्षमताओं से सम्पन्न बना दिया और उसे आध्यात्मिक रूप से इस तरह सुसज्जित कर दिया कि वह उपरोक्त ईश्वरीय वाणियों में पूर्वघोषित अपनी भूमिका अदा करने के लिए तैयार हो उठा। इस ईश्वर-प्रदत्त मिशन ने उनके लोगों में जिन क्षमताओं का संचार किया है वे एक ओर उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में बहाउल्लाह के अनुयायियों के सुसंगठित समुदाय द्वारा प्रभुधर्म का सन्देश देने के कार्य और उनके बहाई कार्यकलापों के प्रशासनिक पहलुओं दोनों में उनके सजग प्रयासों और उनकी राष्ट्रव्यापी उपलब्धियों के माध्यम से अपनी झलक दिखाने लगी हैं। दूसरी ओर, ये क्षमताएँ उन प्रयासों और उपलब्धियों के समानांतर, विश्व की राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों के प्रभाव के दायरे में, अचेतन रूप से उस राष्ट्र की भावी नियति की रूपरेखा भी गढ़ने लगी हैं, तथा उसकी सरकार और उसके लोगों के जीवन और उनकी गतिविधियों पर भी अपना प्रभाव डालने लगी हैं।

पिछले पन्नों में मैंने उन लोगों के प्रयासों और उनकी उपलब्धियों की ओर पर्याप्त संकेत दिया है जो आज बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से अवगत होकर उस महाद्वीप में अपने वर्तमान और भावी कार्यकलापों की दिशा में परिश्रम कर रहे हैं। किन्तु यदि अमेरिकी लोगों की नियति को उसकी सम्पूर्णता के साथ सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाना है तो उस समग्र राष्ट्र की दिशा और उसके लोगों के कार्यकलापों के रुझानों के बारे में भी अब एक बात कहा जाना आवश्यक है। वे दिशा-निर्देशक शक्तियाँ भले ही उस 'स्रोत' से कितना भी अनभिज्ञ हों जिनसे उन शक्तियों का जन्म हो रहा है, और यह प्रक्रिया चाहे जितनी भी मंद और श्रमसाध्य हो, किन्तु धीरे-धीरे यह बात ज्यादा से ज्यादा उजागर होती जा रही है कि वह सम्पूर्ण राष्ट्र, चाहे सरकारी एजेन्सियों के माध्यम से या अन्य रूप से, उन शक्तियों के प्रभाव से जिन्हें न वह समझ सकता है और न ही जिन पर उसका नियंत्रण है, उन संगठनों और नीतियों की ओर संकेन्द्रित हो रहा है जिनमें, जैसाकि अब्दुल-बहा द्वारा संकेत दिया गया है, उस राष्ट्र की सच्ची नियति का अंतर्निहित होना तय है। अमेरिकी धर्मानुयायियों का समुदाय, जो उस 'स्रोत' से वाकिफ़ है, और उनके देशवासियों का व्यापक जनसमूह, जो अभी तक अपनी नियति को निर्देशित करने वाले 'हाथ' से अनभिज्ञ हैं - ये दोनों ही अपने-अपने तरीके से अब्दुल-बहा के उपरोक्त उद्धृत शब्दों में ध्वनित आशाओं को साकार करने और उन वचनों को पूरा करने में अपना-अपना योगदान दे रहे हैं।

संसार-चक्र चलता जा रहा है। इसके घटनाक्रम अत्यंत त्रासक रूप से और चौंकाने वाली तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इसकी लालसाओं का चक्रवात बड़ा तेज और बेहद प्रचण्ड है। 'नया विश्व' तेजी से इसके भँवर में फँसता जा रहा है। धरती के संभावी तूफान-केन्द्र पहले ही इसके तटों पर अपने प्रभाव की छाया फैलाते चले आ रहे हैं। अकल्पनीय और अपूर्वचिंतित संकट इसे बाहर और भीतर से चुनौती दे रहे हैं। दुनिया की सरकारें और लोग संसार के बार-बार उभरते संकटों और उग्र विवादों के व्यूह में उलझते चले जा रहे हैं। विज्ञान की प्रगति की हर रफ़्तार के साथ अटलांटिक और प्रशान्त महासागर तेजी से केवल माध्यमों के रूप में सिकुड़ते जा रहे हैं। पश्चिम का महागणराज्य स्वयं को खास तौर पर और ज्यादा से ज्यादा उलझा हुआ पा रहा है। दूर-दराज़ के इन क्षेत्रों की यह गड़गड़ाहट खतरे की घंटी के रूप में वहाँ के लोगों में फैल रही उत्तेजना के रूप में प्रतिगुंजित हो रही है। इसके किनारों पर स्थित हैं यूरोपीय महाद्वीप और सुदूर पूर्व का महादेश और इसके दक्षिणी छोर पर एक अलग खतरा मँडरा रहा है जो शायद संकट और खलबली का एक और केन्द्र न बन जाए। दुनिया एक पड़ोस के रूप में सिमट रही है। अमेरिका को चाहे या अनचाहे इस नई स्थिति का सामना करना ही होगा। यदि मानवतावादी दृष्टिकोण की बात छोड़ भी दें, तो भी राष्ट्रीय सुरक्षा के नजरिये से उसे इस नव-रचित पड़ोस द्वारा लादी गई अनिवार्य जिम्मेवारियों को स्वीकार करना ही होगा। भले ही यह एक बिडंबना या पहेली नजर आए, लेकिन अपने चारों ओर घिरते हुए संकट से स्वयं को मुक्त करने के लिए उसकी एकमात्र आशा इस बात पर टिकी है कि वह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग या संगठन के उस जाल में शामिल हो जाए जो कि विधाता के अपरीक्षेय विधान के 'हाथ' द्वारा बुना जा रहा है। अमेरिका के एक उच्च-पदस्थ सरकारी अधिकारी को अब्दुल-बहा द्वारा अत्यंत उपयुक्तता और सशक्तता के साथ दी गई एक सलाह याद आ जाती है: तुम अपने देश की सर्वोत्तम सेवा तभी कर सकते हो जबकि तुम, विश्व के एक नागरिक की हैसियत से, दुनिया के लोगों और राष्ट्रों के बीच मौजूदा सम्बन्धों के प्रसंग में अंततः 'संघवाद' (फेडरलिज़्म) को कार्यरूप देने में मदद करो - वह सिद्धान्त जो स्वयं तुम्हारे अपने देश की सरकार की नीति में अंतर्निहित है। वे आदर्श जो अमेरिका के एक दुःखद रूप से अ-प्रशंसित राष्ट्रपति की संकल्पना में निहित थे जिसके महान प्रयासों को भले ही एक विचारहीन पीढ़ी द्वारा नकार दिया गया था, उन्हें अब्दुल-बहा ने अपनी लेखनी द्वारा परम महान शांति के प्रभात के रूप में सराहा था। भले ही वे आदर्श आज धूल-धूसरित हुए पड़े हैं किन्तु वे उस असावधान पीढ़ी की घोर भर्त्सना कर रहे हैं जिन्होंने निर्ममतापूर्वक उन्हें त्याग दिया था।

शायद कोई भी स्पष्ट दृष्टिकोण वाला व्यक्ति इस बात से इन्कार नहीं करेगा कि आज दुनिया घोर संकटों से घिरी है, खतरों के बादल घुमड़ रहे हैं तथा वास्तव में अमेरिकी राष्ट्र के सम्मुख एक चुनौती बनकर खड़े हैं। पूरी धरती एक सैन्य-शिविर में बदली हुई-सी दिख रही है। कम-से-कम पाँच करोड़ लोग हथियारबंद खड़े हैं या सुरक्षित सेना के रूप में प्रतीक्षारत हैं। इन हथियारों पर हर साल कम-से-कम तीन बिलियन पाउंड खर्च किए जा रहे हैं। धर्म का प्रकाश धूमिल हो चुका है और नैतिकता अधिकार-सत्ता विखंडित है। दुनिया के राष्ट्र ज्यादातर उन संघर्षरत विचारों के शिकार हैं जो उनकी राजनीतिक एकता के ही आधार को तोड़ने पर आमादा हैं - उस एकता को

जिसे उन्होंने इतने प्यार से हासिल किया है। इन देशों के असंतोष से उबलते हुए असंख्य जनसमूह हथियारों से लामबंद हैं, उनमें एक आतंकपूर्ण भगदड़ मची हुई है, और वे राजनीतिक संघर्ष, प्रजातीय उन्माद, राष्ट्रवाद के नाम पर उपजी घृणा और धार्मिक शत्रुता के उत्पीड़नों के भार तले कराह रहे हैं। बहाउल्लाह ने सच ही कहा हैः "*ओह! हर दिशा से निराशा की हवाएँ बह रही हैं, और मानवजाति को विभाजित एवं पीड़ित करने वाले संघर्ष दिनोंदिन बढ़ते चले जा रहे हैं। अब आसन्न उथल-पुथल और अराजकता के संकेतों को भाँपा जा सकता है...।*" आज से लगभग दो दशक पहले अब्दुल-बहा ने अपने लेखों में यह भविष्यवाणी की थी कि "*आज दुनिया जिन बुराइयों से पीड़ित है वे कई गुणा और बढ़ेंगी, जिस निराशा ने उसे घेर रखा है वह अभी और गहराएगी। बाल्कन प्रायद्वीप के लोग असंतुष्ट बने रहेंगे। उनकी अधीरता बढ़ेगी। पराजित शक्तियाँ उत्तेजना फैलाने का काम जारी रखेंगी। वे ऐसे हर उपाय को आजमाएँगे जिनसे युद्ध की लपटों को फिर से धधकाया जा सके। नई-नई और पूरी दुनिया को अपने आगोश में समेटने वाली क्रान्तियाँ अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए पूरी ताकत लगाएँगी। वामपंथी आंदोलन जोर पकड़ेगा और उसके प्रभाव का विस्तार होगा।*" जहाँ तक अमेरिकी राष्ट्र का सवाल है, खुद इसके राष्ट्रपति ने स्पष्ट और जोरदार आवाज में अपने लोगों को यह चेतावनी दी है कि एयरक्राफ्ट के विकास एवं अन्य कारक तत्वों को देखते हुए उनके देश पर आक्रमण की सम्भावना अत्यंत निकट आ चुकी है। इसके राज्य-सचिव ने हाल के एक अधिवेशन में सभी अमेरिकी गणराज्यों के एकत्रित प्रतिनिधियों को इस तरह की गम्भीर चेतावनी दी हैः "*ये सिर उठाती ताकतें पूरी दुनिया पर एक चुनौती बनकर छाई हुई हैं - उनकी धौंस भरी छाया हमारे इस गोलार्ध पर भी पड़ रही है।*" जहाँ तक इस देश के समाचार-जगत का सवाल है, निकट बढ़ते संकट के खतरे और चेतावनी की बिगुल वहाँ भी बज रही है: "*हमें अपने आपको बाहर और भीतर से अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाना चाहिए ....हमारा प्रतिरक्षा सीमान्त बहुत लम्बा है। यह अलास्का के पॉयंट बैरो से लेकर केप हॉर्न तक फैला हुआ है और अटलांटिक से लेकर प्रशान्त महासागर तक इसके दायरे में हैं। कोई नहीं कह सकता कि यूरोप और एशिया के आक्रामक कब हम पर चोट कर बैठेंगे। यह कहीं भी, कभी भी, हो सकता है। .....हमारे पास इसके सिवा और कोई विकल्प नहीं है कि हम स्वयं हथियारबंद हो जाएँ। .....हमें पश्चिमी गोलार्ध पर एक सजग प्रहरी की तरह चैकस रहना होगा।*"

विल्सन द्वारा प्रस्तुत किए गए आदर्श को औपचारिक रूप से और सम्पूर्णतया खारिज़ किए जाने से लेकर अब तक अमेरिकी राष्ट्र ने जो दूरियाँ तय की हैं, हाल के वर्षों में जिन अप्रत्याशित परिवर्तनों ने इसे अपनी गिरफ़्त में लिया है, अमेरिका की नीतियों और उसकी अर्थ-व्यवस्था पर अपना अपरिहार्य प्रभाव डालते हुए विश्व के घटनाक्रम जिस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, वे हर बहाई पर्यवेक्षक के लिए, जो बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा की भविष्यवाणियों के प्रकाश में इस अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के विकास को निहार रहे हैं, अत्यंत निर्देशात्मक और उत्प्रेरक हैं। इस कठिन

समय और अनिश्चय भरे वर्षों में अमेरिकी राष्ट्र किस करवट बैठेगा यह कहना असंभव होगा। हम तो केवल इसके कार्यकलापों की दिशा के आधार पर यह अनुमान लगा सकते हैं कि सम्भवतः वह अमेरिका के गणराज्यों और बाकी महाद्वीपों के देशों इन दोनों ही के साथ अपने सम्बन्धों को आगे बढ़ाने के मार्ग पर चलेगा।

एक ओर इन गणराज्यों के साथ एक गहन सम्बन्ध का विकास और दूसरी ओर, पुनरावर्ती अंतर्राष्ट्रीय संकटों के परिणामस्वरूप विभिन्न स्तरों पर सम्पूर्ण विश्व के कार्यकलापों में भागीदारी - यही वह सर्वाधिक सम्भावित विकास नजर आता है जो भविष्य के गर्भ में उस देश के लिए निर्धारित मार्ग है। इस चरम नियति की ओर कदम बढ़ाने में उस राष्ट्र के पथ पर विलम्ब की स्थितियों का आना अवश्यंभावी है और बाधाएँ भी जरूर पार करनी होंगी। परन्तु अब्दुल-बहा की अचूक लेखनी ने उसके लिए जो मार्ग निर्धारित किया है उसे अंततः कोई नहीं बदल सकता। अब जबकि इसकी संघीय एकता प्राप्त कर ली गई है और इसकी अपनी आंतरिक संस्थाएँ सुगठित हो चुकी हैं - जो कि एक राजनीतिक निकाय के रूप में इसकी परिपक्वता का एक चरण है - राष्ट्रों के परिवार के एक सदस्य के रूप में इसका अगला विकास, उन परिस्थितियों के बीच जिनके परिदृश्य की कल्पना अभी नहीं की जा सकती, जारी रहना चाहिए। यह विकास तब तक जारी रहना चाहिए जब तक वह राष्ट्र, मानवजाति के कार्यकलापों के सुगठन और उनके शांतिपूर्ण संस्थापन के कार्य में अपने द्वारा निबाही गई सक्रिय और निर्णायक भूमिका निभा चुकने के बाद, एक संघीकृत विश्व के एक घटक तत्व और उसके एक प्रमुख सदस्य के रूप में अपनी अपार शक्ति और क्रियाशीलता नहीं हासिल कर लेता।

मानवजाति को उत्पीड़ित करने वाली इन बहुआयामी उलझनों और समस्याओं में उसकी इस सतत्, क्रमिक और अपरिहार्य संलग्नता के परिणामस्वरूप, उस देश का निकट भविष्य जरूर ही अंधकारमय और यातनापूर्ण होगा। पिछले पन्नों में बहाउल्लाह के जो उद्धरण प्रस्तुत किए गए हैं, उनमें उन्होंने दुनिया को हिलाकर रख देने वाली जिन अग्नि-परीक्षाओं की ऐसी सचित्र भविष्याणी की है, वे उस राष्ट्र को अभूतपूर्व हद तक अपने भँवर में डालने का प्रयास करेंगी। किन्तु सम्भवतः पिछले विश्वयुद्ध की अपनी प्रतिक्रियाओं से बिल्कुल भिन्न, वह राष्ट्र ऐसी अग्नि-परीक्षा के कारण उत्पन्न विशाल समस्याओं का अपने पूरे प्रभाव के साथ समाधान करने हेतु अपने अवसर को थामने के लिए, तथा पूरब और पश्चिम के अन्य सहयोगी राष्ट्रों के साथ मिलकर, उस शाप से मुक्त होने हेतु दृढ़प्रतिज्ञ होकर उठ खड़ा होगा जिस शाप ने अनादि काल से मानवजाति को उत्पीड़ित किया है और उसका रुतबा नीचा किया है।

तभी और सिर्फ तभी, हर किसी के एक समवेत युद्ध के साँचे में ढलकर और पावन बनकर, इसकी कठिनाइयों पर नकेल कसकर और इसके सबकों से अनुशासित होकर, अमेरिकी राष्ट्र उस स्थिति में होगा जबकि वह दुनिया के राष्ट्रों की परिषदों में अपनी आवाज बुलन्द कर सकेगा, स्वयं एक विश्वव्यापी और स्थायी शांति की आधारशिला रख सकेगा, मानवजाति की संघीयता, उसकी

एकता और प्रौढ़ता की घोषणा कर सकेगा और धरती पर प्रतिज्ञापित धर्मराज्य की स्थापना में सहायता दे सकेगा। तभी और सिर्फ तभी, जिस दौरान उसके बीच स्थित अमेरिकी धर्मानुयायियों का समुदाय अपने दिव्य-निर्धारित मिशन को पूर्णाहुति देने में जुटा हुआ है, अमेरिकी राष्ट्र उस अवर्णनीय रूप से गौरवमयी नियति को पूर्ण करने में सक्षम हो सकेगा जिसे सर्वशक्तिमान ईश्वर ने उसके लिए नियत किया है और जो अब्दुल-बहा के लेखों में सदा-सदा के लिए अंकित हैं। तभी और सिर्फ तभी, अमेरिकी राष्ट्र उस कार्य को पूरा कर सकेगा जो "*इतिहास के पन्नों को अलंकृत करेगा*" और जिससे वह "*विश्व के लिए स्पृहणीय बनने और पूरब तथा पश्चिम दोनों में आशीर्वादित होने योग्य हो सकेगा।*"

- शोगी एफेंदी

-25 दिसम्बर 1938